हिंदी

लेखिका :
आरती शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)

7

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

हिंदी

लेखिका :
आरती शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

मन की बात

हिंदी पुस्तक-शृंखला बाल मनोविज्ञान एवं क्रियाकलापों पर आधारित हिंदी भाषा को सीखने के क्रम में एक मौलिक एवं अनूठा प्रयास है। इस शृंखला का विकास विभिन्न आयु-वर्ग की विशिष्ट रुचियों और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं समझना– इन मौलिक तथा शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति इस शृंखला में बहुत रोचक और प्रभावशाली ढंग से की गई है।

इस पुस्तक-माला का निर्माण आज की बदलती नई सोच के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक-माला, एन०सी०ई०आर०टी० **(NCERT)**, सी०आई०एस०सी०ई० **(CISCE)** एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित एक शृंखला है, जो पूर्ण रूप से बच्चों की रुचि और मानसिक स्तर के अनुकूल है। इसका उद्देश्य बच्चों की कल्पनाशीलता, उनकी मौलिकता, सृजनशीलता और जिज्ञासा को बढ़ाना है।

एक ओर जहाँ मनमोहक रंग-बिरंगे चित्रों द्वारा पाठों की प्रस्तुति के साथ शब्द ज्ञान भंडार में सरलता से कठिनता की ओर क्रमिक वृद्धि की गई है, वहीं दूसरी ओर पठन कुशलताओं के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए सुनियोजित उद्देश्यपरक मौखिक और लिखित अभ्यास दिए गए हैं।

इस पुस्तक-माला में पाठयक्रम क्रमबद्ध तरीके से लिया गया है। रुचि वैविध्य के लिए पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं; जैसे- कविता, कहानी, पत्र, एकांकी, जीवनी, लेख, सूक्तियाँ, संवाद, चित्रकथा, निबंध-लेखन तथा संस्मरण आदि का समावेश यथास्थान किया गया है। पुस्तक माला में लिंग, वचन, कारक, समानार्थी शब्द, विपरीतार्थी शब्द, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्द-युग्म आदि के साथ ही संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, आदि व्याकरणिक विषयों का ज्ञान कराया जा रहा है। परिणामस्वरूप जो कि बच्चों के शब्द-भंडार में वृद्धि करने के साथ ही भाषा की रोचकता और गहनता को समझाने में प्रभावी सिद्ध होंगे।

पुस्तक का प्रत्येक भाग विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि जाग्रत करे, इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए अभ्यासों एवं क्रियात्मक कार्यों का यथोचित समावेश किया गया है।

हमें विश्वास है कि बच्चों के परिवेश से जुड़ी एवं बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये पुस्तकें बच्चों की हिंदी भाषा दक्षता में वृद्धि के साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में उपयोगी सिद्ध होंगी। मार्गदर्शन हेतु गणमान्य एवं प्रबुद्ध अभिभावकों व शिक्षकों की टिप्पणियों एवं सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे ताकि भावी संस्करणों में यथास्थान उचित संशोधन करके पुस्तक को और अधिक रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

—लेखक व प्रकाशक

पाठ्यक्रम

क्रम (S.No.)	पाठ का नाम/विधा (Lesson/Mode)	मौखिक ज्ञान (Oral Knowledge)	लिखित ज्ञान (Written Knowledge)	
1.	पथ की पहचान	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
2.	दुर्मुख	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
3	समर्पण	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए • प्रश्नोत्तर	
4.	हींगवाला	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
5.	आखिरी चट्टान	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
6.	धर्म की झाँकी	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
7.	यह धरती कितना देती है	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
8.	इंटरनेट पर यू-ट्यूब की बढ़ती लोकप्रियता	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए • प्रश्नोत्तर	
9.	अगर नाक न होती	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
10.	स्वास्थ्य ही जीवन है	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए • प्रश्नोत्तर	
11.	चलना हमारा काम	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए • प्रश्नोत्तर	
12.	प्रेम में परमेश्वर	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
13.	ऐसे थे बालकृष्ण भट्ट	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
14.	माँ : जीवन संचालिका	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
15.	चंडीगढ से शिमला तक	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • वाक्य पूरे कीजिए • प्रश्नोत्तर • इन पर अपने मन में उठने वाले विचार लिखिए	
16.	दिल्ली मेट्रो	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • वाक्य पूरे कीजिए • प्रश्नोत्तर	
17.	छोटा जादूगर	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए • प्रश्नोत्तर	
18.	नेहरुजी की बेटी इंदु के नाम पत्र	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
19.	बरसात की आती हवा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
20.	मैं हूँ चार्ली चैपलिन	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • पंक्तियाँ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए • टिप्पणी लिखिए • प्रश्नोत्तर	
	आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1			
	आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2			

	भाषा ज्ञान (Language Knowledge)	क्रियात्मक गतिविधियाँ (Creative Activites)	पृष्ठ सं॰ (P.No.)
	• वाक्य बनाइए • उदाहरण छाँटकर लिखिए • विलोम शब्द • कारक के उचित भेद • काव्यांश	• विचारगत प्रश्न कठिनाइयों का हल निकालने वाली कोई दो कहानियाँ लिखिए। • हरिवंशराय 'बच्चन' की कुछ अन्य कविताएँ संकलित कीजिए। • विचारगत प्रश्न	7
	• रिक्त स्थान • प्रत्यय • समास-विग्रह • शब्दों की व्याख्या कीजिए	• विचारगत प्रश्न	12
	• वर्ण-विच्छेद • विलोम शब्द • पर्यायवाची शब्द • वाक्यांश	• विचारगत प्रश्न • इस कविता का कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए। • 'हमें देश के लिए जीना होगा'- इस पंक्ति के आधार पर तुक मिलाते हुए चार पंक्तियों की रचना कीजिए। • विचारगत प्रश्न	17
	• समानार्थक शब्द • सही विकल्प • मुहावरें • विकारी शब्द और अविकारी शब्द • शब्दों के आगे उनके भेद (विकारी/अविकारी) लिखिए	• विचारगत प्रश्न • "मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना" विषय पर कक्षा में आशु-संभाषण आयोजित कीजिए।	21
	• समास का विग्रह • निर्देशानुसार उत्तर दीजिए • प्रत्यय • वाक्यों का भूतकाल • कारक-चिह्नों के भेद	• अपनी किसी यात्रा का वर्णन अपने अनुभव के आधार पर कीजिए। • विचारगत प्रश्न	28
	• रिक्त स्थान • वाक्यों में क्रियाविशेषण • रिक्त स्थान • शब्द-समूहों से सार्थक • वाक्यों में विशेषण • शब्द बनाइए	• 'रघुपति राघव राजा राम' भजन कंठस्थ करके सामूहिक रूप से कक्षा में गाइए। • विचारगत प्रश्न	34
	• प्रश्नोत्तर • कर्ता + कर्म + क्रिया के क्रम • पद्य-पंक्तियाँ • पर्यायवाची • विलोम शब्द • वाक्य बनाइए • 'ने' का प्रयोग • 'ने' का गलत प्रयोग	• विचारगत प्रश्न • धरती की उर्वरता कैसे बढ़ाई जा सकती है? इंटरनेट से पता लगाकर एक अनुच्छेद लिखिए। • विचारगत प्रश्न	39
	• भाववाचक संज्ञा • रिक्त स्थान • अवस्थाएँ • समुच्चयबोधक शब्दों से रिक्त स्थान • शब्द जोड़कर शब्द पूरे कीजिए	• विचारगत प्रश्न	45
	• शब्दों के उचित शीर्षक • विलोम शब्द • पर्यायवाची शब्द • शब्दों के दो भिन्न अर्थ • रिक्त स्थानों • लोकोक्तियों के अर्थ	• शब्दों के उचित शीर्षक • विलोम शब्द • पर्यायवाची शब्द • शब्दों के दो भिन्न अर्थ • रिक्त स्थानों • लोकोक्तियों के अर्थ	50
	• संधि-विच्छेद • प्रत्यय • उपसर्ग • लोकोक्तियों • 'र' के विभिन्न रूप • पढ़िए तथा समझिए • रेखांकित पदों का परिचय दीजिए	• विचारगत प्रश्न	57
	• विलोम शब्द • पर्यायवाची शब्द • वचन बदलिए • लिंग बदलिए • सर्वनाम शब्द • रिक्त स्थानों • पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए	• विचारगत प्रश्न • शिवमंगल सिंह 'सुमन' अथवा अन्य कवियों की कविताएँ याद करके कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।	64
	• विधेय को रेखांकित कीजिए • वाक्य भेद • वाक्यों के अर्थ के आधार पर वाक्य भेद छाँटिए और दिए गए स्थान पर भेदों के नाम लिखिए	• विचारगत प्रश्न	69
	• उपसर्गों के निर्मित शब्द लिखिए • अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए • वाक्य बनाइए • समास विग्रह • संधि-विच्छेद	• विचारगत प्रश्न	77
	• उपसर्ग • प्रत्यय अलग कीजिए • विराम चिह्न • स्वर संधि • शब्दों की संधि • संधि-विच्छेद • समास विग्रह • मुहावरें	• रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा रचित गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'- का अपने साथियों के साथ जोशपूर्ण तरीके से सस्वर गायन कीजिए। • विचारगत प्रश्न	82
	• विलोम शब्द • स्थानवाचक क्रिया-विशेषण • क्रिया-विशेषण • क्रिया-विशेषण के रूप	• विचारगत प्रश्न	88
	• विलोम शब्द • संधि-विच्छेद • बहुवचन रूप • मुहावरें के अर्थ	• निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार वाक्य परिवर्तित कीजिए • विचारगत प्रश्नं	96
	• पर्यायवाची शब्द • अनेक शब्द • शब्द युग्म • समास • वाक्यों के शुद्ध रूप	• विचारगत प्रश्न • हिंदी भाषा के प्रचार, प्रसार एवं प्रयोग पर आकर्षक स्लोगन बनाइए।	102
	• पर्यायवाची • विलोम शब्द • प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए • वाक्यों के वचन • शब्दों का वाक्य में प्रयोग • शब्दों के हिंदी पर्याय	• संधि • शब्दों की संधि • शब्दों के संधि-विच्छेद का सही विकल्प	109
	• शब्दों के दो भिन्न-भिन्न अर्थ • श्रुतिसम या समरूपी शब्द •पर्यायवाची शब्द	• विचारगत प्रश्न • 'बरसात की झड़ी लगना' तथा 'फुहार पड़ना' में अंतर पता कीजिए और उसे कक्षा में बताइए। बरसात से संबंधित कोई गीत कक्षा में सुनाइए।	114
	• अनेक शब्दों के लिए एक शब्द • अल्प विराम का प्रयोग करो	• विचारगत प्रश्न	118
			125
			127

विषय-सूची

1.	पथ की पहचान	7
2.	दुर्मुख	12
3.	समर्थन	17
4.	हींगवाला	21
5.	आखरी चट्टान	28
6.	धर्म की झाँकी	34
7.	यह धरती कितना देती है	39
8.	इंटरनेट पर यू-ट्यूब की बढ़ती लोकप्रियता	45
9.	अगर नाक न होती	50
10.	स्वास्थ्य ही जीवन है	57
11.	चलना हमारा काम	64
12.	प्रेम में परमेश्वर	69
13.	ऐसे थे बालकृष्ण भट्ट	77
14.	माँ : जीवन संचालिका	82
15.	चंडीगढ से शिमला तक	88
16.	दिल्ली मेट्रो	96
17.	छोटा जादूगर	102
18.	नेहरूजी की बेटी इंदु के नाम पत्र	109
19.	बरसात की आती हवा	114
20.	मैं हूँ चार्ली चैपलिन	118
•	आदर्श प्रश्न पत्र-1 (Model Test Paper)-1 —	125
•	आदर्श प्रश्न पत्र-2 (Model Test Paper)-2 —	127

पथ की पहचान

1

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं, छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता, है न औरो की ज़बानी।
अनगिनत राही गए इस, राह से, उनका पता क्या?
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी।
यह निशानी मूक होकर, भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ पंथी, पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना
जब असंभव छोड़ यह पथ, दूसरे पर पग बढ़ाना।
तू इसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही, यह पड़ा मन में बिठाना।
हर सफल पंथी यही, विश्वास ले इस पर खड़ा है,
तू इसी पर आज अपने, चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

है अनिश्चित किस जगह पर, सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर, बाग, वन सुंदर मिलेंगे।
किस जगह यात्रा खत्म हो, जाएगी यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब कंटकों के शर मिलेंगे।
कौन सहसा छूट जाएँगे, आ मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

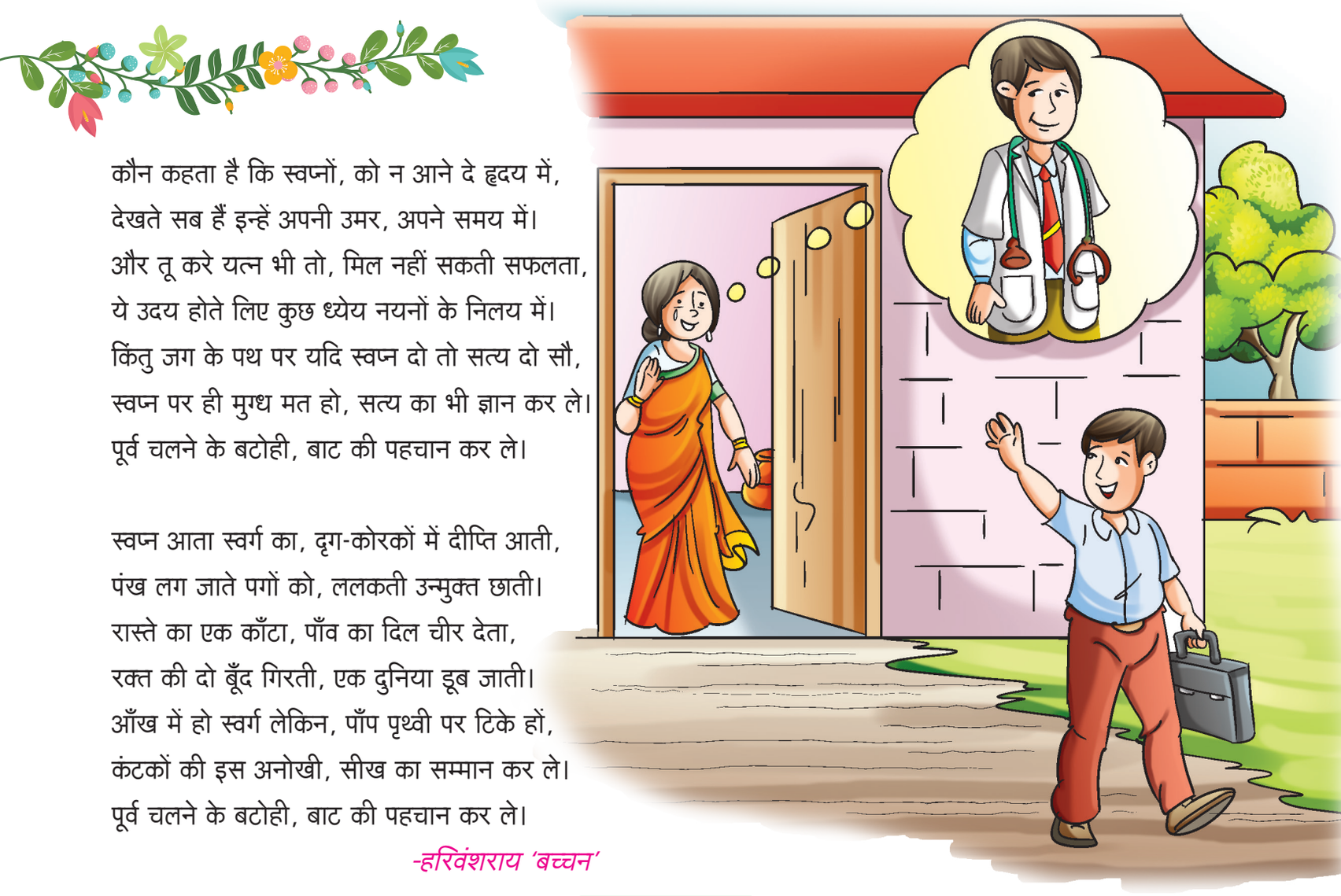

कौन कहता है कि स्वप्नों, को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर, अपने समय में।
और तू करे यत्न भी तो, मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनों के निलय में।
किंतु जग के पथ पर यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को, ललकती उन्मुक्त छाती।
रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरती, एक दुनिया डूब जाती।
आँख में हो स्वर्ग लेकिन, पाँप पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी, सीख का सम्मान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

-हरिवंशराय 'बच्चन'

शब्द-अर्थ

पूर्व	—	पहले	**बटोही**	—	राही, पंथी
बाट	—	रास्ता, पंथ	**पहचान करना**	—	जानना
ज्ञात	—	मालूम	**ज़बानी**	—	मुँह से
अनगिनत	—	बहुत सारे	**मूक**	—	मौन
पंथी	—	पथिक, रही	**पंथ**	—	रास्ता
व्यर्थ	—	बेकार	**पग**	—	पाँव
चित्त	—	मन	**अवधान करना**	—	ध्यान करना
सरित	—	नदी	**गिरि**	—	पर्वत
गह्वर	—	घाटी	**सुमन**	—	फूल
कंटक	—	काँटा	**शर**	—	तीर
सहसा	—	ज़रूरी	**आन करना**	—	प्रतिज्ञा करना
ध्येय	—	अचानक	**नयनों**	—	आँखों
निलय	—	आवास, घर	**मुग्ध**	—	मोहित

दृग-कोरक — आँखों की कोर
दीप्ति — ज्योति, रोशनी
पगों को पंख लगना — गति में तेज़ी लाना
ललकना — इच्छा करना

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवि मुसाफ़िरों से क्या कह रहे हैं?

(ख) यात्रा सरल कैसे बनेगी?

(ग) कविता की उन पंक्तियों को सुनाइए जिनमें कवि स्वप्न और सत्य का अंतर समझा रहे हैं?

(घ) इस कविता के कवि का नाम बताइए।

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) कवि मुसाफ़िरों को चलने से पहले किसकी पहचान करने को कह रहे हैं?

☐ मनुष्य की ☐ रास्ते की ☐ मंज़िल की ☐ सहयात्री की

(ख) इनमें से क्या मूक होकर भी बहुत कुछ बोलते हैं?

☐ रास्ते ☐ पेड़ ☐ पदचिह्न ☐ फूल

(ग) कवि के अनुसार सब अपनी उमर में क्या देखते हैं?

☐ पहाड़ियाँ ☐ स्वप्न ☐ कठिनाइयाँ ☐ घाटियाँ

(घ) पाँव का दिल कौन चीर देता है?

☐ काँटा ☐ कली ☐ फूल ☐ धूल

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) आँख में स्वर्ग होने पर भी पाँव पृथ्वी पर होना क्यों ज़रूरी है?

(ख) कविता के आधार पर बताइए कि मंजिल तक पहुँचने के लिए सही रास्तों की पहचान क्यों ज़रूरी है?

(ग) अनिश्चितता के होने पर भी जीवन में आगे बढ़ना क्यों ज़रूरी है?

(घ) हृदस में स्वप्नों को आने देना क्यों ज़रूरी है?

(ङ) निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

कौन कहता है कि स्वपनों को न आने दे हृदय में
देखते हैं सब इन्हें अपनी उमर, अपने समय में।
और तू करे यत्न भी तो, मिल नहीं सकती सफलता,

ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयानों के निलय में।

(च) इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के अलग-अलग अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

(क) पता < – ____________________ – ____________________

(ख) जग < – ____________________ – ____________________

(ग) मत < – ____________________ – ____________________

(घ) चीर < – ____________________ – ____________________

(ङ) पूर्व < – ____________________ – ____________________

2. इस कविता में कई संज्ञाओं (विशेष्यों) के साथ विशेषण का प्रयोग किया गया है। जैसे– अनगिनत राही।

कविता में से ऐसे अन्य छह उदाहरण छाँटकर लिखिए।

____________ ____________ ____________

____________ ____________ ____________

3. दिए गए शब्दों के उचित विलोम शब्द पर ✓ लगाइए।

(क) असंभव – साहस संभव शक्ति

(ख) अच्छी – सही गलत बुरी

(ग) खत्म – शुरू प्रारंभ आरंभ

(घ) बहुत – अधिक कम अधिकतम

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित कारक के उचित भेद पर ✓ लगाइए।

(क) पुस्तकों <u>में</u> है नहीं छापी गई इसकी कहानी

(i) कर्म कारक (ii) अधिकरण कारक (iii) करण कारक

(ख) अनगिनत राही गए इस राह <u>से</u> उनका पता क्या

(i) कर्ता कारक (ii) करण कारक (iii) अपादान कारक

(ग) पूर्व चलने के बटोही, बाट <u>की</u> पहचान कर ले।

(i) कर्म कारक (ii) कर्ता कारक (iii) संबंध कारक

5. दिए गए काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हम भिखमंगों की दुनिया में, स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले।
हम एक निशानी-सी उर पर, ले असफलता का भार चले।।
हम मान रहित, अपमान रहित, जी भरकर खुलकर खेल चुके।
हम हँसते-हँसते आज यहाँ, प्राणों की बाज़ी हार चले।।

(क) स्वच्छंद प्यार से कवि का क्या आशय है?

_____

(ख) कवि के हृदय पर क्या भार है?

_____

(ग) कवि किस भावना से ऊपर उठ चुका है?

_____

(घ) प्राणों की बाज़ी हारने से कवि का क्या तात्पर्य है?

_____

(ङ) काव्यांश से 'हृदय' का समानार्थी तथा 'सम्मान' का विलोम चुनकर लिखिए।

_____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) हम दूसरों के अनुभवों से भी बहुत कुछ सीखते हैं, कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'प्रियतम' पढ़िए और कर्म का महत्त्व समझिए।

(ग) कठिनाइयों का हल निकालने वाली कोई दो कहानियाँ लिखिए।

(घ) हरिवंशराय 'बच्चन' की कुछ अन्य कविताएँ संकलित कीजिए।

(ङ) कक्षा में 'कवि सम्मेलन' का आयोजन कीजिए।

(च) ज़िंदगी में सुख-दुख साथ-साथ चलते हैं, कविता के आधार पर व्याख्या कीजिए।

(छ) कवि हरिवंशराय 'बच्चन' जी के जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त करके प्रस्तुतीकरण तैयार कीजिए।

(ज) हरिवंशराय 'बच्चन' जी की कविता 'जो बीत गई सो बात गई' कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।

2 दुर्मुख

किसी को विश्वास न होगा कि बोलचाल के 'लड़ाकू' विशेषण से लेकर शुद्ध संस्कृत की 'दुर्मुख', 'दुर्वासा' जैसी संज्ञाओं वाला एक कोमल प्राण खरगोश था। परंतु सत्य कभी-कभी कल्पना की सीमा नाप लेता है।

माली ने उस खरगोश का नाम 'लड़ाकू' रख दिया। मेरी शिष्याओं ने उसके कटखने स्वभाव के कारण उसे 'दुर्मुख' पुकारना आरंभ कर दिया। मैंने उसके क्रोधी स्वभाव के कारण उसे 'दुर्वासा' की संज्ञा से विभूषित किया।

पड़ोस के एक सज्जन दंपती ने खरगोश का एक जोड़ा पाल रखा था, जिन्होंने घर के आँगन में मिट्टी के भीतर सुरंग जैसा अपना निवास बना लिया था। संध्या होते ही गृहिणी उस सुरें के द्वार पर डलिया ढककर उस पर सिल रख देती थी। एक रात वह सुरंग ढकना भूल गई और निरंतर ताक-झाँक में रहने वाली बिल्ली ने बिल में घुसकर दोनों खरगोशों और उनके तीन बच्चों को क्षत-विक्षत कर डाला। केवल एक शशक-शिशु माँ के पैरों के बिच छिपा रहने के कारण जीवित रह गया।

उस छोटे जीव को हमारा माली ले आया। उसे रुई की बत्ती से दूध पिला-पिलाकर पाला गया। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होने लगा, त्यों-त्यों उसका क्रोधी स्वभाव हमारे विस्मय और चिंता का कारण बनने लगा। खरगोश बहुत निरीह जीव होता है। दाँत होने पर भी वह किसी को नहीं काटता। पंजे होने पर भी वह किसी को नोचता-खरोंचता नहीं है। भय उसका स्थायी भाव है, पर यह शशक सर्वथा विपरीत था। खाने में देरी होते ही वह कटोरी उलट देता, देने वाले के हाथ या पैर में दाँत चुभा देता और कमरे का सामान फेंक देता।

देखने में वह अन्य खरगोशों के समान सुंदर था। बड़े-बड़े सघन, कोमल और चमकीले फ़र के रोमों से उसका शरीर ढका था। पूँछ छोटी और स्वस्थ थी। वह हर समय अपना मुँह साफ़ करता रहता था। उसका एक कान काला था, दूसरा सफ़ेद। काले कान की ओर की आँख काली थी और सफ़ेद कान की ओर की लाल। ऐसा लगता था मानो दो भिन्न-भिन्न खरगोशों को जोड़कर

एक कर दिया गया हो। आँखों में एक ओर नीलम और दूसरी ओर रूबी का चमकीला मनका जड़ दिया गया हो। बिल्ली को देखते ही क्रोध से उसे घूरता। मेरे कमरे में दुर्मुख के रहने से शेष पशु-पक्षियों को निर्वासन ही मिल गया। इसी से जब वह कुछ बड़ा, हृष्ट-पुष्ट और चिकना हो गया, तब मैंने उसे अपने पशु-पक्षियों के रहने के लिए बने जाली के घर में पहुँचाना उचित समझां वहाँ आधा फ़र्श सीमेंट का है, आधा कच्ची मिट्टी का। दुर्मुख ने पहले तो मिट्टी खोदकर अपने लिए सुरंग जैसा घर बनाया और इस कार्य से अवकाश मिलते ही सबसे युद्ध करना आरंभ कर दिया। वह अचानक आक्रमण करके उनके शरीर पर दाँत गड़ा देता।

अंत में यह सोचकर कि दुर्मुख के क्रोधी स्वभाव का कारण शायद उसका अकेलापन है, मैं नखासखाने के बड़े मियाँ से एक मादा खरगोश खरीद लाई। वह हिम-खंड जैसी चमकीली, सफ़ेद और लाल अनार के दाने जैसी सुंदर आँखों वाली थी, इसी से हम उसे 'हिमानी' कहने लगे, पर मेरा यह सोचना कि दुर्मुख उसके साथ शिष्ट खरगोश के समान व्यवहार करेगा, गलत सिद्ध हुआ। उसके आते ही दुर्मुख ने उस पर आक्रमण कर दिया। बड़ी कठिनाई से हम उस बेचारी की रक्षा कर पाए।

एक बार जब हिमानी ने उसके सुरंग-भवन में प्रवेश किया, तब सुरंग के स्वामी ने उसे खींचकर बाहर कर दिया।

निरुपाय हिमानी ने अपने लिए दूसरा बिल खोदकर कोमल हरी दूब बिछाकर अपना विश्राम कक्ष तैयार किया। तब दुर्मुख उस पर भी अधिकार जमाने को लिए लड़ने लगा, फिर कुछ दिन बाद दुर्मुख की कलह-प्रियता में थोड़ा अंतर आ गया।

एक दिन जब हिमानी अपने बिल से छः शावकों की सेना लेकर निकली, तो जालीघर में ही नहीं, मेरे घर में भी उल्लास की लहर बह गइ।। इसके साथ ही दुर्मुख की अकारण क्रोधी प्रकृति भी अपने आवेश के साथ लौट आई। वह किसी बच्चे का पाँव चबा डालता, किसी का कान चबा डालता और किसी की पीठ पर घाव कर देता। कोमल बच्चे रक्त से भर उठते। हिमानी भी अपनी संतान की रक्षा के प्रयत्न में नित्य ही घायल होने लगी।

फिर एक दिन क्रोध में दुर्मुख ने दो शशक-शावकों की कोमल गरदन अपने तीखें दाँतों से इतनी क्षत-विक्षत कर डाली कि वे बचाए न जा सके। स्थिति इतनी चिंतनीय हो जाने पर मैंने उसे अलग रखने का निश्चय किया। उसे बड़े जालीघर के पास एक जालीघर में रख दिया गया, जहाँ से वह केवल अन्य सबको देख सकता था। धरती के नीचे-नीचे

उसने बड़े जालीघर तक का रास्ता खेज लिया। वहाँ पहुँचकर उसने फिर उत्पात मचाना शुरू कर दिया। माली ने बड़े जालीघर में खुलने वाली सुरंग के द्वार को पत्थर से बंद कर दिया, परंतु इससे दुर्मुख का आक्रमण रोकना कठिन था। वह नए-नए द्वार बना लेता। फिर उसके बच्चे भी बड़े हो गए, पर उनमें से कोई भी उससे लड़कर न जीत सका।

फिर एक दिन जाकर देखा कि दुर्मुख निश्चेष्ट और ठंडा पड़ा है। एक सँपोले की पूँछ की ओर का भाग उसके दाँतों में दबा हुआ है। सँपोले के मुख का भाग उसके पंजों के नीचे था।

प्रायः खरगोश की गंध से साँप आ जाते हैं। संभवतः साँप का बच्चा गंध से जाली के भीतर छिपा हो। दुर्मुख अपने स्वभाव के कारण ही उस पर झपट पड़ा होगा।

हमने बड़े जालीघर में ही उसकी समाधि बना दी है। मेरे माली का आज भी निश्चित मत है कि उस खरगोश पर पहलवान जी की कृपा थी, नहीं तो भला कोई खरगोश साँप से लड़कर उसके टुकड़े कर सकता है। पहलवान की समाधि वहीं कहीं आसपास ही है, दूर-दूर से लोग मनौतियाँ मनाने आते हैं।

शब्द-अर्थ

लड़ाकू — युद्धप्रिय, झगड़ालू
दंपती — पति-पत्नी
निरंतर — लगातार
शशक — खरगोश
सर्वथा — पूर्णतः, हर तरह से
सघन — घना
अवकाश — छुट्टी
शिष्ट — सभ्य
विश्राम — आराम
कलह-प्रियता — लड़ाई पसंद करना, झगड़ालू
अकारण — बिना कारण के
आवेश — क्रोध
प्रयत्न — प्रयास
उत्पात — उपद्रव
सँपोले — साँप का बच्चा
समाधि — अस्थियों को गाड़ने का स्थान
कटखना — काटने वाला
गृहिणी — घर की मालकिन
क्षत-विक्षत — बुरी तरह घायल
विस्मय — आश्चर्य
विपरीत — उल्टा
निर्वासन — देश निकाला
हिम-खंड — बरफ़ का टुकड़ा
निरुपाय — असहाय
कक्ष — कमरा
शावक — शिशु
प्रकृति — स्वभाव
रक्त — खून
चिंतनीय — चिंता के योग्य
निश्चेष्ट — बिना चेतना का
झपटना — आक्रमण करना
मत — विचार

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) खरगोश का नाम दुर्मुख क्यों रखा गया?

(ख) दुर्मुख लेखिका के पास कैसे आया?

(ग) माली के अनुसार दुर्मुख पर किसकी कृपा थी और क्यों?

(घ) हिमानी कौन थी?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) माली ने खरगोश का नाम क्या रखा?

☐ दुर्बुद्धि ☐ लड़ाकू ☐ दुर्वासा ☐ दुर्मुख

(ख) पड़ोस के दंपती ने किसका जोड़ा रखा था?

☐ बिल्ली ☐ हिरण ☐ खरगोश ☐ बकरी

(ग) मादा खरगोश किसके जैसी चमकीली और सफ़ेद थी?

☐ जल ☐ हिमखंड ☐ दूध ☐ रुई

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) ''भय उसका स्थायी भाव है, पर यह शशक सर्वथा विपरीत था।''— से लेखिका का क्या तात्पर्य है?

(ख) किन-किन बातों से पता चलता है कि दुर्मुख का स्वभाव क्रोधी था?

(ग) क्या लेखिका द्वारा दुर्मुख को अलग रखने का निर्णय सही था? अपने तर्क के पक्ष में उत्तर दीजिए।

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए—

(i) ''परंतु सत्य कभी-कभी कल्पना की सीमा नाप लेता है।''

(ii) ''मैंने उसके क्रोधी स्वभाव के कारण उसे 'दुर्वासा' की संज्ञा से विभूषित किया।''

भाषा-ज्ञान

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। कारक के आठ भेद होते हैं- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन कारक।

उचित कारक-चिह्नों (परसर्ग) द्वारा रिक्त स्थान भरिए।

(क) सत्य कभी-कभी कल्पना _____ सीमा लाँघ लेता है। (का, की, के)

(ख) उस छोटे जीव _____ हमारा माली ले आया। (से, में, को)

(ग) प्राय: खरगोश की गंध _____ साँप आ जाते हैं। (की, में, से)

(घ) सुरंग के स्वामी _____ उसे खींचकर बाहर कर दिया। (में, ने, के लिए)

2. जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्द लिखिए।

(क) माली + _____ – _____ (ख) सुदंर + _____ – _____

(ग) स्व + _____ – _____ (घ) मम + _____ – _____

(ङ) लघु + _____ – _____ (च) चिल्ला + _____ – _____

3. दिए गए समस्तपद के समास-विग्रह कीजिए।

समस्तपद		समास-विग्रह	समस्तपद		समास-विग्रह
(क) गुणहीन	–	_____	(ख) रात-दिन	–	_____
(ग) गृहप्रवेश	–	_____	(घ) गुण-दोष	–	_____
(ङ) सुख-दुख	–	_____	(च) दोपहर	–	_____

4. दिए गए शब्दों की व्याख्या कीजिए।

(क) शरणागत – _____ (ख) हिमखंड – _____

(ग) कर्मठ – _____ (घ) दुर्बल – _____

(ङ) जिज्ञासु – _____ (च) अत्याचारी – _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) इंटरनेट की सहायता से विभिन्न पक्षियों के घोंसलों के चित्र एकत्र करके कोलाज बनाइए।

(ख) विश्व के आश्चर्यजनक जीवों पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। इसके लिए आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, टी०वी० चैनलों और इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

(ग) आजकल वनों को जिस प्रकार काटा जा रहा है, उससे पशु-पक्षियों को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है? पता लगाकर लिखिए।

(घ) खरगोश की कितनी प्रजातियाँ होती हैं? पता लगाकर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ङ) यदि दुर्मुख की प्रवृति क्रोधी न होती तो उसके रेखाचित्र में उसकी क्या विशेषताएँ जुड़ जातीं? सोचकर लिखिए।

(च) किसी वन्य प्राणी अभयारण्य के शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन कीजिए।

(छ) जीव-जंतुओं के आपसी व्यवहार के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए।

(ज) पशु-पक्षी मानवीय जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(झ) महादेवी वर्मा द्वारा लिखित कुछ अन्य रेखाचित्र पढ़िए।

3 समर्पण

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती , तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को, लगाओ न देरी,
बाँध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार-घर आँगन क्षमा दो
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो।

सुमन अर्पित, चमन अर्पित,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

—श्री रामावतार त्यागी

कवि परिचय

देशभक्ति एवं मानव जीवन के विविध पक्षों के संबंध में सरस रचनाएँ लिखने वाले श्री रामावतार त्यागी का जन्म 1925 ई. में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में हुआ था। 'नया खून', 'आठवाँ स्वर' आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी मृत्यु 1985 ई. में हुई थी।

शब्द-अर्थ

समर्पित	—	भेंट करना, अर्पित करना	**ऋण**	—	उधार, कर्ज
अकिंचन	—	तुच्छ, अति निर्धन, दरिद्र	**निवेदन**	—	नम्रतापूर्वक आग्रह करना
भाल	—	मस्तक	**चरण**	—	पैर
आशीष	—	आशीर्वाद	**रक्त का कण-कण**	—	खून की एक-एक बूँद
तलवार माँजना	—	तलवार की धार पैनी करना	**स्वप्न**	—	सपना
क्षण-क्षण	—	प्रत्येक पल	**ध्वज**	—	झंडा
सुमन	—	फूल	**चमन**	—	उद्यान, उपवन
नीड़	—	घोंसला	**तृण-तृण**	—	हर एक तिनका

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवि किसे अपना सर्वस्व समर्पित करना चाहते हैं?

(ख) कवि तन-मन और जीवन समर्पित करके भी संतुष्ट क्यों नही हैं?

(ग) कवि पर किसका ऋण है?

(घ) तलवार और ढाल की आवश्यकता कब पड़ती है?

(ङ) 'नीड़' शब्द से कवि ने किस ओर संकेत किया है?

लिखित

1. नीचे लिखे काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार-घर, आँगन क्षमा दो
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो

(क) कवि देश की धरती को क्या-क्या समर्पित करना चाहते हैं?

(ख) कवि किससे क्षमा माँग रहे हैं और क्यों?

(ग) कवि अपने हाथों में क्या-क्या थमा देने को कह रहे हैं?

(घ) 'धरती' और 'देश' शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(ङ) कवि के स्वर में किस भाव की प्रधानता है?

☐ समर्पण की ☐ युद्ध करने की

☐ क्षमा माँगने की ☐ संधि करने का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) कवि ने देश की धरती से क्या निवेदन किया है?

(ख) कवि किसकी धूल माथे पर लगाना चाहते हैं?

(ग) कवि किसका आशीर्वाद चाहते हैं?

(घ) हाथ में तलवार लेकर तथा कमर पर ढाल बाँधकर कवि कहाँ जा रहे हैं?

(ङ) इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

(च) कवि अपने समर्पण से संतुष्ट क्यों नही हैं?

(छ) कवि थाल में सजाकर देश की धरती को क्या भेंट करना चाहते हैं?

(ज) कवि अपने गाँव और अपने घर से मोह का बंधन क्यों तोड़ना चाहते हैं?

(झ) 'नीड़ का तृण-तृण समर्पित' कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है?

(ञ) कवि के समर्पण की भावना को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(क) समर्पित — स् + अ + म् + अ + र् + प् + इ + त् + अ

(ख) अकिंचन — ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(ग) तलवार — ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(घ) धरती — ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(ङ) बाँध — ___ + ___ + ___ + ___

2. विलोम शब्द लिखिए-

(क) जीवन × _____ (घ) बंधन × _____

(ख) स्वीकार × _____ (ङ) विदेश × _____

(ग) धरती × _____ (च) देना × _____

3. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

(क) माथा _____ _____ (घ) सुमन _____ _____

(ख) बादल _____ _____ (ङ) ऋण _____ _____

(ग) धरती _____ _____ (च) अकिंचन _____ _____

4. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जिसके पास कुछ न हो _____

(ख) जिसकी कोई सीमा न हो _____

(ग) शरण में आया हुआ _____

(घ) अच्छा आचरण करने वाला _____

(ङ) जिस पर विश्वास किया जा सके _____

क्रियात्मक गतिविधि

- पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से देशभक्ति की तीन कविताएँ संकलित कर अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाइए।
- इस कविता का कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए।
- 'हमें देश के लिए जीना होगा'– इस पंक्ति के आधार पर तुक मिलाते हुए चार पंक्तियों की रचना कीजिए।
- अपनी कक्षा में देशभक्तों के चित्र लगाकर उनके विषय में 'आशु-संभाषण' का आयोजन कीजिए।
- कक्षा में मातृभूमि का चित्र बनाइए तथा उस पर अपने विचार लिखिए।
- हम अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं इस पर 10 लाइनें लिखिए।

हींगवाला 4

"अम्मा हींग लेगा?" कहता हुआ लगभग 35 साल का एक खान आँगन में आकर रुक गया। पीठ पर बाँधे हुए पीपे को खोलकर उसने नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया। भीतर बरामदे से एक नौ-दस वर्ष के बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया, "अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ।"

पर खान भला क्यों जाने लगा? वह बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ बोला, "अम्मा, हींग लो अम्मा। हम अपने देश कूँ जाता है, बहुत दिनों में लौटेगा।" सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली, "हींग तो बहुत-सी ले रखी है खान। अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो हींग ली थी।"

वह उसी स्वर में फिर बोला, "हेरा हींग है माँ, हम तुम्हारे हाथ की बोहनी माँगता है। एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर।" इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा, "तुम और कुछ मत देखो माँ, यह हींग एक नंबर है। हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।"

सावित्री बोली, "पर इतनी हींग लेकर क्या करूँगी! ढेर सारी तो रखी है।" खान ने कहा, "कुछ भी ले लो अम्मा। हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूँ जाता है। खुदा जाने कब लौटूँगा।" और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे बहुत नाराज हुए। सभी बोल उठे, "मत लेना माँ तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तौले जा रहा है।" जब खान ने हींग तौलकर पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी, तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान की ओर फेंकते हुए कहा, "ले जाओ, हमें नहीं लेना है। चलो माँ, भीतर चलो।"

सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न दे, हींग की पुड़िया उठी ली और पूछा, "कितने पैसे हुए खान?" "पैंतीस

पैसे, अम्मा।'' खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने सात पैसे तोले के भाव से पाँच तोले का दाम पैंतीस पैसे लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया। पर बच्चों को माँ की यह बात अच्छी न लगी। बड़े लड़के ने कहा, ''माँ! तुमने खान को वैसे ही पैसे दे दिए, हींग की कुछ जरूरत नहीं थी।'' छोटा माँ से चिढ़कर बोला, ''दो माँ, पैंतीस पैसे हमको भी दो। हम बिना लिए न रहेंगे।'' लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में बोली, ''तुम माँ से पैसा न माँगो। वे तुम्हें न देंगी। उनका बेटा वही खान है।'' सावित्री को इन बच्चों की बातों से हँसी आ रही थी। उसने अपनी हँसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा, ''चलो-चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो। खाना तैयार है, खाओ।''

छोटा बोला, ''पहले पैसे दो। तुमने खान को दिए हैं।'' सावित्री ने कहा, ''खान ने पैसे के बदले में हींग दी है। तुम क्या दोगे?'' छोटा बोला, ''मिट्टी देंगे।''

सावित्री हँस पड़ी, ''अच्छा चलो पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैंतीस-पैंतीस पैसे दूँगी।''

खाना खाते-खाते हिसाब लगाया गया। एक रुपए में सौ पैसे, पैंतीस पैसे रतन लेगा, पैंतीस पैसे मुन्नी लेगी, छोटे के लिए तो तीस पैसे बचेंगे। छोटा बिगड़ पड़ा ''कभी नहीं मैं तीस पैसे नहीं लूँगा।'' दोनों में मारपीट हो चुकी होती, यदि मुन्नी तीस पैसे स्वयं लेना स्वीकार न कर लेती।

कई महीने बीत गए। सावित्री की सब हींग खत्म हो गई। इसी बीच होली आई। होली के अवसर पर हिंदू-मुसलमानों में बड़े भयंकर रूप से दंगा हो गया। बहुत-से हिंदू-मुसलमान मारे गए। मरने वालों में दो खान भी थे। सावित्री कभी-कभी सोचती, हींगवाला खान तो नहीं मार डाला गया? न जाने क्यों उस हींग वाले खान की याद उसे प्रायः आ जाया करती थी। एक दिन सवेरे-सवेरे उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी वह कुछ बुन रही थी। उसने सुना पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं, ''क्या काम है? भीतर मत जाओ। यहाँ आओ।'' उत्तर मिला, ''हींग है हेरा हींग।'' और खान तब तक आँगन में सावित्री के सामने पहुँच चुका था। खान को देखते ही सावित्री ने कहा, ''बहुत दिनों में आए खान। हींग तो कब की खत्म हो गई।''

खान बोला, ''देश कूँ गया था। अम्मा! परसूँ ही तो लौटा हूँ।''

सावित्री बोली, ''यहाँ तो हिंदू-मुसलमानों में बहुत जोरो का दंगा हो गया।'' खान बोला, ''सुना। समझ नहीं है, लड़नेवालों में।'' सावित्री बोली, ''खान, तुम कहाँ चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा?'' दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला, ''ऐसी बात मत करो, अम्मा। बेटे को भी क्या माँ से डर हुआ है, जो मुझे होता।'' इसके बाद ही उसने

अपना डिब्बा खोला और एक छटाँक हींग तौलकर सावित्री को दे दी। रेजगी दोनों में से किसी के पास न थी। खान पैसा फिर आकर ले जाएगा। सावित्री को सलाम करके वह चला गया।

दशहरा हिंदुओं का बड़ा त्योहार होता है। पिछली होली पर दंगा हो चुका था। हिंदू होली न जला सके थे। दशहरा का दिन उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे। चार बजे शाम को काली का जुलूस निकलने वाला था। पुलिस का काफी प्रबंध था। सावित्री के बच्चों ने कहा, "हम भी काली का जुलूस देखने जाएँगे।" सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे। सावित्री स्वभाव से भीरू थी। उसने बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न जाने कितने प्रलोभन दिए, पर बच्चे न माने, सो न माने। नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था। उसने कहा, "भेज दो न माँ जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूँ।" लाचार होकर सावित्री को काली का जुलूस देखने के लिए बच्चों को भेजना पड़ा। उसने बार-बार रामू को ताकीद दी कि दिन रहते की बच्चों को लेकर लौट आए।

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते-ही-देखते दिन ढल चला। अँधेरा भी बढ़ने लगा, पर बच्चे न लौटे। अब सावित्री को न भीतर से चैन था, न बाहर से। इतने में ही कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आ गई। उन आदमियों से पूछा, "ऐसे भागे क्यों जा रहे हो? काली का जुलूस तो निकल गया न?"

एक आदमी बोला, "दंगा हो गया माँ जी! दंगा बड़ा भारी दंगा।" कहता हुआ वह तेजी से आगे बढ़ गया। सावित्री के हाथ-पाँव ठंडे पड़ गए। इसी समय और लोग तेजी से आते हुए दिखे।

सावित्री ने उन्हें भी रोका। उन लोगों ने कहा, "दंगा हो गया है।"

अब सावित्री क्या करे? उन्हीं में से एक से उसने कहा, "भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो। दो लड़के हैं और एक लड़की। मैं तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगी।" एक देहाती ने जवाब दिया, "का हम तुम्हारे बच्चन का पहिचानित है, माँ जी? फिर जान से पियारा कुछो नाही होत।" यह कहकर वे चले गए।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में देहाती मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब करे भी तो क्या करे? उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों? वे तो बच्चे ठहरे, जिद तो करते ही, पर भेजना उसके हाथ की बाती थी। सावित्री पागल-सी हो गई। बच्चों की मंगल-कामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले। शोरगुल बढ़कर शांत हो गया। रात के

साथ नीरवता बढ़ गई, पर बच्चे लौटकर न आए। सावित्री उदास हो गई, और फूट-फूटकर रोने लगी। इसी समय उसे वही चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा, "अम्मा।"

सावित्री दौड़कर बाहर आई। उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं।

खान ने सावित्री को देखते ही कहा, "बख्त अच्छा नहीं अम्मा। बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ मे बाहर न भेजा करो।" बच्चे दौड़कर माँ से लिपट गए।

— श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

लेखिका परिचय

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 ई. में इलाहाबाद के एक संपन्न परिवार में हुआ। साहित्य के प्रति इनकी रूचि बचपन से ही थी। खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह से उनका विवाह हुआ। उनकी कहानियाँ, रेखाचित्र और कविताएँ हिंदी साहित्य की अनुपम धरोहर हैं। वर्ष 1948 में उनका निधन हो गया।

शब्द-अर्थ

बोहनी	— पहली बिक्री	**सरकाना**	— खिसकाना
रेजगी	— रेजगारी (खुले पैसे)	**भीरू**	— डरने वाला (डरपोक)
प्रलोभन	— लालच	**नाही**	— नहीं
पियारा	— प्रिय/प्यारा	**परसूँ**	— परसों
कुछो	— कुछ भी	**होत**	— होता है
नीरवता	— खामोशी	**सकुशल**	— कुशलतापूर्वक
बख्त	— वक्त/समय	**प्रबंध**	— इंतजाम, व्यवस्था
ताकीद	— हिदायत, चेतावनी देना, आग्रह करना		

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) खान की आयु लगभग कितनी थी?

(ख) हींगवाला सावित्री से हींग लेने का आग्रह क्यों कर रहा था?

(ग) हींगवाले ने किस भाव से कितनी हींग सावित्री को बेची?

(घ) सावित्री की बेटी ने अपने भाई से क्या कहा?

(ङ) दशहरे के दिन किसका जुलूस निकलने वाला था।?

लिखित

1. सावित्री बोली, ''पर इतनी हींग लेकर क्या करूँगी! ढेर सारी तो रखी है।'' खान ने कहा, ''कुछ भी ले लो अम्मा। हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूँ जाता है। खुदा जाने कब लौटूँगा।'' और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे बहुत नाराज हुए। सभी बोल उठे, ''मत लेना माँ, तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तौले जा रहा है।'' जब खान ने हींग तौलकर पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी, तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान की ओर फेंकते हुए कहा, ''ले जाओ, हमें नहीं लेना है। चलो माँ, भीतर चलो।''

- **सही विकल्प चुनकर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) सावित्री हींग इसलिए नहीं लेना चाहती थी, क्योंकि–

- ☐ ढेर सारी हींग रखी थी।
- ☐ खान अच्छी हींग नहीं लाया था।
- ☐ सावित्री के बच्चे खान को पसंद नहीं करते थे।

(ख) सावित्री के बच्चे किस कारण नाराज हुए?

- ☐ सावित्री द्वारा हींग खरीदने के कारण
- ☐ खान से देश जाने की बात सुनकर
- ☐ खान द्वारा जबरदस्ती हींग तौलने पर

(ग) हींग की पुड़िया किसने फेंकी?

- ☐ सावित्री ने
- ☐ खान ने
- ☐ सावित्री के छोटे बच्चे ने

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) हींग बेचनेवाला खान सावित्री के घर में कहाँ आकर बैठा?

(ख) खान ने सावित्री से क्या आग्रह किया?

(ग) खान ने हींग की क्या विशेषताएँ बताई?

(घ) छोटे लड़के ने कितने पैसे लेने की जिद की?

(ङ) बच्चे क्या देखने जाने की जिद कर रहे थे?

(च) ''उनका बेटा वही खान है।'' कथन के माध्यम से बड़ी बेटी अपने भाइयों से क्या कहना चाहती थी?

(छ) सावित्री ने बच्चों की नाराजगी दूर करने के लिए क्या कहा?

(ज) होली में हुए दंगे की खबर सुनकर सावित्री क्यों चिंतित थी?

(झ) बच्चों के समय पर घर न लौटने से हुई सावित्री की दशा का वर्णन कीजिए।

(ञ) सावित्री ने काली के जुलूस में न जाने के लिए बच्चों को क्या-क्या प्रलोभन दिए और क्यों?

भाषा-ज्ञान

निर्देशानुसार उत्तर लिखिए-

1. दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए-

(क) रसोईघर _____ (घ) खत्म _____

(ख) प्रतीक्षा _____ (ङ) अम्मा _____

(ग) सलाम _____ (च) प्रबंध _____

2. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव एवं अवस्था का बोध कराने वाले शब्द 'संज्ञा' कहलाते हैं। संज्ञा के तीन प्रमुख भेद होते हैं—

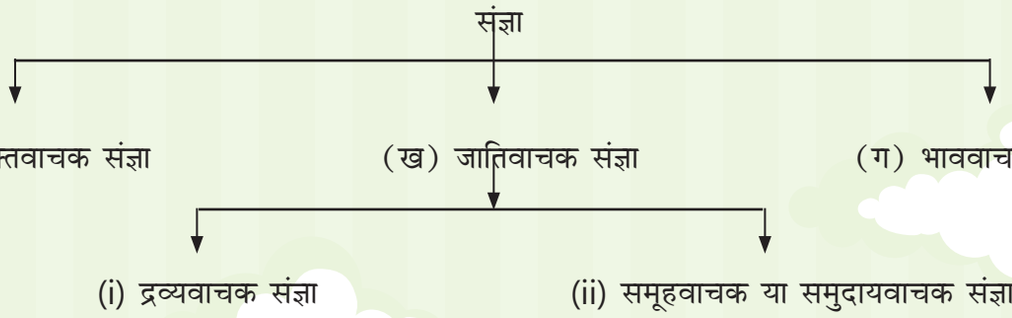

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा— किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- सावित्री, रामू, मौलसिरी आदि।

(ख) जातिवाचक संज्ञा— किसी जाति का बोध कराने वाले शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- बच्चे, देहात आदि। इसके दो उपभेद स्वीकार किए गए हैं-

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा— जो शब्द किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराते हैं अर्थात् जिन्हें नापा या तौला जा सकता है, द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- हींग, सोना, तेल, घी, चावल आदि।

(ii) समूहवाचक या समुदायवाचक संज्ञा— जब शब्द किसी समूह का बोध कराते हैं, उन्हें समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- भीड़, जुलूस आदि।

(ग) भाववाचक संज्ञा— जो किसी गुण, अवस्था अथवा भाव का बोध कराते हैं, भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। ये भाववाचक संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। जैसे- गंभीरता, उत्सुकता, नीरवता।

- **दिए गए वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए-**

(क) खान चबूतरे पर बैठ गया।

☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐ जातिवाचक संज्ञा

(ख) सावित्री ने खान को पैसे दिए।

☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा

(ग) "हेरा हींग है माँ, हम तुम्हारे हाथ की बोहनी माँगता है।"

☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा

(घ) रात के साथ नीरवता बढ़ती गई।

☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ङ) सावित्री ने बच्चों को जुलूस देखने भेज दिया।

☐ द्रव्यवाचक संज्ञा ☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ समूह या समुदायवाचक संज्ञा

(च) इतनी भीड़ में देहाती बच्चों को कैसे ढूँढ़ता?

☐ व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ द्रव्यवाचक संज्ञा

☐ समूह या समुदायवाचक संज्ञा

3. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखते हुए उनका प्रयोग करके वाक्य बनाइए-

(क) हाथ-पाँव फूलना अर्थ- _____

वाक्य- _____

(ख) आसमान टूट पड़ना अर्थ- _____

वाक्य- _____

(ग) हाथ-पाँव ठंडे पड़ना अर्थ- _____

वाक्य- _____

4. प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं- विकारी शब्द और अविकारी शब्द।

(क) विकारी शब्द- ये मूलत: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द होते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन कारक और के कारण परिवर्तन आ जाता है। ये शब्द पविर्तनशील होने के कारण 'विकारी शब्द' कहलाते हैं।

जैसे- बच्चा— बच्चे, बच्चों, बच्चियों आदि रूपों में परिवर्तित होता रहता है।

(ख) अविकारी शब्द- इन शब्दों के रूप में कभी परिवर्तन नहीं होता। ये क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक और निपात के शब्द होते हैं। रूप-परिवर्तन न होने के कारण ये 'अविकारी' (अव्यय) शब्द कहलाते हैं अर्थात् इनमें कोई विकार नहीं आता।

- **नीचे लिखे शब्दों के आगे उनके भेद (विकारी/अविकारी) लिखिए-**

(क) पुस्तक _____ (ङ) ही _____

(ख) और _____ (च) डिब्बा _____

(ग) खिलौना _____ (छ) ऊपर _____

(घ) धीरे-धीरे _____ (ज) पीपा _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **किसी फेरीवाले से आपने कभी कुछ खरीदा होगा, जैसे- आम, भुट्टे, मूँगफली आदि। अपने अनुभव कक्षा में सुनाइए।**
- **''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना'' विषय पर कक्षा में आशु-संभाषण आयोजित कीजिए।**

आखिरी चट्टान

5

कन्याकुमारी! सुनहरे सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि।

केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के बाई तरफ़ समुद्र के अंदर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मंदिर की लाल और सफ़ेद लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी इन तीनों के संगम-स्थल- सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी, हर तरफ़ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी। हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं, जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था-शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ़ से क्षितिज तक पानी-पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिंद महासागर की, अपेक्षा अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं हूँ एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा-बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान। जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफ़ी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर सिहर गया। मैंने एक नज़र फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूदकर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

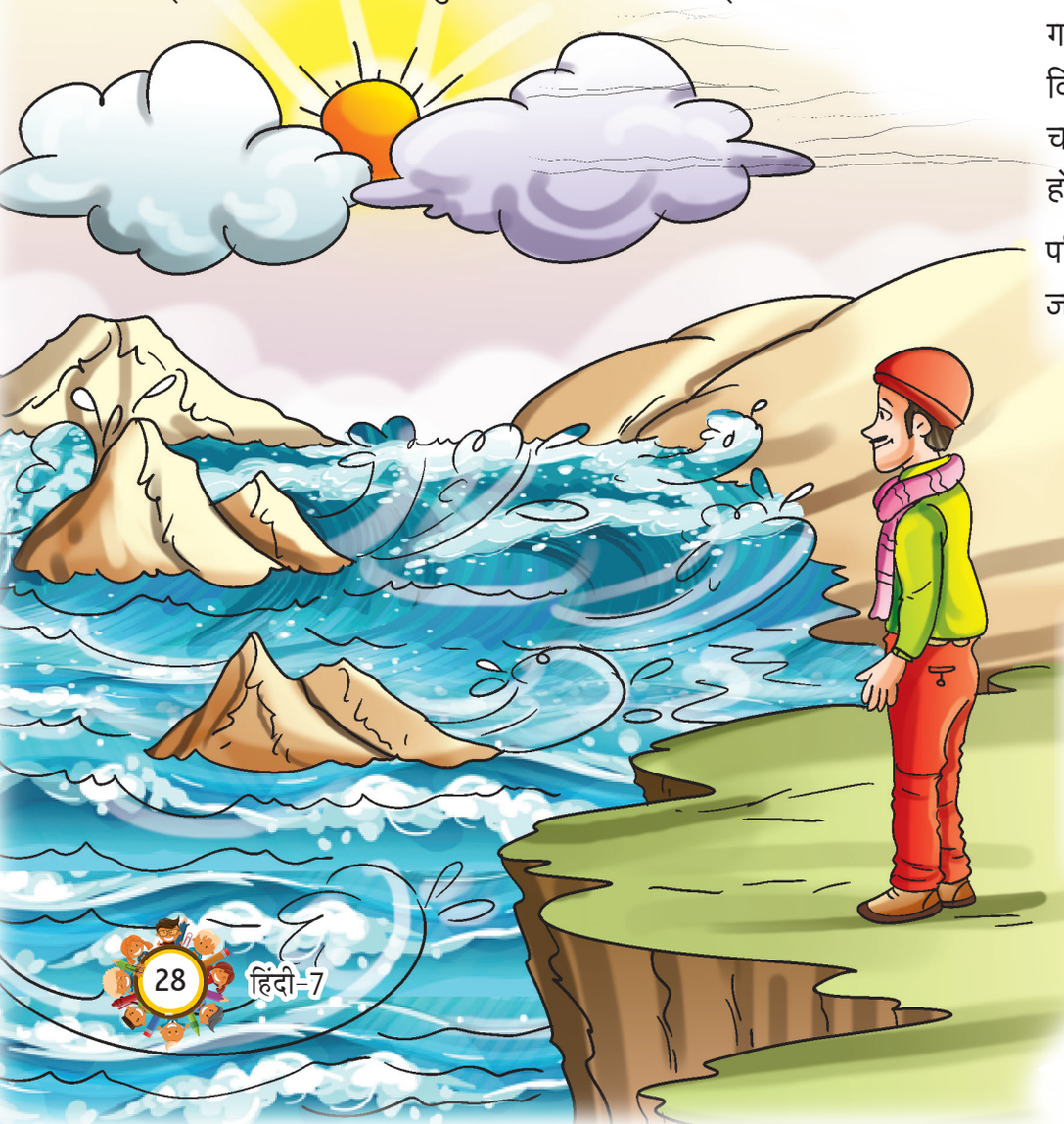

पश्चिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था। मैं सूर्यास्त की दिशा में चलने लगा। दूर पश्चिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर पीली रेत का एक ऊँचा टीला नज़र आ रहा था। सोचा उस टीले पर जाकर सूर्यास्त देखूँगा।

यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं। हम लोग टीले पर पहुँच गए। यह वह 'सैंडहिल' थी, जिसकी चर्चा मैं वहाँ पहुँचने के बाद से ही सुन रहा था। सैंडहिल पर बहुत-से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक, दो-तीन गांधी टोपियों

वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी। कन्याकुमारी का सूर्यास्त देखने के लिए उन्होंने विशेष रुचि के साथ सुंदर रंगों का रेशम पहना था। हवा समुद्र की तरह रेशम में भी लहरें पैदा कर रही थी। मिशनरी युवतियाँ वहाँ आकर थकी-सी एक तरफ़ बैठ गईं-उस पूरे केनवस में एक तरफ़ छिटके हुए कुछ बिंदुओं की तरह। उनसे कुछ दूरी पर एक रंगहीन बिंदु, मैं, ज्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका। सैंडहिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखाई दे रहा था, पर अरब सागर की तरफ़ एक और ऊँचा टीला था, जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि मे देखा जा सके, इसके लिए मैं कुछ देर सैंडहिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ़ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता हुआ वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचकर सोचता कि पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार अब अवश्य नज़र आ जाएगा। और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दे गया-वहाँ से दूर तक एक रेत की लंबी ढलान थी, जैसे उस टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया। ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार स्पर्श किया हो।

पीछे दाईं तरफ़ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नज़र आ रहे थे। गूँजती हुई तेज़ हवा से उनकी टहनियाँ ऊपर को उठ रही थीं। पश्चिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक शृंखला दूर तक चली गई थी, जो सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी। सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहरी किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा, जैसे रेत का कुवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हलकी उदासी भी घिर आई।

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना घुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैंगनी और बैंगनी से काला पड़ गया। मैंने फिर एक बार मुड़कर दाईं तरफ़ पीछे देख लिया। नारियलों की टहनियाँ उसी तरह हवा में ऊपर उठी थीं। हवा उसी तरह गूँज रही थी। पूरे दृश्य पर स्याही फैल गई थी। वृक्ष एक-दूसरे से दूर खड़े झुरमुट, स्याह पड़कर, जैसे लगातार सिर धुन रहे थे और हाथ-पैर पटक

रहे थे। मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और मुट्ठियाँ भींचता-खोलता कभी उस तरफ़ और कभी समुद्र की तरफ़ देखता रहा।

अचानक खयाल आया कि मुझे वहाँ से लौटकर भी जाना है। इस खयाल से ही शरीर में कँपकँपी भर गई। दूर सैंडहिल की तरफ़ देखा। वहाँ स्याही में डूबे कुछ धुँधले रंग हिलते नज़र आ रहे थे। मैंने रंगों को पहचानने की कोशिश की, पर उतनी दूर से आकृतियों को अलग-अलग कर सकना संभव नहीं था। मेरे और उन रंगों के बीच स्याह पड़ती रेत के कितने ही टीले थें मन में डर सताने लगा कि क्या अँधेरा होने से पहले मैं उन सब टीलों को पार करके जा सकूँगा? कुछ कदम उस तरफ़ बढ़ा भी पर लगा कि नहीं! उस रास्ते से जाऊँगा, तो शायद रेत में ही भटकता रह जाऊँगा। इसलिए सोचा बेहतर है, नीचे समुद्र-तट पर उतर जाऊँ-तट का रास्ता निश्चित रूप से केप होटल के सामने तक ले जाएगा। निर्णय तुरंत करना था, इसलिए बिना और सोचे मैं रेत पर बैठकर नीचे तट की तरफ़ फिसल गया। पर तट पर पहुँचकर फिर कुछ क्षण बढ़ते अँधरे की बात भूला रहा। कारण था तट की रेत। यूँ पहले भी समुद्र-तट पर कई-कई रंगों की रेत देखी थी। सुरमई, खाकी, पीली और लाल। मगर जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे, एक-एक इंच पर एक-दूसरे से अलग और एक-एक रंग कई-कई रंगों की झलक लिए हुए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग-अलग सम्मिश्रण पाये जा सकते थे, वे सब यहाँ थें और उनके अतिरिक्त भी बहुत-से रंग थे। मैंने कई अलग-अलग रंगों की रेत को हाथ में लेकर देखा और मसलकर नीचे गिर जाने दिया। जिन रंगों को हाथों से नहीं छू सका, उन्हें पैरों से मसल दिया। मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था। यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।

समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई, ते सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ। मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा। तट का सिर्फ़ तीन-तीन, चार-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था। लग रहा था कि जल्दी ही पानी उसे भी अपने अंदर समा लेगा। एक बार सोचा कि खड़ी रेत से होकर फिर ऊपर चला जाऊँ। पर वह स्याह पड़ती रेत इस तरह दीवार की तरह उठी थी कि उस रास्ते जाने की कोशिश करना ही बेकार था। मेरे मन में खतरा बढ़ गया। मैं दौड़ने लगा। दो-एक और लहरें पैरों के नीचे तक आकर लौट गईं। मैंने जूता उतारकर हाथ में ले लिया। एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने जा रही हो। सामने एक ऊँची चट्टान थी। वक्त पर अपने को सँभालने की कोशिश की, फिर उससे टकरा गया। बाँहों पर हलकी खरोंच आ गई, पर ज़्यादा चोट नहीं लगी। चट्टान पानी के अंदर तक चली गई थी- उससे बचकर आगे जाने के लिए पानी में उतरना आवश्यक था। पर इस समय पानी की तरफ़ पाँव बढ़ाने का मेरा साहस नहीं हुआ। मैं चट्टान की नोकों पर पैर रखता किसी तरह उसके ऊपर पहुँच गया। सोचा नीचे खड़े रहने की अपेक्षा वह अधिक सुरक्षित होगा। पर ऊपर पहुँचकर लगा जैसे मेरे साथ मज़ाक किया गया हो। चट्टान के उस तरफ़ तट का खुला फैलाव था-लगभग सौ फुट का । कितने ही लोग वहाँ टहल रहे थे। ऊपर सड़क पर जाने के लिए वहाँ से रास्ता भी बना था। मन से डर निकल जाने से मुझे अपने-आप काफ़ी हलका लगा और मैं चट्टान से नीचे कूद गया।

रात केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिंद महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें-एक पौधे की टहनियाँ। नीचे सड़क पर टॉर्च जलाता-बुझाता एक आदमी। दक्षिण-पूर्व के क्षितिज में एक जहाज़ की मद्धिम-सी रोशनी।

सूर्योदय। हम आठ आदमी 'विवेकानंद चट्टान' पर बैठे थे। चट्टान तट से सौ-सवा-सौ गज आगे समुद्र के बीच जाकर है-वहाँ, जहाँ बंगाल की खाड़ी की भौगोलिक सीमा समाप्त होती है। मेरे अलावा तीन कन्याकुमारी के बेकार नवयुवक थे, जिनमें से एक ग्रेज़ुएट था। चार मल्लाह थे, जो एक छोटी-सी मछुआ नाव में हमें वहाँ लाए थे। नाव क्या थी, रबड़-पेड़ के तीन तनों

को साथ जोड़ लिया गया था, बस। नीचे की नुकीली चट्टानों और ऊपर की ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को उस तरफ़ ला रहे थे, तो मैंने आसमान की तरफ़ देखते हुए उतनी देर अपनी चेतना को स्थगित रखने की चेष्टा की थी, अपने अंदर के डर को दिखावटी उदासीनता से ढके रखना चाहा था। पर जब चट्टान पर पहुँच गया, तो डर मेरी टाँगों में उतर गया क्योंकि वहाँ बैठे हुए भी वे हलके-हलके काँप रही थीं।

ग्रेज़ुएक नवयुवक मुझे बता रहा था कि कन्याकुमारी की आठ हज़ार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं। उनमें से सौ के लगभग ग्रेज़ुएट हैं। उनका मुख्य धंधा है नौकरियों के लिए अर्ज़ियाँ देना और बैठकर आपस में बहस करना। वह खुद वहाँ फ़ोटो-एलबम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे। "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं।" वह कह रहा था, "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।"

पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में बिखरी स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत-से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। घाट से थोड़ा हटकर गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे सरकारी मेहमानों को सूर्योदय के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख मालाएँ दिखला रही थीं। वे लोग दोनों काम साथ-साथ कर रहे थे-मालाओं का मोल-तोल और अपने बाइनॉक्यूलर्स से सूर्यदर्शन। मेरा साथी अब मुहल्ले-मुहल्ले के हिसाब से मुझे बेकारी के आँकड़े बता रहा था।

–मोहन राकेश

शब्द-अर्थ

सूर्योदय	—	सूर्य का उगना	**सूर्यास्त**	—	सूर्य का डूबना
पृष्ठभूमि	—	पीछे का भाग	**स्याह**	—	काला
चूरा बूँद	—	जल की छोटी-छोटी बूदें	**क्षितिज**	—	जहाँ धरती-आकाश मिलते हैं
सैंडहिल	—	रेत का टीला	**सार्थकता**	—	उपयोगिता
बीहड़	—	उबड़-खाबड़	**वीरान**	—	निर्जन
सम्मिश्रण	—	अच्छी तरह से मिलाया हुआ	**एहसास**	—	अनुभव
मद्धिम-सी-रोशनी	—	हल्की सी रोशनी	**भौगोलिक सीमा**	—	सरहद
नवयुवक	—	युवा लड़का	**ग्रेज़ुएट**	—	स्नातक
स्थगित	—	टालना	**चेष्टा**	—	कोशिश
उदासीनता	—	खिन्नता	**आबादी**	—	जनसंख्या
अर्घ्य	—	देवताओं को अर्पित किया जानेवाला जल	**स्थानीय**	—	स्थान से संबंधित
बेकारी	—	बेरोजगारी	**बाइनॉक्यूलर्स**	—	दूरबीन

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक देर तक क्या देखता रहा?

(ख) लेखक का पूरा शरीर क्यों सिहर गया?

(ग) मिशनरी युवतियाँ कैसी लग रही थीं?

(घ) गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे किन्हे कॉफ़ी पिला रहे थे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सुनहरे सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि कौन-सी है?

☐ मंसूरी ☐ कन्याकुमारी ☐ कश्मीर ☐ मनाली

(ख) टीला क्या था?

☐ ड्रॉपहिल ☐ स्टोन ☐ सैंडहिल ☐ आइस हिल

(ग) लेखक ने क्या सोचा कि समुद्र-तट का रास्ता कहाँ तक ले जाएगा?

☐ लेक होटल ☐ रिव होटल ☐ जेपी होटल ☐ केप होटल

(घ) आठ आदमी किस चट्टान पर बैठे थे?

☐ भगतसिंह चट्टान ☐ दयानंद चट्टान ☐ विवेकानंद चट्टान ☐ गांधी चट्टान

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) ग्रेज़ुएट नवयुवक ने लेखक को क्या बताया?

(ख) **आशय स्पष्ट कीजिए–**

(i) लगा जैसे रेत का कुँवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो।

(ii) उनसे कुछ दूरी पर एक रंगहीन बिंदु, मैं ज्यादा देर अपनी जगह स्थिर न रह सका।

(iii) वहीं स्याही में डूबे कुछ धुँधले रंग हिलते नज़र आ रहे थे।

भाषा-ज्ञान

1. जिस समास का पहला पद अव्यय हो तथा उसके योग से समस्त पद भी अव्यय बन जाए, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होता है। जैसे- समस्त पद- यथासंभव, हाथोंहाथ।

पहला पद अव्यय– यथा। समास– विग्रह– जैसा संभव हो।

पहला पद अव्यय– हाथ। समास– विग्रह– हाथ-ही-हाथ में।

- **दिए गए अव्ययीभाव समास का विग्रह कीजिए।**

(क) प्रतिक्षण – _____ (ख) यथानियम – _____

(ग) यथासमय – _____ (घ) यथाशीघ्र – _____

(ङ) भरपेट – _____ (च) आजन्म – _____

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(क) 'गहरा' का विलोम – _____

(ख) 'जहाँ जाना कठिन हो' के लिए एक शब्द – _____

(ग) 'नुकीली चट्टान' में विशेषण – _____

(घ) 'धरती' का पर्यायवाची – _____

3. शब्दों में लगे प्रत्यय पर सही (✓) का निशान लगाइए।

(क)	ऊँचाई	–	आई	ई	इ	इक
(ख)	घबराहट	–	आ	आवा	आहट	आवट
(ग)	भुलक्कड़	–	अव	अक्कड़	अड़	ड़
(छ)	गमन	–	न	अन	अ	अव
(ङ)	बहता	–	ता	आ	ई	इक

4. दिए गए वाक्यों को भूतकाल में लिखिए।

(क) मैं समुद्र की ओर जा रहा हूँ। _____

(ख) एक लहर मेरे पैर को छुएगी। _____

(ग) मैं रेत को हाथ में लेकर देखूँगा। _____

5. रेखांकित कारक-चिह्नों के भेद लिखिए।

(क) सुनहरी किरणों ने रेत को रंगीन कर दिया। _____ _____

(ख) चट्टान पर पहुँचकर डर मेरी टाँगों में उतर गया। _____ _____

(ग) सड़क पर जाने के लिए वहाँ से रास्ता बना था। _____ _____

(छ) कुछ रंगो को हाथों से छुआ, कुछ को पैरों से मसल दिया। _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) अपनी किसी यात्रा का वर्णन अपने अनुभव के आधार पर कीजिए।

(ख) सूर्योदय और सूर्यास्त का चित्र परियोजना कॉपी में बनाते हुए उनका वर्णन कीजिए।

(ग) 'टाइटैनिक' फ़िल्म देखिए और फ़िल्म की कहानी को संक्षेप में लिखिए।

(घ) कक्षा के सभी छात्र मिलकर एक कहानी बनाएँगे। कोई एक छात्र कहानी का पहला वाक्य बोलेगा। अन्य छात्र एक-एक वाक्य बोलते हुए कहानी के इस क्रम को आगे बढ़ाएँगे।

(ङ) अपनी किसी यात्रा के बारे में बताते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

धर्म की झाँकी

6

छह या सात साल से लेकर सोलह साल की उम्र तक मैंने पढ़ाई की, पर स्कूल में कहीं भी धर्म की शिक्षा नहीं मिली। यों कह सकते हैं कि शिक्षकों से, जो आसानी से मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। फिर भी वातावरण से कुछ-न-कुछ तो मिलता ही रहा। यहाँ धर्म का उदार अर्थ करना चाहिए। धर्म अर्थात आत्मबोध, आत्मज्ञान। मैं वैष्णव संप्रदाय मे जन्मा था, इसलिए हवेली में जाने के प्रसंग बार-बार आते थे पर उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई। हवेली का वैभव मुझे अच्छा नहीं लगा। हवेली में चलने वाली अनीति की बातें सुनकर मन उसके प्रति उदासीन बन गया। वहाँ से मुझे कुछ भी न मिला।

पर जो हवेली से न मिला, वह मुझे अपनी धाय रंभा से मिला। रंभा हमारे परिवार की पुरानी नौकरानी थी। उसका प्रेम मुझे आज भी याद है। मुझे भूत-प्रेत आदि से डर लगता था। रंभा ने मुझे समझाया कि इसकी दवा रामनाम है। मुझे तो राम-नाम से भी अधिक श्रद्धा रंभा पर थी, इसलिए बचपन में भूत-प्रेतादि के भय से बचने के लिए मैंने रामनाम जपना शुरू किया। यह जप बहुत समय तक नहीं चला पर बचपन में जो बीज बोया गया, वह नष्ट नहीं हुआ। आज राम-नाम मेरे लिए अमोघ शक्ति है। मैं मानता हूँ कि उसके मूल में रंभा धाय का बोया हुआ बीज है। इसी अरसे में मेरे चाचा जी के एक लड़के ने, जो रामायण के भक्त थे, हम दो भाइयों को राम-रक्षा का पाठ सिखाने की व्यवस्था की। हमने उसे कंठस्थ कर लिया और स्नान के बाद उसके नित्यपाठ का नियम बनाया। जब तक पोरबंदर में रहे, यह नियम चला। राजकोट के वातावरण में, यह टिक न सका। इस क्रिया के प्रति भी खास श्रद्धा नहीं थी। अपने बड़े भाई के लिए मन में जो आदर था, उसके कारण और कुछ शुद्ध उच्चारणों के साथ राम-रक्षा का पाठ कर पाते थे, इस अभिमान के कारण पाठ चलता रहा। पर जिस चीज़ का मेरे मन पर गहरा असर पड़ा, वह था रामायण का पारायण। पिता जी की बीमारी का थोड़ा समय पोरबंदर में बीता था। वहाँ वे राम जी के मंदिर में रोज़ रात के समय रामायण सुनते थे सुनाने वाले बीलेश्वर के लाधा महाराज नामक एक पंडित थे। वे रामचंद्र जी के परम भक्त थे। उनके बारे में यह कहा जाता था कि उन्हें कोढ़ की बीमारी हुई, तो उसका इलाज करने के बदले उन्होंने बिल्वकेश्वर महादेव पर चढ़े हुए बेलपत्र लेकर

कोढ़वाले अंग पर बाँधे और केवल राम-नाम का जप शुरू किया। अंत में उनका कोढ़ जड़मूल से नष्ट हो गया। यह बात सच हो या न हो, हर सुनने वाले ने तो सच ही मानी। यह भी सच है कि जब लाधा महाराज ने कथा शुरू की , तब उनका शरीर बिलकुल निरोग। लाधा महाराज का कंठ मीठा था। वे दोहा-चौपाई गाते और अर्थ समझाते थे। उस समय मेरी उम्र तेरह साल की रही होगी, पर याद पड़ता है कि उनके पाठ में मुझे खूब रस आता था। यह रामायण-श्रवण रामायण के प्रति मेर अत्यधिक प्रेम की बुनियाद है। आज मैं तुलसीदास की रामायण को भक्तिमार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूँ।

कुछ महीनों बाद हम राजकोट आए। वहाँ रामायण का पाठ नहीं होता था। एकादशी के दिन भागवत ज़रूर पढ़ी जाती थी। मैं कभी-कभी उसे सुनने बैठता था पर भट्ट जी, रस उत्पन्न नहीं कर सके। आज मैं यह देख सकता हूँ कि भागवत एक ऐसा ग्रंथ है, जिसके पाठ से धर्म-रस उत्पन्न किया जा सकता है। मैंने तो उसे गुजराती में बड़े चाव से पढ़ा है लेकिन इक्कीस दिन के अपने उपवास काल में भारत-भूषण पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शुभ मुख से मूल संस्कृत के कुछ अंश जब सुने, तो खयाल हुआ कि बचपन में उनके समान भगवद-भक्त के मुँह से भागवत सुनी होती, तो उस पर उसी उम्र में मेरा गाढ़ा प्रेम हो जाता। बचपन में पड़े हुए शुभ-अशुभ संस्कार बहुत गहरी जड़े जमाते हैं, इसे मैं खूब अनुभव करता हूँः और इस कारण उस उम्र में मुझे कई उत्तम ग्रंथ सुनने का लाभ नहीं मिला, सो अब अखरता है।

राजकोट में मुझे अनायास ही सब संप्रदायों के प्रति समान भाव रखने की शिक्षा मिली। मैंने हिंदू धर्म के प्रत्येक संप्रदाय का आदर करना सीखा, क्योंकि माता-पिता वैष्णव मंदिर में, शिवालय में और राम मंदिर में भी जाते और भाइयों को भी साथ ले जाते या भेजते थे।

फिर पिता जी के पास जैन धर्माचार्यों में से भी कोई-न-कोई हमेशा आते रहते थे। पिता जी उन्हें भिक्षा भी देते थे। वे पिता जी के साथ धर्म और व्यवहार की बातें किया करते थे। इसके सिवा, पिता जी के मुसलमान और पारसी मित्र भी थे। वे अपने-अपने धर्म की चर्चा करते और पिता जी उनकी बातें सम्मानपूर्वक और अक्सर धैर्यपूर्वक सुना करते थे। ऐसी चर्चा के समय मैं अक्सर हाज़िर रहता था। इस सारे वातावरण का प्रभाव मुझ पर यह पड़ा कि मुझमें सब धर्मों के लिए समान भाव पैदा हो गया।

यद्यपि दूसरे धर्मों के प्रति समभाव जागा, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि मुझमें ईश्वर के प्रति आस्था थी। इन्हीं दिनों पिता जी के पुस्तक-संग्रह में से मनुस्मृति का भाषांतर मेरे हाथ में आया। उसमें संसार की उत्पत्ति आदि की बातें पढ़ीं। उन पर श्रद्धा नहीं जमी, उलटे थोड़ी नास्तिकता ही पैदा हुई। मेरे दूसरे चाचा जी के लड़के की, जो अभी जीवित हैं, बुद्धि पर मुझे विश्वास था। मैंने अपनी शंकाएँ उनके सामने रखीं, पर वे मेरा समाधान न कर सके। उन्होंने मुझे उत्तर दिया- '' सयाने होने पर ऐसे प्रश्नों के उत्तर तुम खुद दे सकोगे।बालकों को ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए।'' मैं चुप रहा। मन को शांति नहीं मिली। मनुस्मृति के खाद्याखाद्य-विषयक प्रकरण में और दूसरे प्रकरणों में भी मैंने वर्तमान प्रथा का विरोध पाया। इस शंका का उत्तर भी मुझे लगभग ऊपर के जैसा ही मिला। मैंने यह सोचकर अपने मन को समझा लिया कि 'किसी दिन बुद्धि खुलेगी, अधिक पढ़ूँगा और समझूँगा।' उस समय मनुस्मृति को पढ़कर मैं अहिंसा तो सीख ही न सका । मांसाहार की चर्चा हो चुकी है। उसे मनुस्मृति का समर्थन मिला। यह भी खयाल हुआ कि सर्पादि और खटमल आदि को मारना नीति है। मुझे याद है कि उस समय मैंने धर्म समझकर खटमल आदि का नाश किया था। पर एक चीज़ ने मन में जड़ जमा ली-यह संसार नीति पर टिका हुआ है। नीतिमात्र का समावेश सत्य में है। सत्य को तो खोजना ही होगा। दिन-पर-दिन, सत्य की महिमा मेरे निकट बढ़ती गई। सत्य की व्याख्या विस्तृत होती गई, और अभी भी हो रही है।

–मोहनदास करमचंद गांधी

शब्द-अर्थ

आत्मबोध	—	स्वयं की पहचान	**वैभव**	—	भव्यता
उदासीन	—	विरक्त; तटस्थ	**धाय**	—	बच्चे की देखभाल के लिए नियुक्त स्त्री
प्रकरण	—	संदर्भ, प्रसंग			
अमोघ	—	अचूक	**कंठस्थ**	—	ज़ुबानी याद
पारायण	—	पाठ	**नीरोग**	—	स्वस्थ
श्रवण	—	सुनना	**बुनियाद**	—	नींव
उपवास	—	व्रत	**अनायास**	—	अचानक
शिवालय	—	शिव का मंदिर	**धर्माचार्य**	—	धर्म का उपदेश देने वाले
समभाव	—	समानता का भाव	**आस्था**	—	श्रद्धा
भाषांतर	—	अनुवाद	**उत्पत्ति**	—	निर्माण
नास्तिकता	—	ईश्वर में अविश्वास	**खाद्याखाद्य**	—	खाने व न खाने योग्य

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) रंभा के विषय में गांधी जी ने क्या बताया है?

(ख) गांधी जी ने धर्म का क्या अर्थ बताया?

(ग) मदन मोहन मालवीय के मुख से भागवत सुनकर गांधी जी के मन में क्या विचार आया?

(घ) गांधी जी को अपने पिता जी के पुस्तक-संग्रह में से कौन-सी पुस्तक मिली?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) प्रस्तुत पाठ के लेखक कौन हैं?

☐ नेहरू जी ☐ गांधी जी ☐ विवेकानंद जी ☐ भगत सिंह जी

(ख) गांधी जी ने विद्यालय में किस उम्र तक पढ़ाई की?

☐ तेरह साल ☐ सोलह साल ☐ अठारह साल ☐ पंद्रह साल

(ग) गांधी जी ने कौन-सा पाठ याद कर लिया?

☐ राम-रक्षा ☐ गीता ☐ पुराण ☐ वेद

(घ) गांधी जी ने भागवत को किस भाषा में पढ़ा?

☐ संस्कृत ☐ गुजराती ☐ हिंदी ☐ तमिल

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) लाधा महाराज के विषय में कौन-सी बात प्रचलित थी?

(ख) मनुस्मृति के विषय में गांधी जी ने क्या बताया?

(ग) ''नीतिमात्र का समावेश सत्य में है। सत्य को तो खोजना ही होगा।''— व्याख्या कीजिए।

(घ) ''यद्यपि दूसरे धर्मों के प्रति समभाव जागा, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि मुझमें ईश्वर के प्रति आस्था थी।''— गांधी जी के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को उचित क्रिया से पूरा कीजिए।

(क) मैं वैष्णव संप्रदाय में जन्मा _____ । (थी / थे / था)

(ख) हमने राम-रक्षा का पाठ कंठस्थ कर _____ । (लिए / ली / लिया)

(ग) बीलेश्वर के लाधा महाराज नामक एक पंडित _____ । (मिले / मिली / मिला)

(घ) सब संप्रदायों के प्रति समान भाव रखने की शिक्षा _____ । (मिले / मिली / मिला)

(ङ) सयाने होने पर ऐसे प्रश्नों के उत्तर तुम खुद दे _____ । (सकेगा / सकोगे / सके)

2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाविशेषणों को रेखांकित कीजिए।

(क) यह जप बहुत कम समय तक चला।

(ख) राम-रक्षा का पाठ हम कुछ देर ही पढ़ते थे।

(ग) यह नियम भी शीघ्र समाप्त हो गया।

(घ) सत्य की विस्तृत व्याख्या अभी भी हो रही है।

(ङ) हम उनकी बातें धैर्यपूर्वक सुना करते थे।

3. उचित संबंधबोधक शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिए।

(क) मुझमें ईश्वर _____ आस्था थी। (के बारे,)

(ख) सत्य _____ मेरी निकटता बढ़ती गई। (के साथ)

(ग) मैं धर्म _____ में जानना चाहता था। (के लिए)

(घ) मन को समझाने _____ कभी-कभी आधार स्वयं बन जाता है। (के प्रति)

4. निम्नलिखित शब्द-समूहों से सार्थक वाक्य बनाइए।

(क) परिवार थी रंभा की हमारे पुरानी नौकरानी।

_____

(ख) के प्रति खास इस भी थी क्रिया नहीं श्रद्धा।

_____

(ग) वहाँ नहीं था रामायण होता का पाठ।

_____

(घ) हम बाद राजकोट आए कुछ महीनों।

_____

(ङ) संसार की उत्पत्ति उसमें पढ़ी आदि की बातें।

_____

5. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषणों को रेखांकित कीजिए।

(क) मैं वैष्णव संप्रदाय में जन्मा था।

(ख) रंभा हमारे परिवार की पुरानी नौकरानी थी।

(ग) हम शुद्ध उच्चारण के साथ रामनाम का पाठ करते थे।

(घ) आज रामनाम मेरे लिए अमोघ शक्ति है।

(ङ) मैंने वर्तमान प्रथा का विरोध किया।

6. शब्द बनाइए।

(क) पूर्वक – _____ _____ _____ _____

(ख) दायिनी – _____ _____ _____ _____

(ग) अंतर – _____ _____ _____ _____

(घ) युक्त – _____ _____ _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) 'रघुपति राघव राजा राम' भजन कंठस्थ करके सामूहिक रूप से कक्षा में गाइए।

(ख) जागृति फ़िल्म का गीत 'दे दी हमें आज़ादी' चार्ट पर लिखिए।

(ग) 'गांधी फ़िल्म देखिए'।

(घ) बालक मोहनदास करमचंद गांधी और उनकी धाय रंभा के बीच होने वाली एक काल्पनिक वार्तालाप तैयार कीजिए। अब कक्षा के सभी छात्र दो-दो छात्रों के समूह में विभाजित होकर उस बातचीत को संवाद रूप में बोलिए।

(ङ) गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर अपने विचार लिखिए।

(च) गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पढ़िए।

(छ) आई०टी०ओ० नई दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान के शैक्षिक भ्रमण का आयोजन कीजिए।

(ज) गांधी जी की साबरमती आश्रम पर एक रिपोर्ताज लिखिए।

७ यह धरती कितना देती है!

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे।
रुपयों की कलदार मधुर फ़सलें खनकेंगी,
और, फूल-फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला,
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए।

मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल-कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर।
मैं अबोध था मैंने गलत बीज बोए थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से,
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने।
ग्रीष्म तपे,वर्षा झूलीं, शरदें मुस्काईं,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन।

औ' जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर।
मैंने कौतूहलवश आँगन के कोने की,
गीली तक को यों ही उँगली से सहलाकर।
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे,
भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिए हों।

मैं फिर भूल गया था छोटी-सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन।
किंतु एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था-तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से।
देखा आँगन के कोने में कई नवागत,

छोटे-छोट छाते ताने हुए खड़े हैं।
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खेले थे वे नन्ही-प्यारी।
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे,
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिंब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे से।
निर्निमेष, क्षणभर मैं उनको रहा देखता,
सहसा मुझे स्मरण हो आया, कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे, मैंने आँगन में।
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन,
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हे नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।
तब से उनकी राह देखता धीरे-धीरे,
अनगिनत पत्तों से लद, भर गई झाड़ियाँ।
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे,
बेलें फैल गईं बल खा, आँगन में लहरा
और सहारा लेकर बाड़े की पट्टी का,
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर,
मैं अवाक रह गया, वंश कैसे बढ़ता है!
यह धरती कितना देती है! धरती माता!
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को।
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को,
बचपन में छिः! स्वार्थ-लोभवश पैसे बोकर।
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ,
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहरी फसलें
मानवता की–जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ
हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।

–सुमित्रानंदन पंत

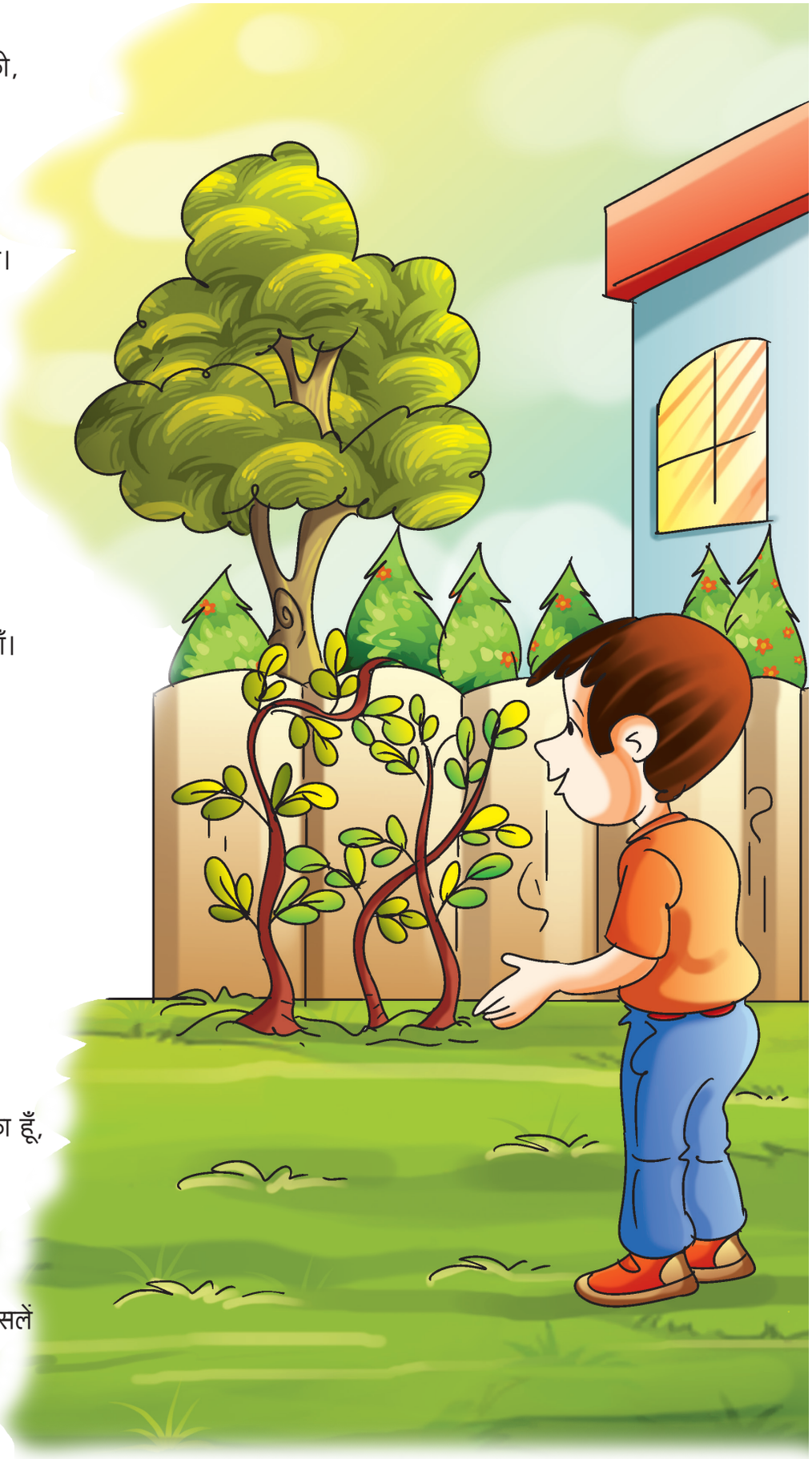

शब्द-अर्थ

छुटपन	—	बचपन	**कलदार**	—	रुपये का सिक्का
बंजर	—	ऊसर	**बंध्या**	—	बंजर
हताश	—	निराश	**बाट जोहना**	—	प्रतीक्षा करना
अपलक	—	एकटक	**पाँवड़े**	—	कालीन
अबोध	—	अनजान	**ममता**	—	अपनत्व
तृष्णा	—	कामना	**अर्धशती**	—	आधी शताब्दी
मधु	—	बसंत ऋतु	**ऊदी**	—	काला
कौतूहलवश	—	जिज्ञासावश	**मणि**	—	बहुमूल्य पत्थर, रत्न
माणिक	—	लाल रंग का रत्न	**संध्या**	—	साँझ, शाम
विमूढ़	—	मोहित	**नवागत**	—	नए-नए आए हुए
विजय पताका	—	जीत का झंडा	**डिंब**	—	अंडा
निर्निमेष	—	बिना पलक झपकाए	**पलटन**	—	सेना
सम्मुख	—	सामने	**चँदोवे**	—	छोटे-छोटे मंडप
प्रसविनी	—	पैदा काने वाली	**वसुधा**	—	पृथ्वी

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवि ने क्या-क्या सोचकर छुटपन में पैसे बोए थे?

(ख) कवि हताश क्यों था?

(ग) कवि ने कौतूहलवश क्या किया?

(घ) धीरे-धीरे छोटे-छोटे पौधे क्या बन गए?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) कवि ने छुटपन में छिपकर क्या बोए थे?

☐ टॉफ़ी ☐ मोती ☐ बीज ☐ पैसे

(ख) बारिश के बाद कवि ने मिट्टी के नीचे किसके बीज दबाए?

☐ गेहूँ के ☐ चने के ☐ राजमा के ☐ सेम के

(ग) कवि क्या देखकर विस्मय से भर गया?

☐ चिड़िया ☐ पौधे ☐ भवन ☐ सरकस

(घ) झाड़ियाँ किससे लद गईं?

☐ फूलों से ☐ काँटों से ☐ पत्तों से ☐ फलों से

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) कवि ने क्यों कहा कि उसने गलत बीज बोए थे?

(ख) कवि को छोटे-छोटे पौधे कैसे लगे?

(ग) कवि क्या देखकर अवाक रह गया?

(घ) कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए–

(i) पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिंब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे से।

(ii) जिससे उगल सके फिर धूल सुनहरी फसलें
मानवता की-जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ,
हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित के उत्तर दीजिए।

(क) मानव ममता में कौन-सा अलंकार है? _____

(ख) 'बाट जोहना', 'गुल हो जाना', 'पंख मारकर उड़ना' के अर्थ बताओ।

_____ _____ _____

(ग) बंजर धरती में कौन-सा विशेषण है? _____

2. गद्य में कर्ता + कर्म + क्रिया के क्रम को ध्यान में रखा जाता है।

पद्य में लय और तुक मिलाई जाती है।

उदाहरण- मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक (पद्य)

मैं दिनों तक हताश होबाट जोहता रहा। (गद्य)

- **दी गई पद्य-पंक्तियों को गद्य में बदलिए।**

(क) उससे हर्ष विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से। _____

(ख) निर्निमेष, क्षणभर मैं उनको रहा देखता। _____

(ग) बीज सेम के बोये थे, मैंने आँगन में। _____

(घ) नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को। _____

(ङ) रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ। _____

3. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए।

(क) पेड़ – _____ _____ _____

(ख) फूल – _____ _____ _____

(ग) धरती – _____ _____ _____

(घ) बादल – _____ _____ _____

(ङ) वषा – _____ _____ _____

(च) संध्या – _____ _____ _____

4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) मोटा – _____ (ख) नीचे – _____

(ग) विजय – _____ (घ) बंजर – _____

(ङ) गलत – _____ (च) सच्ची – _____

(छ) दिन – _____ (ज) धीरे – _____

(झ) छोटे – _____ (ञ) संध्या – _____

5. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) क्षमता – _____

(ख) श्रम – _____

(ग) फ़सल – _____

(घ) मखमली – _____

(ङ) उत्सुक – _____

(च) लोभवश – _____

6. 'ने' का प्रयोंग समझिए।

'ने' कर्ता कारक का चिह्न है। इसका प्रयोग वाक्य में कर्ता के साथ किया जाता है, किंतु कई परिस्थितियों में 'ने' लुप्त होता है। 'ने' कर्ता के साथ कब आता है और कब नहीं, इसके लिए कुछ नियम हैं—

(i) 'ने' सदा सकर्मक क्रिया के साथ भूतकाल में आता है। जैसे– मैंने गलत बीज बोए थे।

(ii) यदि वाक्य में कर्म के साथ 'को' लगा हो तो कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे– मैं उस घटना को भूल गया था।

(ii) अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता जैसे– मैं टहल रहा था।

- **जिन वाक्यों में 'ने' का गलत प्रयोग हुआ है, उनके सामने गलत का चिह्न (✗) लगाइए।**

(क) मैंने पैसे बोए थे। (ख) मैंने अबोध था।

(ग) मैंने विस्मय से देखा।

(घ) मैंने हर्ष विमूढ़ हो उठा।

(ङ) मैंने क्षणभर उनको देखता रहा।

(च) मैंने जो देखा वह अद्‌भुत था।

क्रियात्मक गतिविधि

(क) सब्जियों के पौधे उगाकर अपने घर में एक किचन गार्डन लगाइए।

(ख) पता लगाइए कि कौन-सी सब्ज़ियाँ बेलों पर उगती हैं, कौन-सी पेड़ों पर और कौन-सी धरती के भीतर उगती हैं।

(ग) धरती की उर्वरता कैसे बढ़ाई जा सकती है? इंटरनेट से पता लगाकर एक अनुच्छेद लिखिए।

(घ) यदि सचमुच पैसों के पेड़ उग जाते तो कवि की क्या प्रतिक्रिया होती? सोचकर लिखिए।

(ङ) एक पौधा बोइए और उसे बड़ा होते हुए देखिए।

(च) 'हम जैसा बोते हैं— वैसा ही पाते हैं।' विषय पर एक स्वनिर्मित कविता चार्ट पर लिखिए।

(छ) सुमित्रानंदन पंत को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। उनके काव्य की विशेषताएँ तथा उनके जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

इंटरनेट पर यू-ट्यूब की बढ़ती लोकप्रियता

8

जैसे ही अध्यापक ने कक्ष में प्रवेश किया सभी छात्र शांत हो गए। हाज़िरी लेने के बाद अध्यापक ने कहा, "बच्चों! आप जानते ही हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर हमारे लिए कितना उपयोगी है। सरकारी तथा प्राइवेट कार्यालयों, रेलवे बुकिंग, हवाई-यात्रा बुकिंग, अस्पतालों, अंतरिक्ष उड़ानों इत्यादि में कंप्यूटर इंटरनेट द्वारा अत्यधिक प्रयुक्त होता है, जिससे समय और श्रम की बहुत बचत होती है। इसके अतिरिक्त कंप्यूटर पर इंटरनेट द्वारा मनोरंजन की सामग्री भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। क्या आपमें से कोई बताएगा कि इंटरनेट पर मनोरंजन के कौन-कौन से साधन उपलब्ध हैं?"

मयंक बोला, "सर! देश-विदेश के विभिन्न प्रकार के खेल हैं, जिन्हें हम इंटरनेट से डाउनलोड करके खेल सकते हैं।"

अध्यापक ने कहा, "शाबाश! मिशिका, अब आप बताओ।"

"सर, देश-विदेश की फ़िल्मों को डाउनलोड करके देख सकते हैं।", मिशिका ने जवाब दिया।

अध्यापक ने कहा, "हाँ, परी! अब आप बताओ इंटरनेट के बारे में।"

परी ने कहा, "सर! इंटरनेट पर गूगल और याहू द्वारा कहीं भी ई-मेल भेज सकते हैं। किसी मित्र या रिश्तेदार से चैटिंग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इंटरनेट पर यू-ट्यब द्वारा कोई भी फ़िल्म देख सकते हैं। गीत और संगीत सुन सकते हैं। सर! और तो और यदि मैं टी0वी0 पर कोई सीरियल न देख सकूँ तो उसे भी यू-ट्यूब पर देख लेती हूँ।"

इसके बाद कुनाल ने पूछा, "सर! यह यू-ट्यूब क्या होता है?"

अध्यापक ने बताया, "बेटा! यह एक वेबसाइट है, जो इंटरनेट पर उपलब्ध अन्य वेबसाइटों जैसे-गूगल, याहू इत्यादि की तरह है। इसका प्रयोग करके आज शहर-शहर और गली-गली में आम आदमी भी मनोरंजन का आनंद उठा रहा है।"

उत्सुकतावश अनुज ने प्रश्न किया, "सर! इस यू-ट्यूब को किसने बनाया?"

अध्यापक इस प्रश्न को सुनकर मुस्कुराते हुए बोले, "इसकी शुरुआत कैलिफ़ोर्निया में तीन मित्रों-चैड हार्ली, स्टीव चेन और

जावेद करीम ने फरवरी 2005 में की थी, जिसकी बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए गूगल ने इसे 165 अरब डॉलर (लगभग 8000 करोड़ रुपये) में खरीद लिया। आज आप इंटरनेट पर यू-ट्यूब की वेबसाइट खोलिए, आप अपने ही जैसे अन्य लोगों के अपलोड किए हुए मनोरंजन वीडियो देख सकते हैं और स्वयं भी आस-पास घटित घटनाओं के वीडियो अपलोड कर सकते हैं।''

''क्या हम भी अपने वीडियो यू-ट्यूब पर अपलोड कर सकते हैं?'' आदित्य ने पूछा।

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं। आप सब भी कर सकते हैं। अध्यापक ने उत्तर दिया''

''कैसे?'' सुशांत ने पूछा। अध्यापक ने बताया, ''जिस प्रकार ई-मेल ने विभिन्न लोगों के संदेशों के आदान-प्रदान में क्रांति लाकर एक विश्वव्यापी मंच दिया, उसी प्रकार यू-ट्यूब ने इंटरनेट से जुड़े हर व्यक्ति को, जिसके पास छोटा-सा वीडियो कैमरा या कैमरा फ़ोन है, छोटे परदे का स्टार बनने का मौका दिया है। यदि यह सब आपके पास है तो आप भी वीडियो बनाकर अपने-आपको हीरो या हिरोइन अथवा निर्माता बनने का मौका दे सकते हैं।''

सौरभ के मन में एक शंका उत्पन्न हुई, जिसके समाधान हेतु उसने अध्यापक से पूछा, ''सर! वीडियो फ़ाइल तो आकार में बहुत बड़ी होती है और उसे डाउनलोड करने में बहुत समय लगता है, तो हम उसे कैसे देख पाएँगे?''

अध्यापक ने बताया, ''नहीं बेटा! यू-ट्यूब की यही तो विशेषता है। उसके फ़्लैश वीडियो फॉरमेट का प्रयोग करते हुए वीडियो फ़ाइलों के आकार को छोटा करके स्ट्रीमिंग द्वारा यह सुनिश्चित कर दिया गया है कि पूरा वीडियो डाउनलोड किए बिना ही आप इसे देख सकें। जैसे ही आप वीडियो लिंक पर क्लिक करते हैं, उसके कुछ सेकेंड के अंदर उसका प्रसारण शुरू हो जाता है और उसकी पृष्ठभूमि में वीडियो का शेष हिस्सा स्वतः डाउनलोड होता रहता है। इस पूरी प्रक्रिया में आपको कोई अलग सॉफ़्टवेयर नहीं चाहिए।''

दीपाली चहकते हुए बोली, ''वाह! क्या हम भी अपना बनाया हुआ वीडियो यू-ट्यूब पर अपलोड करें तो उसे भी इतनी जल्दी देख सकते हैं?''

अध्यापक ने कहा, ''हाँ, यही तो इसका जादू है। यू-ट्यूब की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए बड़े-बड़े देशों में इसे टेलीविजन और फ़िल्मों के लिए खतरा माना जाने लगा है। इस पर डाले गए वीडियो देश-विदेश की सीमाओं से मुक्त होकर करोड़ों लोगों द्वारा देखे जा रहे हैं। विशेषतः जो लोगों ने स्वयं बनाए हैं। आम आदमी ही यू-ट्यूब की ताकत है। बहुत-से लोगों ने यू-ट्यूब पर अपनी लोकप्रियता का अलग-अलग ढंग से लाभ उठाकर लाखों रुपये अर्जित किए हैं। वे स्वयं के बनाए संगीत वीडियो के कारण इतने चर्चित हो गए कि हॉलीवुड की दो-तीन फ़िल्में साइन कर लीं। माइकल बकले जैसे कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ताओं ने करोड़ों की कमाई कर डाली। उनका कार्यक्रम 'सेलिब्रिटी चैटर शो' इतना लोकप्रिय हुआ कि यू-ट्यूब पर करोड़ों लोगों द्वारा देखा जा चुका है। अपने यू-ट्यूब पेज पर लगे विज्ञापनों से उन्हें अत्यधिक आमदनी हुई।''

कक्षा का सबसे छोटा छात्र अमन, जो ध्यानपूर्वक अध्यापक की बात सुन रहा था, बोला, ''सर! क्या हम यू-ट्यूब पर किसी भी कार्यक्रम को देख सकते हैं? यह तो टेलीविज़न से बिलकुल अलग है।''

अध्यापक ने कहा, ''हाँ, बिलकुल ठीक कहा। टेलीविज़न पर तो हम निश्चित समय में निश्चित कार्यक्रम देख सकते हैं, परंतु यू-ट्यूब इसके बिलकुल विपरीत है। इस पर कोई भी वीडियो किसी भी समय देख सकते हैं। कभी हम खाली समय में बैठे-बैठे बोर हो रहे हों, तो यू-ट्यूब पर इंटरनेट द्वारा हम कोई भी, किसी के भी द्वारा अपलोड किया मनोरंजक वीडियो देख सकते हैं।''

सभी छात्रों ने यह रोचक जानकारी देने पर अध्यापक का धन्यवाद किया और कहा कि हम भी आज यू-ट्यूब पर मनोरंजक कार्यक्रम देखेंगे तथा आस-पास की ज्ञानवर्धक घटनाओं का वीडियो बनाकर उस पर अपलोड करेंगे।

शब्द-अर्थ

शांत	–	चुप	हाज़िरी	–	उपस्थिति
प्राइवेट	–	निजी	कार्यालय	–	कार्य करने का स्थान
प्रयुक्त	–	प्रयोग किया हुआ	श्रम	–	मेहनत
प्रचुर	–	बहुत अधिक	उपलब्ध	–	प्राप्य
आदान-प्रदान	–	लेन-देन	विश्वव्यापी	–	संपूर्ण विश्व में फैला हुआ
मौका	–	अवसर	समाधान	–	हल
प्रक्रिया	–	विधि	अर्जित	–	एकत्रित
चर्चित	–	प्रसिद्ध	लोकप्रिय	–	जिसे लोग अत्यधिक पसंद करते हैं
आमदनी	–	कमाई	विपरीत	–	उलटा
रोचक	–	मज़ेदार	ज्ञानवर्धक	–	ज्ञान बढ़ाने वाली

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) आज का युग कौन-सा युग है?

(ख) इंटरनेट का उपयोग कहाँ-कहाँ होता है?

(ग) इंटरनेट से किस-किसकी बचत होती है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) हम इंटरनेट पर किसके द्वारा किसी मित्र या रिश्तेदार से चैटिंग कर सकते हैं?

☐ यू-ट्यूब ☐ याहू ☐ पत्र ☐ तार

(ख) इंटरनेट के द्वारा आम आदमी भी किसका आनंद उठा रहा है?

☐ सिलाई ☐ समय ☐ काम ☐ मनोरंजन

(ग) सौरभ के मन में क्या उत्पन्न हुई?

☐ शंका ☐ चिंता ☐ निंदा ☐ चंदा

(घ) यू-ट्यूब पर किसी भी समय क्या देख सकते हैं?

☐ असर ☐ विडियो ☐ कक्षा ☐ नकल

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) इंटरनेट पर मनोरंजन के कौन-कौन से साधन उपलब्ध हैं? विस्तार से बताइए।

(ख) यू-ट्यूब क्या होता है तथा इसे किसने बनाया है?

(ग) क्या हम यू-ट्यूब पर वीडियो अपलोड कर सकते हैं? यदि हाँ, तो कैसे?

(घ) यू-ट्यूब कैसे इतना अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है?

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

(क) निज	–	_____	(ख) युवा	–	_____
(ग) आप	–	_____	(घ) सज्जन	–	_____
(ङ) श्रेष्ठ	–	_____	(च) मित्र	–	_____
(छ) कठोर	–	_____	(ज) गुरु	–	_____

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिए।

(क) यू-ट्यूब के बारे में _____ और जानना चाहती थी। (सौरभ / मिशिका)

(ख) _____ खेल डाउनलोड कर रहा था। (कुनाल / परी)

(ग) _____ साइकिल चलाती हुई आगे निकाल गईं। (लड़के / लड़कियाँ)

(घ) _____ इंटरनेट के बारे में पढ़ा रहे थे। (अध्यापक / अध्यापिका)

(ङ) मेरा _____ घर आया था। (सखी / मित्र)

3. तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था। जैसे- सुंदर (मूलावस्था), सुंदरतर (उत्तरावस्था), सुंदरतम (उत्तमावस्था)

तालिका पूरी कीजिए।

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
_____	प्रियतर	_____
_____	_____	लघुतम
तीव्र	_____	_____
_____	अधिकतर	_____
मधुर	_____	_____

4. दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

जैसे— या, अथवा, तथा, और, यदि, तो इसलिए, अतः, कि, अन्ययथा, क्योंकि आदि।

- **उचित समुच्चयबोधक शब्दों से रिक्त स्थान भरिए।**

(क) यह पुस्तक रोहित की है _____ नमित की?

(ख) वह लौटकर आ गया _____ बारिश हो रही थी।

(ग) देर करोगे _____ मोहित चला जाएगा।

(घ) मयंक नहीं गाएगा _____ मुझे ही गाना होगा।

(ङ) सही उत्तर दो _____ चुप रहो।

5. उचित शब्द जोड़कर शब्द पूरे कीजिए।

क्रम, रिक्त, लोड, व्यापी, भूमि, कर्ता, वेयर, साइट, नेट, प्रिय, वर्धक, विज़न

ज्ञानवर्धक_____	कार्य_____	लोक_____	प्रस्तुते_____
वेब_____	इंटर_____	डाउन_____	टेली_____
विश्व_____	अति_____	पृष्ठ_____	सॉफ़्ट_____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) फ़ोटोशॉप से कंप्यूटर संबंधी कुछ चित्र निकालकर एक सूचना देने वाली चित्रात्मक रिपोर्ताज बनाइए। (https://www.photoshop.com/express/landing.html)

(ख) टिप्पणी लिखिए— (कोई तीन)

(क) विकीपीडिया (ख) अबाउट डॉटकॉम (ग) गूगल आन्सर्स

(घ) माइक्रोसॉफ़्ट (ङ) एनकार्टा

(ग) क्लाउड कंप्यूटिंग के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

(घ) इस पूरे पाठ को अपनी कक्षा के सभी छात्रों को समूहों में बाँटकर संवाद के रूप में लिखिए। अब आपस में ये संवाद बोलकर अभिनय कीजिए।

(ङ) आनेवाले समय में कंप्यूटर का अत्याधुनिक रूप कैसा हो सकता है? कल्पना करके लिखिए।

(च) कंप्यूटर के प्राचीन स्वरूप से लेकर आधुनिक स्वरूप तक के बारे में पता लगाइए व कक्षा मे चर्चा कीजिए।

(छ) विभिन्न सोशल साइट्स के बारे में बताते हुए एक चार्ट बनाइए।

अगर नाक न होती

9

कितना अच्छा होता, अगर नाक न होती। नाक की चिंता में आदमी का जीना मुहाल हो गया है। नाक रखने की खातिर लोग मुकदमेबाजी में बरबाद हो जाते हैं, कर्ज लेकर भी ब्याह-शादी, भात-छोछक आदि में अंधाधुंध खर्च करते हैं। जन्म पर ही नहीं, मृत्यु पर भी दावत खिलाते हैं। पड़ोसी के बच्चों को कॉन्वेंट स्कूल में जाते देख अपने बच्चों को भी मजबूर होकर उसी में दाखिला दिलाते हैं। खरीदने की औकात न होने पर भी महँगी किश्त देकर टी0 वी0, फ्रिज या कूलर आदि ले आते हैं, क्योंकि नाक नीची होने से डरते हैं। लोग अपनी धाक जमाने के लिए नाक ऊँची रखते हैं।

नाक बची रहे, इसीलिए आदमी खाकी वरदीधारियों, आयकर अधिकारियों या उनके दलालों की पत्रम्-पुष्पम् से पूजा करता है, वर्ना पकड़ा जाएगा तो फिर किसी के सामने कैसे नाक बचाएगा?

नाक के कारण आदमी को नाकों चने चबाने पड़ते हैं। नाक बड़ी जल्दी कटती है और प्रायः बिना किसी हथियार के ही कट जाता है। आदमी की अपनी नाक के साथ खानदान की नाक भी जुड़ी रहती है। कभी कोई ऐसी-वैसी बात हो जाए, लड़का घर से रूठ कर भाग जाए, लड़की लव मैरिज कर ले या कोई झूठा-मूठा इलजाम लग जाए, तो अपनी ही नहीं, पूरे खानदान की नाक कट जाती है।

यह भी एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिनकी नाक कट जाती है यानी जो खुद नकटे होते हैं, वे दूसरों को भी नकटा देखना चाहते हैं।

'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' की तरह जुकाम आकर पसर जाता है और नाक में दम कर देता है। नाक तब बहुत बुरी लगती है, जब वह किसी शुभ कार्य के वक्त अनायास छींक मार देती है। वास्तव में नाक और छींक दोनों सहेलियाँ हैं, पर ज्यादातर लोग उन्हें अकेली ही देखना पसंद करते हैं।

एक तरफ लोग छींक की वजह से झींकते हैं, तो कुछ लोग नाक में फुरेरी डालकर या नसवार सूँघकर जान-बूझकर छींकते हैं।

जब आदमी का बुरा वक्त आता है या उसे किसी से कोई काम करवाना हाता है, तब वह सारी हेकड़ी भूल जाता है। एक बार क्या हजार बार नाक रगड़ता

है। जब कोई गलती हो जाती है, तब भी आदमी को अपनी नाक रगड़नी पड़ती है। जिन लोगों में बदले या ईर्ष्या की भावना होती है, वे भी मौके की तलाश में रहते हैं कि कब, कैसे किसी की नाक रगड़वा दें।

जिंदगी में हँसना-गाना ही नहीं, रोना भी पड़ता है। हँसने की बात छोड़िए, पर रोते समय आँखों में आँसू आते हैं, तो नाक भी उनका साथ निभाती है। बहते आँसुओं का पोंछना कोई बुरी बात नहीं, लेकिन नाक पोंछने से तो रोने का सारा मजा ही किरकिरा हो जाता है। करुण रस में बरबस वीभत्स रस आ टपकता है। नारी तो नाक पोंछने का काम साड़ी के पल्लू से चला सकती है, पर बेचारे उस पैंटधारी मर्द का क्या हाल होगा, जिसे जेब में रुमाल रखने का खयाल ही न रहा हो।

गुस्सा भी बहुत-से लोगों की नाक पर रखा रहता है। उनसे जरा कुछ कहा नहीं कि बिना बात नाक फुला लेते हैं।

नाक में जितनी कमियाँ या बुराइयाँ हैं, उससे ज्यादा अच्छाइयाँ हैं इसलिए जिनकी नाक नहीं होती, वे भी नाक लगाते हैं, भले ही इस बात पर कोई दूसरा नाक-भौंह सिकोड़े तो सिकोड़ता रहे।

नाक रहना बहुत जरूरी है। वैसे भी और चेहरे पर भी। नाक चाहे सारस जैसी लंबी हो या चिलगोजे जैसी छोटी, चोथ जैसी चपटी हो अथवा पकौड़े जैसी मोटी, लेकिन होनी जरूर चाहिए। जिसके नाक न हो, उसकी कोई सूरत देखना भी पसंद न करेगा, बल्कि देखकर डरेगा। भला बिना छज्जे के मकान का फ्रंट शोभा देता है?

नाक हो और सुंदर हो, तो सोने में सुहागा है इसीलिए कवियों ने नख-शिख-वर्णन के अंतर्गत और फुटकर रूप में भी नाक का काफी वर्णन किया है। उसे सोने की हीरे-मोती जड़ी नथ, नथूनी, लौंग, बुलाक आदि से सजाया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए बहुत-सी उपमाएँ दी गई हैं। नाक को चंपे की कली, तिल के सुगंधित फूल से निर्मित और तलवार की धार से बढ़कर बताया गया है। यहाँ तक तो ठीक है, पर एक बात समझ में नही आती कि अधिकांश कवियों ने नाक की उपमा तोते की चोंच से क्यों दी है? हम क्लास में जब किसी सुंदरी-सुमुखी नायिका की नाक की उपमा तोते की चोंच से पढ़ाते हैं, तो हमारे हाथ के तोते उड़ जाते हैं, मन में अजीब से भाव उमड़ आते हैं। सोचने की बात है कि ऐसी नाक किसी चेहरे पर चार चाँद लगाएगी या दीवार से ठुके हुए उलटे हुक-सी नजर आएगी?

उपन्यास-कहानियों में सुंदर नाक को 'सुतवाँ' नाक कहा जाता है। ऊँची और दीर्घ नाक की तुलना कुल्हाड़ी से की जाती है। छोटी और सुकोमल नासिका को भेंड़ की-सी नाक की संज्ञा दी जाती है।

नाक शरीर का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है। अगर चित्त लेटकर देखें, तो यह बात अपने आप सिद्ध हो जाएगी कि हाथ, पाँव, मुँह, कान, आँख आदि में सबसे ऊँचा स्थान नाक को ही प्राप्त है। अगर आँख आ जाए या चली जाए, तो ऐसी स्थिति में काला चश्मा लगाया जा सकता है। कान कट-फट जाए तो उसे कंटोपा पहनकर छिपाया जा सकता है, लेकिन अगर कहीं नाक कट जाए, तो चेहरा रेगिस्तान की तरह एकदम सपाट अथवा चक्की का-सा पाट नजर आएगा। हालाँकि प्लास्टिक सर्जरी द्वारा उसका इलाज हो सकता है, परंतु वह इतना महँगा पड़ेगा कि बड़े-से-बड़े नक्कूशाह को भी नानी याद आ जाएगी।

कुछ लोग नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देते। बहुत-से ऐसे लोग भी होते हैं कि जब वे कुंभकर्ण की भाँति सोते हैं, तो उनकी नाक नक्कारे-सी बजती है। कई लोगों की नाक के नीचे कुछ भी होता रहे, पर वे दीन-दुनिया से बेखबर बने रहते हैं। ऐसे लोगों की भी नहीं जो दूसरों को नाक नचाते हैं। किसी भी नाक पर दे मारना भी कई लोग अपनी शान समझते हैं। कुछ लोग सचमुच नाकदार होते नहीं, पर बनते हैं। खैर!! जो भी हो, नाक रहने में भी भलाई है। नाक न होती, तो खुशबू और बदबू में क्या अंतर रह जाता? नाक के अभाव में चंदन, कपूर, इत्र-फुलेले आदि सब बेमानी हो जाते। असली हींग और देसी घी की पहचान कैसे होती?

आँखें हमेशा से लड़ती आई हैं। लड़ना-लड़ाना उनका स्वभाव है। किसी की आँखें किसी से लड़े या मिलकर चार हो जाएँ, तो कोई हर्ज नहीं, मगर वे आपस में ही लड़ बैठें, यह कहाँ तक ठीक है? नाक ही तो है, जो बीच में पड़कर उन्हें लड़ने से रोकती है, अन्यथा आदमी उनके परस्पर लड़ने से आँखों से ही हाथ धो बैठता।

वैसे भी अब लोगों की नजरों में फर्क आता जा रहा है। कहीं नजर उठ रही है, कहीं गिर रही है, कहीं गड़ रही है और इसी के साथ चश्मों की जरूरत भी बढ़ रही है। चश्मा चाहे नजर बढ़ाने का हो या नजरें चुराने का, चाहे धूप से बचाने का हो, चाहे किसी रूप को छिपकर निहारने का, अगर नाक न होती, तो बताइए, यह चश्मा कहाँ ठहरता? नाक ही तो चश्मे का अच्छा-खासा स्टैंड है।

नाक के कारण ही सीता का हरण और रावण का मरण हुआ। अगर सूर्पनखा की नाक न कटती, तो 'रामायण' की रचना कैसे होती? 'महाभारत' का आधार भी द्रौपदी की नाक ही थी, जो अत्यंत खतरनाक सिद्ध हुई।

सिर और मुँह के बीच, नाक कटलेट की भाँति रहती

है, पर हकीकत यह है कि इसे खाने की नौबत नहीं आती। लोग जब चाहे किसी का सिर खा सकते हैं, दिमाग और खोपड़ी चाट सकते हैं, पर नाक के साथ ऐसा कुछ नहीं हो सकता। अच्छे-अच्छे चटोरों को भी यहाँ मुँह की खानी पड़ती है।

नाक के और भी बहुत से फायदे हैं। उच्छ्वास और निःश्वास का कार्य मुँह से किया जा सकता है, पर प्राणों का आधार श्वास है और श्वास लेने का साधन नाक ही है। नाक की गड़बड़ी से आदमी नकियाने लगता है, वह नकसुरा कहलाता है।

नाक हीटर का काम भी करती है। बाहर की ठंडी हवा को गरम करके अंदर पहुँचाती है और ठंड लगने से बचाती है। आजकल पर्यावरण-प्रदूषण जोरों पर है। वातावरण में व्याप्त प्रदूषण को फेफड़ों तक जाने से नाक ही रोकती है। नाक में उगे बाल छन्ने और झाड़ू का काम करते हैं।

बहुत-से लोग मतलब साधने के लिए अपने बॉस की नाक के बाल बन जाते हैं।

जिस प्रकार सिंगट्टा दिखाने, आँख दिखाने, दाँत दिखाने, पीठ दिखाने आदि के मुहावरे प्रचलित हैं, दुर्भाग्य कहें या सौभाग्य नाक दिखाने का कोई मुहावरा नहीं है। हाँ, यदि नाक बीमार पड़ जाए, तो कोई कितना की नक्कू क्यों न हो, उसे भी मजबूर होकर नाक दिखाने के लिए किसी नाक वाले डॉक्टर की शरण में भागना पड़ता है।

—गोपाल बाबू शर्मा

लेखक परिचय

अपनी रचनाओं द्वारा लेखक गोपाल बाबू शर्मा ने हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी भाषा प्रसंग के अनुरूप सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण होती है। इन्होंने 'चलते-चलते', 'सब चलता है लोकतंत्र में', 'लोक जीवन में नारी विमर्श', 'सास बिना सब सूना' जैसी लोकप्रिय कृतियों की रचना की है।

शब्द-अर्थ

मुहाल	—	कठिन	**बरबाद**	—	नष्ट
कर्ज	—	उधार	**भात**	—	विवाह के अवसर पर मामा की ओर से कन्या को दी जाने वाली भेंट
औकात	—	हैसियत, सामर्थ्य	**पत्रम-पुष्पम्**	—	फूल पत्ते, तुच्छ–सी लगने वाली भेंट
नसवार	—	सुँघनी	**खानदान**	—	परिवार
इलजाम	—	दोष	**हेकड़ी**	—	अकड़
बरबस	—	जबरदस्ती	**चोथ**	—	गाय, भैंस का गोबर
उपमा देना	—	तुलना करना	**हुक-सी**	—	कील के समान
फ्रंट	—	आगे का भाग	**सुतवाँ**	—	लंबी–पतली
नक्कूशाह	—	अपने को बहुत बड़ा समझने वाला	**कंटोपा**	—	कान तक ढकने वाली टोपी
कुंभकर्ण	—	रावण का भाई, जो छह महीने जागता था और छह महीने सोता था	**परस्पर**	—	आपस में
हकीकत	—	वास्तविकता	**फायदे**	—	लाभ

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) हमारे शरीर का कौन-सा अंग हमारी इज्जत का प्रतीक है?

(ख) बिना किसी हथियार के कौन-सा अंग कट जाता है?

(ग) लेखक ने किस मनोवैज्ञानिक सत्य का उल्लेख किया है?

(घ) लेखक ने नाक की सहेली किसे बताया है?

(ङ) उपन्यासों और कहानियों में सुंदर नाक को क्या कहा गया है?

(च) नाक आँखों के लिए किस प्रकार उपयोगी है?

लिखित

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) नाक में उगे बाल किसका काम करते हैं?

☐ श्वास लेने का ☐ छन्ने और झाड़ू का

☐ बाहर की हवा को अंदर पहुँचाने का

(ख) नाक की गड़बड़ी से आदमी क्या कहलाने लगता है?

☐ नक्कूशाह ☐ नकसुरा ☐ नकटा

(ग) जब आदमी का बुरा वक्त आता है या उसे किसी से काम करवाना होता है, तो वह क्या भूल जाता है?

☐ नाक रगड़ना ☐ पीठ दिखाना ☐ सारी हेकड़ी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) यदि नाक न होती, तो आदमी का जीवन कैसा होता?

(ख) नाक बचाने के लिए आदमी वरदीधारियों, आयकर अधिकारियों के साथ कैसा व्यवहार करता है?

(ग) नाक कब बुरी लगती है?

(घ) करुण रस में बरबस वीभत्स रस कैसे आ टपकता है?

(ङ) चश्में की जरूरत क्यों पड़ती है?

(च) नाक के कारण किन दो महान ग्रंथों की रचना हुई?

(छ) नाक नीची होने के डर से लोग कैसा आचरण करते हैं?

(ज) नाक का रहना बहुत जरूरी क्यों है?

(झ) मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए कौन-कौन सी उपमाएँ दी गई हैं?

(ञ) नाक हमें बीमारियों से किस प्रकार बचाती है?

(ट) 'रामायण' और 'महाभारत' की कथा में नाक का क्या महत्व बताया गया है?

भाषा-ज्ञान

1. इस पाठ में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया गया है। शब्दों की उत्पत्ति के आधार पर ही ये भेद किए जाते हैं–

(क) तत्सम शब्द- जो शब्द संस्कृत भाषा में ज्यों-के-त्यों हिंदी में आ गए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहा जाता है। जैसे- पुष्प, पत्र आदि।

(ख) तद्भव शब्द- जो शब्द थोड़े परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे- नाक, माथा, हाथ, आँख आदि।

(ग) देशज शब्द- क्षेत्रीय भाषाओं या स्थानीय बोलियों में प्रयुक्त होने वाले वे शब्द, जो हिंदी शब्द भंडार में शामिल किए गए हैं, उन्हें देशज (देश + ज = देश में जन्मे) शब्द कहते हैं। जैसे- पगड़ी, भात-छोछक आदि।

(घ) विदेशी शब्द- मुगल, तुर्की, पुर्तगाली और अंग्रेजी के संपर्क में आने के कारण उनकी भाषा के शब्द, जो हिंदी में आत्मसात कर लिए गए, विदेशी शब्द कहलाते हैं। जैसे- स्कूल, कॉन्वेंट, औकात, मुहाल आदि।

- **नीचे लिखे शब्दों को उचित शीर्षक के सामने लिखिए-**

करुण, ब्याह, भात, छोछक, मुकदमा, औकात, सुमुखी, नाक

तत्सम शब्द _____ _____

तद्भव शब्द _____ _____

देशज शब्द _____ _____

विदेशी शब्द _____ _____

2. (क) विलोम शब्द लिखिए-

अनुकूल × _____ असली × _____

आधार × _____ सुगंध × _____

दुर्भाग्य × _____ खुशबू × _____

आंतरिक × _____ दूर × _____

(ख) दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

घमंड _____ _____

हाथ _____ _____

आँख _____ _____

अवगुण _____ _____

(ग) जिन शब्दों का प्रयोग एक से अधिक अर्थों के लिए किया जाता है, उन्हें 'अनेकार्थक शब्द' कहते हैं।

जैसे– (i) अंक → संख्या, गोद

(ii) फल → परिणाम, खाने वाले फल

निम्नलिखित शब्दों के दो भिन्न अर्थ लिखिए-

(i) हार _____ _____

(ii) कर _____ _____

(iii) अंग _____ _____

(iv) वर _____ _____

3. (क) जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ से अलग कोई विशेष अर्थ देते हैं, वे मुहावरे कहलाते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा का सौंदर्य तथा उसका लचीलापन और अधिक बढ़ जाता है।

जैसे- आँखों का तारा होना अर्थात् अत्यधिक प्रिय होना।

रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित मुहावरों द्वारा कीजिए-

(क) इतनी सारी मिठाइयाँ देखकर मेरे _____ आ गया।

(ख) अध्यापक के बेटे का फेल हो जाने का मतलब है _____ अँधेरा।

(ग) जब किसी आदमी को कोई काम दूसरे से करवाना पड़ता है, तो वह सारी _____ भूल जाता है।

(घ) जब सुनीता का झूठ पकड़ा गया, तो _____ हो गई।

(ख) लोकोक्तियाँ जन-जीवन में प्रचलित ऐसी उक्तियाँ हैं, जो श्रोता के मन पर सीधे असर करती हैं। ये साधारण वाक्यांशों में किसी विशेष अर्थ को प्रकट करती हैं।

मुहावरों और लोकोक्तियों में प्रमुख अंतर यह है कि मुहावरे वाक्य के बीच में प्रयोग किए जाते हैं, जबकि लोकोक्तियाँ वाक्य की समाप्ति पर निष्कर्ष रूप में प्रयोग की जाती हैं।

जैसे- (i) नाच न जाने आँगन टेढ़ा- अपनी कमी या दोष दूसरों पर डालना

(ii) आम के आम गुठलियों के दाम- दोहरा लाभ होना

निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए-

	अर्थ
(क) अधजल गगरी छलकत जाए	_____
(ख) मान न मान मैं तेरा मेहमान	_____
(ग) अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत	_____
(घ) अंधेर नगरी चौपट राजा	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **गोपाल प्रसाद व्यास की हास्य-कविता 'आराम करो' परियोजना पुस्तिका में संकलित कीजिए।**
- **प्रेमचंद की कहानी 'बड़े भाई साहब' पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से पढ़िए। 'मुहावरों के प्रयोग में प्रेमचंद सिद्ध हस्त थे'-इसे समझने की कोशिश कीजिए।**

स्वास्थ्य ही जीवन है 10

अहमद आज घर पर बीमार पड़ा है। उसे कई दिन से बुखार आ रहा है। उसके पिताजी ने उसे बहुत समझाया था कि बाजार की गंदी मिठाई, जिस पर मक्खियाँ बैठतीं है। मत खाया करो, पर अहमद नहीं माना। परिणाम यह हुआ कि आज जब उसके विद्यालय मे वार्षिक खेल-कूद संबंधी कार्यक्रम हो रहे हैं, तब वह घर पर पड़ा है। आज उसकी कक्षा के विद्यार्थियों का आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ कबड्डी का मैच है। यदि अहमद अस्वस्थ न होता, तो वह अपनी कक्षा की ओर से खेलता। कितनी प्रसन्नता होती उसे, जब उसके खेल की सब लोग प्रशंसा करते। पर बीमार लोग भला कहीं कबड्डी का मैच खेल सकते हैं?

किसी ने सच कहा है कि तंदुरुस्ती हजार नियामत है। यदि हम स्वस्थ रहते हैं, तो हमारा हर क्षण उल्लास से भरा होता है। हम सदा हँसमुख रहते हैं। रात को हमें गहरी नींद आती है और सुबह उठने पर मन उमंगों से भरा रहता है। इसके विपरीत, यदि हम अस्वस्थ रहते हैं, तो हमें चारों ओर उदासी ही उदासी नजर आती है। हमारा स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और मन अनेक प्रकार की चिंताओं से घिरा रहता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है, इसलिए मन की प्रसन्नता के लिए शरीर का स्वस्थ होना बहुत आवश्यक है।

आइए, अब देखें कि किन-किन बातों का ध्यान रखकर हम स्वस्थ रह सकते हैं। स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक आवश्यक चीज सफाई है। दिनभर तरह-तरह के स्थानों पर आने-जाने और काम करते रहने से हमारे शरीर पर धूल और मैल जमा हो जाती हैं। हमारे शरीर से जो पसीना निकलता है, उससे भी मैल जमा होता है। पसीने का पानी तो उड़कर सूख जाता है, पर मैल त्वचा के उन छिद्रों पर जम जाता है, जिनसे पसीना निकलता है। यदि प्रतिदिन अच्छी तरह स्नान द्वारा इस मैल को हटा न दिया जाए, तो पसीना खुलकर

नहीं निकल सकेगा। शरीर के अंदर की गंदगी अंदर ही रहकर तरह-तरह के रोग पैदा करने लगेगी। स्वस्थ रहने के लिए शरीर की नियमित सफाई बहुत की आवश्यक है। इसके लिए हमें प्रतिदिन खुरदरे कपड़े से शरीर रगड़-रगड़कर नहाना चाहिए। सप्ताह मे दो-तीन बार साबुन लगाकर नहाना अच्छा होता है। गर्मियों में पसीना अधिक निकलता है, इसलिए सुबह-शाम दोनों समय नहाना चाहिए।

शरीर की सफाई के साथ ही आवश्यक है कि हम कपड़े भी साफ पहनें। गंदे कपड़ों में तरह-तरह की बीमारियों के कीटाणु जमा हो सकते हैं। हमें दूसरों के उतारे हुए कपड़े बिना धुले नहीं पहनने चाहिए। इससे दूसरों के रोग हमें भी लग जाते हैं। इसी कारण दूसरों के तौलिए से भी हमें अपना शरीर नहीं पोंछना चाहिए।

घर की सफाई का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। जिस घर की प्रतिदिन नियम से सफाई नहीं की जाएगी, वहाँ मकड़ियाँ अपने जाल बना लेंगी। उन जालों में और फर्श की धूल मे तरह-तरह के रोगों की कीटाणु पल सकते है। घर में प्रतिदिन झाड़ू देना तथा खिड़कियों और दरवाजों आदि को साफ करना आवश्यक है। साथ ही घर के अंदर और बाहर की नालियाँ भी सदा साफ रखनी चाहिए। यदि हम आस-पास के स्थान को साफ नहीं रखेंगे, तो वहाँ की गंदगी अवश्य ही हमारे घरों में बीमारी फैलाएगी। इसलिए हमें घर के साथ गली और मुहल्ले की सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए ताजी हवा और धूप बहुत आवश्यक है। हमें अपने मकान की खिड़कियाँ और रोशनदान यथासंभव खुले रहने चाहिए ताकि उनसे ताजी हवा अंदर आ सके और गंदी हवा बाहर जा सके। खिड़कियाँ और रोशनदान बंद रखने से दूषित हवा कमरे में ही भरी रहती है। उसी में बार-बार साँस लेने से वह

और दूषित होती चली जाती है। ऐसी हवा फेफड़ों में जाकर हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती है। सर्दियों में हमें धूप का भी यथासंभव सेवन करना चाहिए। इससे हमें विटामिन 'डी' प्राप्त होता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है।

स्वास्थ्य के लिए पानी की शुद्धता भी आवश्यक है। पानी हमें नगरपालिका के नलों से मिलता है। गाँव में पानी कुएँ से मिलता है। कुएँ की जगत खूब ऊँची हो ताकि कुएँ में धूल और कूड़ा न जा सके। तालाब का पानी तो कभी नहीं पीना चाहिए। अशुद्ध जल पीने से बहुत-सी बीमारियाँ हो जाती हैं। यदि हमें पानी की शुद्धता के बारे में जरा भी संदेह हो, तो उसे पीने से पहले उबाल लेना चाहिए।

हवा और पानी के साथ हमारे भोजन का भी स्वच्छ होना जरूरी है। हमें बाजार की ऐसी कोई भी चीज नहीं खानी चाहिए, जिस पर धूल पड़ी हो या मक्खियाँ बैठी हों। बहुत-से खोमचे वाले ऐसी गंदी चीजें बेचते हैं, जिन्हें खाकर रोगी बन जाने की संभावना रहती है। समझदार बच्चे ऐसी चीजें कभी नहीं खाते।

स्वादिष्ट होने के साथ-साथ भोजन पौष्टिक भी होना चाहिए। जंक फूड खा लेने से शरीर को पौष्टिक तत्व नहीं मिल पाते। संतुलित भोजन में रोटी और दाल के अलावा हरी सब्जी, फल और दूध का होना आवश्यक है, परंतु यह आवश्यक नहीं कि ये चीजें महँगी ही हों। मूली, गाजर और पालक जैसी सस्ती सब्जियाँ खाकर भी अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग शाकाहारी होते हैं, उन्हें दूध और दही अधिक मात्रा में खाने चाहिए। शरीर की वृद्धि के लिए बच्चों का दूध पीना आवश्यक है। दूध अपने-आप में पूर्ण भोजन है। इस अकेले भोज्य पदार्थ में वे सभी तत्व मिल जाते है।, जो शरीर के स्वास्थ्य और पोषण के लिए आवश्यक हैं। इसीलिए प्राचीन समय में कहा जाता था- "दुग्धभोजनम् अमृतम्" अर्थात् दूध का भोजन अमृत के समान है।

अच्छी तंदुरुस्ती के लिए उचित व्यायाम भी जरूरी है। व्यायाम से मांसपेशियाँ बढ़ती और मजबूत होती हैं। अंग-प्रत्यंग में शक्ति और स्फूर्ति आती है। दंड-बैठक, कुश्ती आदि अपने देश के प्राचीन व्यायाम हैं।

शीर्षासन, सर्वांगासन तथा सूर्य-नमस्कार आदि योग संबंधी व्यायाम स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। खेलों से भी अच्छा व्यायाम हो जाता है। इसी प्रकार तैरना भी एक बहुत अच्छा व्यायाम है, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ शरीर के सभी अंगों की कसरत भी हो जाती है। खुली हवा मे टहलना भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी है।

प्रसन्न रहना और हँसना स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। चिंता और क्रोध का बुरा प्रभाव मन पर ही नहीं, शरीर पर भी पड़ता है। हमें कठिन विपत्ति के समय भी प्रसन्नचित व हँसमुख रहना चाहिए। कहावत है कि ठहाका मारकर हँसिए और दीर्घजीवी बनिए।

शब्द-अर्थ

परिणाम — नतीजा
उल्लास — प्रसन्नता
नियमित — नियमपूर्वक या नियम से
खोमचेवाले — फेरी लगाकर सौदा बेचने वाले
व्यायाम — कसरत
मन मसोसकर — मन मारकर
गाढ़ी नींद — गहरी नींद
यथासंभव — जितना संभव हो सके
पोषक — पुष्टिकारक, शरीर के विकास के लिए आवश्यक पौष्टिक तत्व
विपत्ति — मुसीबत

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) अहमद विद्यालय क्यों नहीं गया?

(ख) उसके विद्यालय में क्या हो रहा था?

(ग) हमें गाढ़ी नींद कब आती है?

(घ) हमारा स्वभाव कब चिड़चिड़ा हो जाता है?

(ङ) घर में ताज़ी हवा और धूप आने के लिए क्या प्रबंध करना चाहिए?

(च) अशुद्ध जल पीने से क्या होता है।

लिखित

1. नीचे लिखे पाठांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

स्वादिष्ट होने के साथ-साथ भोजन पौष्टिक भी होना चाहिए। जंक फूड खा लेने से शरीर को पौष्टिक तत्व नहीं मिल पाते। संतुलित भोजन में रोटी और दाल के अलावा हरी सब्जी, फल और दूध का होना आवश्यक है, परंतु यह आवश्यक नहीं कि ये चीजें महँगी ही हों। मूली, गाजर और पालक जैसी सस्ती सब्जियाँ खाकर भी अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग शाकाहारी होते हैं, उन्हें दूध और दही अधिक मात्रा में खाने चाहिए। शरीर की वृद्धि के लिए बच्चों का दूध पीना बहुत आवश्यक है। दूध अपने-आप में पूर्ण भोजन है। इस अकेले भोज्य पदार्थ में वे सभी तत्व मिल जाते है, जो शरीर के स्वास्थ्य और पोषण के लिए आवश्यक हैं।

(क) जंक फूड खाने से क्या हानि होती है?

(ख) अच्छे संतुलित भोजन में किन चीजों का होना आवश्यक है?

(ग) शाकाहारी लोगों को कौन-कौन सी चीजें अधिक खानी चाहिए?

(घ) क्या महँगे खाद्य पदार्थों से ही शरीर को पौष्टिक तत्व मिलते हैं?

(ङ) बच्चों के लिए दूध पीना क्यों आवश्यक है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अहमद के पिता जी ने उसे क्या समझाया था?

(ख) अगर अहमद बीमार न होता तो क्या करता?

(ग) किन-किन बातों का ध्यान रखकर हम स्वस्थ रह सकते हैं?

(घ) गंदे कपड़े या दूसरों के कपड़े पहनने से क्या हानि होती है?

(ङ) सूर्य के प्रकाश से हमें क्या प्राप्त होता है?

(च) व्यायाम करने से क्या लाभ होता है?

(छ) स्वस्थ व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं?

(ज) अस्वस्थ व्यक्ति की दशा का वर्णन कीजिए।

(झ) प्रतिदिन स्नान करना क्यों आवश्यक है?

(ञ) 'साफ-सुथरे घर में ही लोग स्वस्थ रहते हैं।' इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

(ट) शुद्ध हवा और धूप का हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ठ) ''दुग्धभोजनम् अमृतम्'' का आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. (क) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-

(i)	विदयालय	=	विद्या	+	आलय	(v)	बाल्यावस्था	=	_____ + _____
(ii)	शाकाहारी	=	_____	+	_____	(vi)	अत्यधिक	=	_____ + _____
(iii)	सर्वांगासन	=	_____	+	_____	(vii)	स्वच्छ	=	_____ + _____
(iv)	विद्यार्थी	=	_____	+	_____	(viii)	सदैव	=	_____ + _____

(ख) मूल शब्द से प्रत्यय को अलग करके लिखिए-

(i)	खोमचेवाले	=	_____	+	_____	(v)	शुद्धता	=	_____ + _____
(ii)	तंदुरुस्ती	=	_____	+	_____	(vi)	समझदार	=	_____ + _____
(iii)	महत्वपूर्ण	=	_____	+	_____	(vii)	पनिहारा	=	_____ + _____
(iv)	रोशनदान	=	_____	+	_____	(viii)	उपयोगी	=	_____ + _____

(ग) मूल शब्द से उपसर्ग अलग करके लिखिए-

(i)	_____	+	_____	=	संभावना	(v)	_____	+	_____ = अस्पष्ट
(ii)	_____	+	_____	=	प्रतिदिन	(vi)	_____	+	_____ = लाइलाज
(iii)	_____	+	_____	=	यथासंभव	(vii)	_____	+	_____ = दरअसल
(iv)	_____	+	_____	=	व्यायाम	(viii)	_____	+	_____ = दुर्दशा

2. लोकोक्तियाँ— लोक जीवन के अनुभवों से जन्म लेने वाले लोकोक्तियाँ वास्तव में वाक्यांश न होकर पूर्ण वाक्य होती हैं। लोकोक्तियों में वाक्य के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है। इनके प्रयोग से पूर्व अक्सर इस तरह के वाक्य प्रयुक्त किए जाते हैं— 'किसी ने ठीक ही कहा है' या 'यह तो वही बात हुई कि' आदि।

- **निम्नलिखित लोकोक्तियों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-**

(i) तंदुरुस्ती हजार नियामत है। = _____

_____

(ii) ठहाका मारकर हँसिए और दीर्घजीवी बनिए। = _____

_____

(iii) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। = _____

_____

(iv) न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। = ______________________

(v) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। = ______________________

3. 'र' के विभिन्न रूप

(क) 'अ' सहित 'र' अन्य व्यंजनों की तरह संपूर्ण व्यंजन होता है।

जैसे- राज, रोग, शरीर आदि।

(ख) 'अ' सहित 'र' आगे आने वाले वर्ण के ऊपर (र्) लगाया जाता है और उस वर्ण के पहले बोला जाता है।

जैसे- धर्म, कर्म आदि।

(ग) 'अ' सहित 'र' पाई वाले स्वर रहित व्यंजनों के साथ (्र) इस प्रकार लगाया जाता है।

जैसे- क्रम, भ्रम, ग्रहण आदि।

(घ) 'अ' सहित 'र' का प्रयोग 'ट वर्ग' के स्वर रहित व्यंजनों के साथ (्र) इस प्रकार किया जाता है।

जैसे- ट्राम, राष्ट्र, ड्रम आदि।

- **निम्नलिखित शब्दों में 'र' के उचित स्वरूप का प्रयोग करते हुए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए-**

(i)	आशीवाद	= ________	(v)	राष्ट्रीय	= ________
(ii)	दुगति	= ________	(vi)	उपयुक्त	= ________
(iii)	बाहमण	= ________	(vii)	श्रीमान	= ________
(iv)	धामिक	= ________	(viii)	डम	= ________

4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए तथा 'और' के विभिन्न प्रयोग को समझिए-

(i)	आप और साहिल मेरे घर आइएगा।	समुच्चयबोधक अव्यय
(ii)	क्या आप और बोलेंगे?	परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
(iii)	और कौन आशा है?	सर्वनाम
(iv)	आप और चाय पीएँगे?	परिमाणवाचक विशेषण

5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-

(क) ज्यादा खाने से कोई स्वस्थ नहीं होता।

(i) ज्यादा = ______________________

(ii) कोई = ______________________

(ख) जंक फूड स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(i) जंक फूड = ______________________

(ii) स्वास्थ्य = ______________________

(ग) कुछ बच्चे व्यायाम कर रहे हैं।

(i) कुछ = ______________________

(ii) कर रहे हैं = _____

(घ) मक्खियाँ बीमारी फैलाती हैं।

(i) मक्खियाँ = _____

(ii) बीमारी = _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **संतुलित आहार न लेने से कौन-कौन सी बीमारियाँ होती हैं? इस विषय मे कक्षा में सामूहिक चर्चा करें।**
- **लाइफबॉय या डेटॉल साबुन के विषय में आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।**
- **कक्षा में आशु-संभाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए। इसके लिए नीचे दिए गए शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक का चुनाव कीजिए-**

  (क) लालच बुरी बला है।

  (ख) अच्छे स्वास्थ्य के लिए घर-बाहर की सफाई जरूरी है।

  (ग) शरीर और बुद्धि के विकास के लिए खूब दूध पिओ।
- **कंप्यूटर अथवा समाचार पत्रों की सहायता से 21 जून, 2015 को आयोजित 'योग दिवस' के चित्र और संबंधित लेख संकलित कीजिए। उन्हें अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाइए।**

चलना हमारा काम है

11

गति प्रबल पैरों में भरी,
फिर क्यों रहूँ दर-दर खड़ा,
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा।
जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है।
चलना हमारा काम है।

कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया
कुछ बोझ अपना बँट गया,
अच्छा हुआ तुम मिल गए
कुछ रास्ता ही कट गया।
क्या राह में परिचय कहूँ, राही हमारा नाम है।
चलना हमारा काम है।

जीवन अपूर्ण लिए हुए,
पाता कभी, खोता कभी
आशा-निराशा से घिरा,
हँसता कभी, रोता कभी।
गति-मति न हो अवरुद्ध, इसका ध्यान आठों याम है।
चलना हमारा काम है।

इस विशद विश्व-प्रवाह में
किसको नहीं बहना पड़ा
सुख-दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा।

फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ, मुझ पर विधाता वाम है।
चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा।
पर हो निराशा क्यों मुझे? जीवन इसी का नाम है।
चलना हमारा काम है।

कुछ साथ में चलते रहे
कुछ बीच ही से फिर गए।
पर गति न जीवन की रुकी
जो गिर गए सो गिर गए।
चलता रहे हरदम, उसी की सफलता
अभिराम है।
चलना हमारा काम है।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन'

कवि परिचय

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त, 1915 को उत्तर प्रदेश के झगरपुर, उन्नाव जिले में हुआ था। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर वे आजीवन साहित्य साधना में लगे रहे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ जीवन के गान से संबंधित हैं। उनकी मृत्यु 27 नवंबर, 2002 को मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में हुई थी। उनकी मृत्यु पर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि "वे केवल सशक्त कवि ही नहीं, अपितु सच्चे युगद्रष्टा थे।"

शब्द-अर्थ

गति	—	रफ्तार, चाल	**मंजिल**	—	लक्ष्य
विराम	—	विश्राम	**राही**	—	मार्ग पर चलने वाला
अवरुद्ध	—	रुका हुआ	**आठों याम**	—	आठों प्रहर
दर-दर	—	दरवाजे-दरवाजे (स्थान-स्थान पर)	**विशद**	—	बड़ा
वाम	—	विरुद्ध	**फिर गए**	—	लौट गए
अभिराम	—	सुखद			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) इस कविता के माध्यम से कवि ने किसे जीवन का लक्ष्य बताया है?

(ख) कवि अपना परिचय किस रूप में देते हैं?

(ग) आठों प्रहर कवि को किसका ध्यान रहता है?

(घ) लोगों को क्या सहना पड़ता है?

(ङ) कवि किसकी खोज में भटकते रहे?

लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है।
चलना हमारा काम है।

(ख) कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया
कुछ बोझ अपना बँट गया,
अच्छा हुआ तुम मिल गए
कुछ रास्ता ही कट गया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) चलना ही मनुष्य का कर्तव्य किस प्रकार है?

(ख) साथी के मिल जाने से कवि को क्या लाभ हुआ?

(ग) कवि ने 'विश्व-प्रवाह' के लिए कौन-सा विशेषण प्रयुक्त किया है?

(घ) 'किसको नहीं बहना पड़ा' का क्या अर्थ है?

(ङ) कविता की टेक की पंक्ति लिखिए।

(च) जीवन में किन्हें लक्ष्य की प्राप्ति होती है? समझाकर लिखिए।

(छ) 'राही' कहकर परिचय देने का क्या अभिप्राय है?

(ज) कवि ने जीवन की अपूर्णता की ओर किस प्रकार संकेत किया है?

(झ) कवि विधाता को अपने विरुद्ध क्यों नहीं मानते?

(ञ) क्या सभी जीवन में सफलता के सुखद लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं? यदि नहीं, तो क्यों? अपने विचार लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. (क) विलोम शब्द लिखिए-

पूर्णता × _____ सक्षम × _____

आशा × _____ अर्थ × _____

सुख × _____ उदार × _____

हँसना × _____ सबल × _____

(ख) दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

मंजिल – _____ _____ पत्थर – _____ _____

जल – _____ _____ दुख – _____ _____

संसार – _____ _____ पवन – _____ _____

उन्नति – _____ _____ सुंदर – _____ _____

शक्ति – _____ _____ इच्छा – _____ _____

(ग) वचन बदलिए-

शिला – _____ झील – _____

कविता – _____ गति – _____

किस्सा – _____ पंक्ति – _____

(घ) लिंग बदलिए-

कर्ता – _____ लेखक – _____

गुणवान – _____ तपस्वी – _____

आज्ञाकारी – _____ पुजारी – _____

स्वामी – _____ कवि – _____

2. अनिश्चयवावचक सर्वनाम

'कोई', 'किसी' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

नीचे लिखे वाक्यों में अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द रेखांकित कीजिए-

(क) कोई हँसता है, कोई रोता है।

(ख) कुछ सामान ले आओ।

(ग) कोई बुला रहा है।

(घ) किसी को सुख मिलता है।

(ङ) कोई मिलने आया है।

(च) किसी ने तुम्हारी बातें नहीं सुनी।

(छ) कुछ कहना बेकार है।

3. 'न', 'नहीं' और 'मत' निषेधसूचक शब्द हैं, जिनका वाक्य के आधार पर ही प्रयोग किया जाता है। जैसे-

(क) मैं न खाऊँगा। इच्छासूचक वाक्य निषेधात्मक

(ख) मैं घूमने नहीं जाऊँगा। निषेधात्मक वाक्य

(ग) वहाँ मत बैठो। आज्ञासूचक वाक्य निषेधात्मक

रिक्त स्थानों में 'न', 'नहीं' तथा 'मत' का उचित स्थान पर प्रयोग कीजिए–

(क) मैं तुम्हारे विचारों से सहमत _____ हूँ।

(ख) बच्चा _____ जाने क्या कर रहा है?

(ग) प्रतिदिन विद्यालय जाने से जी _____ चुराओ।

(घ) गांधी जी असत्य का समर्थन कभी _____ करते थे।

(ङ) माँ ने पुत्र से कहाए "अब और _____ सताओ।"

(च) जीवन मे परेशानियों से _____ घबराओ।

4. कविताओं में 'टेक' की पंक्ति का विशेष महत्त्व होता है। इसका संबंध संपूर्ण कविता के भाव से होता है। एक काव्य अनुच्छेद में विर्णत विचारों को कवि 'टेक' की पंक्ति द्वारा विश्राम देता है। अंतिम पंक्ति के साथ इसका तुक मिलना सामान्यतया जरूरी होता है। जैसे–

तब तक मुझे न विराम है।

चलना हमारा काम है।

इस प्रकार 'विराम है' और 'काम है' में तुक मिलने से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।

कविता में आई इसी प्रकार की अन्य पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए–

(क) _____

(ख) _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से शिवमंगल सिंह 'सुमन' की काव्य रचनाएँ पढ़िए। किन्हीं तीन भावपूर्ण कविताओं को अपनी परियोजना पुस्तिका मे लिखिए।**

शिव मंगल सिंह 'सुमन' की अन्य कविताएँ–

- मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार
- वरदान माँगूगा नहीं।
- मैं बढ़ा ही जा रहा हूँ।
- आभार
- हम पंछी उन्मुक्त गगन के
- पतवार
- मिट्टी की महिमा
- मृत्तिका–दीप

- **शिवमंगल सिंह 'सुमन' अथवा अन्य कवियों की कविताएँ याद करके कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।**
- 'मैं जब तक न खेलूँ,

  जब तक मुझे चैन कहाँ'

  इन पंक्तियों के आधार पर आठ पंक्तियों की एक स्वरचित कविता लिखिए। हिंदी अध्यापक द्वारा चयनित सर्वश्रेष्ठ कविता को कक्षा में चार्ट पेपर पर लिख कर लगाइए। इसे विद्यालयी सदन की सभा में पढ़कर सुनाइए।

प्रेम में परमेश्वर 12

किसी गाँव में मूरत नाम का एक बनिया रहता था। सड़क पर उसकी छोटी-सी दुकान थी। वहाँ रहते उसे बहुत समय हो चुका था, इसलिए वहाँ के सब निवासियों को वह भली-भाँति जानता था। वह बड़ा सदाचारी, सत्य-वक्ता, व्यावहारिक और सुशील था, जो बात कहता, उसे जरूर पूरा करता था। कभी धेले घी भी कम न तोलता और न ही घी-तेल मिलाकर बेचता। चीज अच्छी न होती, तो ग्राहक से साफ-साफ कह देता, धोखा न देता था।

बढ़ती उम्र के साथ में वह भगवत् भजन का प्रेमी हो गया था। उसके और बालक तो पहले ही मर चुके थे, अंत में तीन साल का बालक छोड़कर उसकी स्त्री भी परलोक सिधार गई। पहले तो मूरत ने सोचा, इसे ननिहाल भेज दूँ, पर फिर उसे बालक से प्रेम हो गया। वह स्वयं उसका पालन करने लगा। उसके जीवन का आधार अब यही बालक था। इसी के लिए वह रात-दिन काम किया करता था, लेकिन शायद संतान का सुख उसके भाग्य में लिखा ही न था।

बीस वर्ष की अवस्था में यह बालक भी यमलोक को सिधार गया। अब मूरत के शोक की कोई सीमा न थी। उसका विश्वास हिल गया। सदैव परमात्मा की निंदा कर वह कहा करता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयी और अन्यायी है। मारना बूढ़े को चाहिए था, मार डाला युवक हो। यहाँ तक कि उसने मंदिर जाना भी छोड़ दिया।

एक दिन उसका पुराना मित्र, जो आठ वर्ष से तीर्थयात्रा पर गया हुआ था, उससे मिलने आया। मूरत बोला– "मित्र देखो! सर्वनाश हो गया। अब विनती करता हूँ कि वह मुझे जल्दी इस संसार से उठा ले, मैं अब किस आशा पर जीऊँ?"

मित्र– "मूरत! ऐसा मत कहो। परमेश्वर की इच्छा को हम नहीं जान सकते। वह जो करता है, ठीक करता है। पुत्र का मर जाना और तुम्हारा जीते रहना विधाता के वश में है और कोई इसमें क्या कर सकता है! तुम्हारे शोक का मूल कारण यह है कि तुम अपने सुख में सुख मानते हो। पराए सुख से सुखी नहीं होते।"

मूरत– "तो मैं क्या करूँ?"

मित्र– "परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अंतःकरण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे, तो तुम्हें परमानंद प्राप्त होगा।"

मूरत– "चित्त स्थिर करने का कोई उपाय तो बतलाओ।"

मित्र– "गीता, भक्तमालादि ग्रंथों का श्रवण, पठन-मनन किया करो। ये ग्रंथ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाले है। इनको पढ़ना आरंभ कर दो, चित्त को बड़ी शान्ति मिलेगी।"

मूरत ने ग्रंथों को पढ़ना आरंभ किया। थोड़े ही दिनों में इन पुस्तकों से उसे प्रेम हो गया कि रात को बारह-बारह बजे तक गीता पढ़ता और उसके उपदेशों पर विचार करता रहता था। पहले वह सोते समय छोटे पुत्र को स्मरण करके रोया करता था, पर अब सब भूल गया। सदा परमात्मा में लीन रहकर आनंदपूर्वक जीवन बिताने लगा। पहले इधर-उधर बैठकर हँसी-ठट्ठा भी कर लिया करता था, पर अब वह समय व्यर्थ न खोता था। वह या तो दुकान का काम करता था या रामायण पढ़ता था। ताप्पर्य यह कि उसका जीवन सुधर गया।

एक दिन पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मूरत के मन में विचार आया कि जब ईश्वर सब प्राणियों पर दया करते हैं, तो क्या मुझे सभी पर दया नहीं करनी चाहिए? तत्पश्चात् सुदामा और शबरी की कथा पढ़कर उसके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि उसे भी भगवान के दर्शन हो सकते हैं?

यह विचारते-विचारते उसकी आँख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा– "मूरत! मूरत! देख, याद रख, मैं कल तुझे दर्शन दूँगा।"

यह सुनकर वह दुकान से बाहर निकल आया। वह कौन था? वह चकित होकर सोचने लगा, यह स्वप्न है अथवा जागृति। कुछ पता न चला। वह दुकान के भीतर जाकर सो गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठा और पूजा-पाठ करके भोजन बनाकर मूरत अपने काम-धंधे में लग गया, परंतु उसे रात वाली बात नहीं भूली थी।

रात्रि को बर्फ गिरने के कारण सड़क पर बर्फ के ढेर लग गए थे। मूरत अपनी धुन में बैठा था। इतने में बर्फ हटाने के लिए कोई कुली आया। मूरत ने समझा कृष्ण भगवान आए हैं। आँखे खोलकर देखा कि लालू बर्फ हटाने आया है। हँसकर कहने लगा– "तो तुम हो लालू! और समझा कृष्ण भगवान, वाह री बुद्धि!"

लालू बर्फ हटाने लगा। बूढ़ा आदमी था। शीत के कारण बर्फ न हटा सका। थककर बैठ गया और शीत के मारे काँपने लगा। मूरत ने सोचा कि लालू को ठंड लग रही है, इसे आग तपा दूँ।

मूरत– "लालू भैया! यहाँ आओ, तुम्हें ठंड सता रही है। हाथ सेंक लो।"

लालू दुकान पर आकर धन्यवाद करके हाथ सेंकने लगा।

मूरत– "भाई, कोई चिंता मत करो। बर्फ मैं हटा देता हूँ। तुम बूढ़े हो, ऐसा न हो कि ठंड खा जाओ।"

लालू– "तुम क्या किसी की बाट देख रहे थे?"

मूरत– "क्या कहूँ, कहते हुए लज्जा आती है। रात मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा, जिसे भूल नहीं सकता। भक्तमाला पढ़ते-पढ़ते मेरी आँख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा– 'मूरत!' मैं उठकर बैठ गया। फिर शब्द सुनाई पड़ा,– 'मूरत! मैं तुम्हें दर्शन दूँगा!' बाहर जाकर देखता हूँ, तो वहाँ कोई नहीं था। मैं भक्तमाला में सुदामा और शबरी के चरित्र पढ़कर यह जान चुका हूँ कि भगवान ने प्रेमवश किस प्रकार साधारण जीवों को दर्शन दिए हैं। वही अभ्यास बना हुआ है। मैं बैठा कृष्ण भगवान की राह देख रहा था कि तुम आ गए।"

लालू– "जब तुम्हें भगवान से प्रेम है, तो अवश्य दर्शन होंगे। तुमने आग न दी होती, तो मैं मर ही गया था।"

मूरत– "वाह भाई लालू! यह क्या बात हुई? इस दुकान को अपना घर समझो। मैं सदैव तुम्हारी सेवा करने को तैयार हूँ।"

लालू धन्यवाद करके चल दिया। उसके पीछे दो सिपाही आए। उनके पीछे एक किसान आया। फिर एक रोटी वाला आया। सब अपनी राह चले गए। फिर एक स्त्री आई। वह फटे-पुराने वस्त्र पहनी हुई थी। उसकी गोद में एक बालक था। दोनों शीत के मारे काँप रहे थे।

मूरत– "माई! बाहर ठंड में क्यों खड़ी हो? बालक को जाड़ा लग रहा है, भीतर आकर कपड़ा ओढ़ लो।"

स्त्री भीतर आई। मूरत ने उसे चूल्हे के पास बिठाया ओर बालक को मिठाई दी।

मूरत– "माई तुम कौन हो?"

स्त्री– "मैं एक सिपाही की स्त्री हूँ। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहाँ भेज दिया है, कुछ पता नहीं लगता। गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम करती थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ, तो उन्होंने इस भय से कि दो जीवों को अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल

दिया। मैं तीन महीने से मारी-मारी फिर रही हूँ। कोई टहलनी नहीं रखता। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकारिन के पास जा रही हूँ। शायद नौकरी पर रख ले।''

मूरत– ''तुम्हारे पास कोई ऊनी वस्त्र नहीं है?''

स्त्री– ''वस्त्र कहाँ से हो, पैसा ही तो पास नहीं।''

मूरत– ''यह लो लोई, इसे ओढ़ लो।''

स्त्री– ''भगवान तुम्हारा भला करे। तुमने बड़ी दया की। बालक शीत के मारे मरा जाता था।''

मूरत– ''मैंने कुछ नहीं किया। श्रीकृष्ण भगवान की इच्छा ही ऐसी है।''

फिर मूरत ने स्त्री को रात वाला स्वप्न सुनाया।

स्त्री– ''ईश्वर का दर्शन होना कोई असंभव तो नहीं है।''

स्त्री के चले जाने पर सेब बेचनेवाली आई। उसके सिर पर सेबों की टोकरी थी और पीठ पर अनाज की गठरी। टोकरी जमीन पर रखकर खंभे का सहारा ले वह विश्राम करने लगी कि एक बालक टोकरी में से एक सेब उठाकर भागा। सेबवाली ने दौड़कर उसे पकड़ लिया ओर सिर के बाल खींचकर मारने लगी। बालक बोला– ''मैंने सेब नहीं उठाया।''

मूरत ने उठकर बालक को छुड़ा दिया।

मूरत– ''माई, क्षमा कर, बालक है।''

सेबवाली – ''यह बालक बड़ा उत्पाती है। मैं इसे दंड दिए बिना कभी न छोड़ूँगी।''

मूरत– ''माई, यह क्या कहती हो! बदला और दंड तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं, वह दयालु है। यदि इस बालक को एक सेब चुराने का कठिन दंड मिलना उचित है, तो हमें हमारे अनंत पापों का क्या दंड मिलना चाहिए?''

सेबवाली– ''यह सत्य है, परंतु बरताव से बालक बिगड़ जाते है।''

मूरत– ''कदापि नहीं। बिगड़ते नहीं, अपितु सुधरते हैं।''

सेबवाली टोकरी उठाकर चलने लगी कि उसी बालक ने आकर विनती की– ''माई, यह टोकरा तुम्हारे घर तक मैं पहुँचा आता हूँ।''

रात्रि होने पर मूरत भोजन करने के बाद गीता का पाठ कर रहा था उसकी आँख झपकी और उसने यह दृश्य देखा-

''मूरत! मूरत!''

मूरत– ''कौन हो?''

''मैं–लालू। इतना कहकर लालू हँसता हुआ चला गया।''

फिर आवाज आयी– ''मैं हूँ।'' मूरत देखता है कि दिन वाली स्त्री लोई ओढ़े बालक को गोद में लिए सम्मुख आकर खड़ी हुई, हँसी और लुप्त हो गई। फिर शब्द सुनाई दिया– ''मैं हूँ।'' देखा कि सेब बेचनेवाली और बालक हँसते-हँसते सामने आए और अंतर्ध्यान हो गए।

मूरत उठकर बैठ गया। उसे विश्वास हो गया कि कृष्ण भगवान के दर्शन हो गए, क्योंकि प्राणीमात्र पर दया करना ही परमात्मा का दर्शन करना है।

–लियो टॉलस्टॉय

(अनुवाद-प्रेमचंद)

लेखक परिचय

*रूस के प्रसिद्ध उपन्यासकार लियो टॉलस्टॉय का जन्म 9 सितंबर, 1828 को हुआ था। वर्ष 1860 में उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'वॉर एंड पीस' **(War and Peace)** लिखा। वर्ष 1873 में 'अन्ना कैरेनीना' **(Anna Karenina)** लिखा। इन दोनों उपन्यासों पर फिल्में भी बनी है। उनकी मृत्यु 20 नवंबर, 1910 को हुई थी। इस रूसी कहानी का अनुवाद हिंदी के कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने किया है।*

शब्द-अर्थ

सदाचारी	—	अच्छा व्यवहार करने वाला	मृत्युलोक	—	पृथ्वी
सत्य-वक्ता	—	सच बोलने वाला	निष्काम	—	कामना (इच्छा) रहित
व्यावहारिक	—	व्यवहार संबंधी	अंतःकरण	—	अंतर्मन (चित्त)
सुशील	—	विनम्र	शुद्ध	—	साफ-पवित्र
भगवत्भजन	—	भगवान का भजन	हँसी-ठट्ठा	—	हँसी-मजाक
ननिहाल	—	नानी का घर	ताप्पर्य	—	मतलब
निर्दयी	—	दया न करने वाला	तत्पश्चात	—	इसके बाद
अन्यायी	—	अन्याय करने वाला	सम्मुख	—	सामने
सर्वनाश	—	सब कुछ नष्ट हो जाना, मटियामेट हो जाना।			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए-**

(क) मूरत बनिया कहाँ रहता था?

(ख) बढ़ती उम्र के साथ उसके मन में कौन-सा नया भाव जागा?

(ग) मूरत के भाग्य में कौन-सा सुख नहीं था?

(घ) भक्तमाला ग्रंथ के श्रवण, पठन, मनन करने की सलाह किसने दी थी?

(ङ) मूरत ने लालू की सहायता किस प्रकार की?

(च) मूरत ने गरीब स्त्री और बच्चे को क्या दिया?

लिखित

1. पठित पाठ के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए-

(क) मूरत का मित्र कितने वर्षों से तीर्थ यात्रा पर गया हुआ था?

- ☐ दस वर्षों से
- ☐ आठ वर्षों से
- ☐ पिछले साल से
- ☐ पाँच वर्षों से

(ख) अंत:करण की शुद्धि किस प्रकार होती है?

- ☐ परमात्मा का चिंतन करने से
- ☐ भजन-कीर्तन करने से
- ☐ परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से
- ☐ स्नान करने और वस्त्र बदलने से

(ग) मूरत रात-दिन किसके लिए काम किया करता था?

- ☐ अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए
- ☐ अपने सभी बच्चों के लिए
- ☐ अपने तीन साल के बच्चे के लिए
- ☐ गरीबों की सहायता करने के लिए

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मूरत अपने तीन साल के बालक का पालन-पोषण क्यों करने लगा?

(ख) मूरत ने अपने मित्र को अपना कौन-सा दुख सुनाया?

(ग) मित्र ने दुखी मूरत को सुख प्राप्त करने का कौन-सा रास्ता सुझाया?

(घ) परम-आनंद की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

(ङ) ईश्वर ने मूरत को किन-किन रूपों में दर्शन दिए?

(च) मूरत के चरित्र की क्या विशेषता थी?

(छ) मूरत के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना क्या थी, जिसने उसके विश्वास को हिला दिया?

(ज) भगवत भजन के प्रेमी मूरत ने मंदिर जाना क्यों छोड़ दिया?

(झ) दुखी मूरत के मन में ईश्वर भक्ति का विश्वास किसने और कैसे जगाया?

(ञ) मूरत का जीवन आनंदपूर्वक कैसे बीतने लगा?

(ट) गरीब स्त्री ने मूरत को अपने जीवन की दुख भरी कभा सुनाते हुए क्या कहा?

(ठ) मूरत ने बालक को क्षमा करने के लिए सेब बेचने वाली स्त्री को क्या समझाया?

भाषा-ज्ञान

1. वाक्य- व्यवस्थित सार्थक शब्द समूह, जो पूरा आशय प्रकट करे, वाक्य कहलाता है। जैसे- मूरत बनिया किसी गाँव में रहता था।

वाक्य के अंग— वाक्य के दो अंग होते हैं- (क) उद्देश्य, (ख) विधेय

(क) उद्देश्य- वाक्य में जिसके विषय (कर्ता) में कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे- मूरत ने मंदिर जाना छोड़ दिया। इस वाक्य में 'मूरत ने' उद्देश्य है।

(ख) विधेय- वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) के विषय मे जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

जैसे- मूरत ने मंदिर जाना छोड़ दिया। इस वाक्य में 'मंदिर जाना छोड़ दिया', उद्देश्य अर्थात् मूरत के बारे में कहा गया है, इसलिए यह विधेय है।

- **निम्नलिखित वाक्यों में विधेय को रेखांकित कीजिए–**

(क) मूरत का मित्र तीर्थयात्रा से लौटा।

(ख) मैं कल तुझे दर्शन दूँगा।

(ग) मूरत अपने काम-धंधे में लग गया।

(घ) लालू ने कहा, ''ईश्वर तुम्हें दर्शन अवश्य देंगे।''

(ङ) सेबवाली ने दौड़कर उसे पकड़ लिया।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य भेद- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं—

(क) विधानवाचक वाक्य— जिन वाक्यों में क्रिया के सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

- सूर्य पूर्व से निकलता है।
- गोदावरी दक्षिण भारत की गंगा कहलाती है।

(ख) निषेधवाचक वाक्य— जिन वाक्यों में किसी कार्य के होने का निषेध होता है, उन्हें निषेधवाचक आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

- मैं खेलने नहीं जाऊँगा।
- आज पानी नहीं बरसेगा।

(ग) आज्ञावाचक वाक्य— जिन वाक्यों से आज्ञा, अनुमति, निवेदन आदि का पता चलता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

- तुम घर चले जाओ।
- आप सभी बैठ जाइए।

(घ) इच्छावाचक वाक्य— जिन वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामना आदि का भाव प्रकट हो, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

- आज कहीं से पैसे मिल जाएँ।
- ईश्वर आपकी मनोकामना पूरी करें।

(ङ) प्रश्नवाचक वाक्य— जिन वाक्यों के द्वारा प्रश्न पूछा जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। इस तरह के वाक्य अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) का प्रयोग अवश्य किया जाता है। जैसे—

- तुम कहाँ जा रहे हो?
- मूरत दुखी क्यों था?

(च) विस्मयवाचक वाक्य— जिन वाक्यों के द्वारा विस्मय, हर्ष, घृणा, शोक, ग्लानि आदि का भाव प्रकट हो, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों में विस्मय सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

- हे राम! मेरी रक्षा करो।
- वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

(छ) संदेहवाचक वाक्य— जिन वाक्यों के द्वारा कार्य के होने के प्रति संदेह या संभावना का भाव व्यक्त होता है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे—

- यदि वर्षा अच्छी होती, तो फसल अच्छी होती।
- अगर तुम मन लगा कर पढ़ते, तो अवश्य प्रथम आते।

- **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर वाक्य भेद छाँटिए और दिए गए स्थान पर भेदों के नाम लिखिए-**

(क) वाह! कितना अच्छा मौसम है। _____

(ख) उसका मित्र तीर्थ यात्रा से लौटा है। _____

(ग) मैं क्या करूँ। _____

(घ) मैंने सेब नहीं चुराया। _____

(ङ) शायद मूरत ईश्वर की बाट जोह रहा था। _____

(च) मूरत ऐसा मत कहो। _____

(छ) यदि मन लगाकर पढ़ते तो अवश्य पास होते। _____

(ज) लालू ने कहा, ''ईश्वर तुम्हारी मनोकामना पूरी करें।'' _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से लियो टॉलस्टॉय की अन्य कहानियाँ पढ़िए।**
- **कक्षा में आशु संभाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए तथा नीचे लिखे शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक का भाषण के लिए चुनाव कीजिए–**

(क) नि:स्वार्थ सेना मानव का सर्वोत्तम गुण है। _____

(ख) ईश्वर दीन-दुखियों से प्रेम करनेवालों पर प्रसन्न होते हैं। _____

- **महाकवि निराला, मदर टेरेसा, बाबा आप्टे आदि दीन-दुखियों से प्रेम करते थे। मदर टेरेसा या बाबा आप्टे के जीवन की कोई घटना, जो आपने सुनी हो, कक्षा में सुनाइए।**

ऐसे थे बालकृष्ण भट्ट

13

ब्रजभाषा की सरस भावपूर्ण कविताओं के मोह-पाश से मुक्ति दिलाकर खड़ी बोली हिंदी को गद्य के विचारपूर्ण धरातल पर प्रतिष्ठित करने वाले भारतेंदु-युग के प्रमुख निबंधकार, नाटककार और पत्रकार थे- पंडित बालकृष्ण भट्ट।

उनका जन्म 3 जून, 1844 को प्रयाग के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम पं0 वेणी प्रसाद था। उनकी माता अपने पति की अपेक्षा अधिक पढ़ी-लिखी और विदुषी थीं। उनकी शिक्षाओं का प्रभाव बालक बालकृष्ण पर बहुत अधिक पड़ा। स्कूल में दसवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भट्ट जी ने घर पर ही संस्कृत का अध्ययन किया। संस्कृत के अतिरिक्त उन्हें हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान हो गया।

वे अपने सिद्धांतों और जीवन-मूल्यों के प्रति इतने दृढ़-प्रतिज्ञ थे कि दूसरों का हस्तक्षेप करना उन्हें नहीं सहाता था। प्रारंभ में उन्होंने कुछ समय तक व्यापार का कार्य किया। वे कुछ समय तक कायस्थ पाठशाला, प्रयाग मे संस्कृत के अध्यापक भी रहे, किंतु उनका मन किसी कार्य में नहीं रमा। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी से प्रभावित होकर उन्होंने हिंदी साहित्य-सेवा का व्रत ले लिया। प्रारंभ से ही उनकी रुचि साहित्य सेवा की ओर थी, अतः वे आजीवन हिंदी साहित्य की उन्नति और सेवा में लगे रहे।

बालकृष्ण भट्ट जी ने 'आँख', 'नाक', 'कान', 'बातचीत' जैसे साधारण विषयों पर बड़े ही सारगर्भित निबंध लिखे हैं। 'आत्मनिर्भरता', 'चारू-चरित्र' जैसे गंभीर विषयों के साथ उन्होंने साहित्यिक और सामाजिक विषयों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। उनके निबंध-संग्रह के नाम 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट निबंधावली' हैं। उनके निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सुरुचि संपन्न होते के साथ-साथ कल्पना की ऊँची उड़ान भी भरते हैं और शिष्ट हास्य-व्यंग्य से भरपूर हैं उनकी तुलना अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार चार्ल्स लैंब से की जा सकती है। उन्होंने 'दमयंती स्वयंवर', 'बाल-विवाह', 'चंद्रसेन', 'रेल का टिकट खेल' जैसे मौलिक नाटकों की रचना करने के साथ

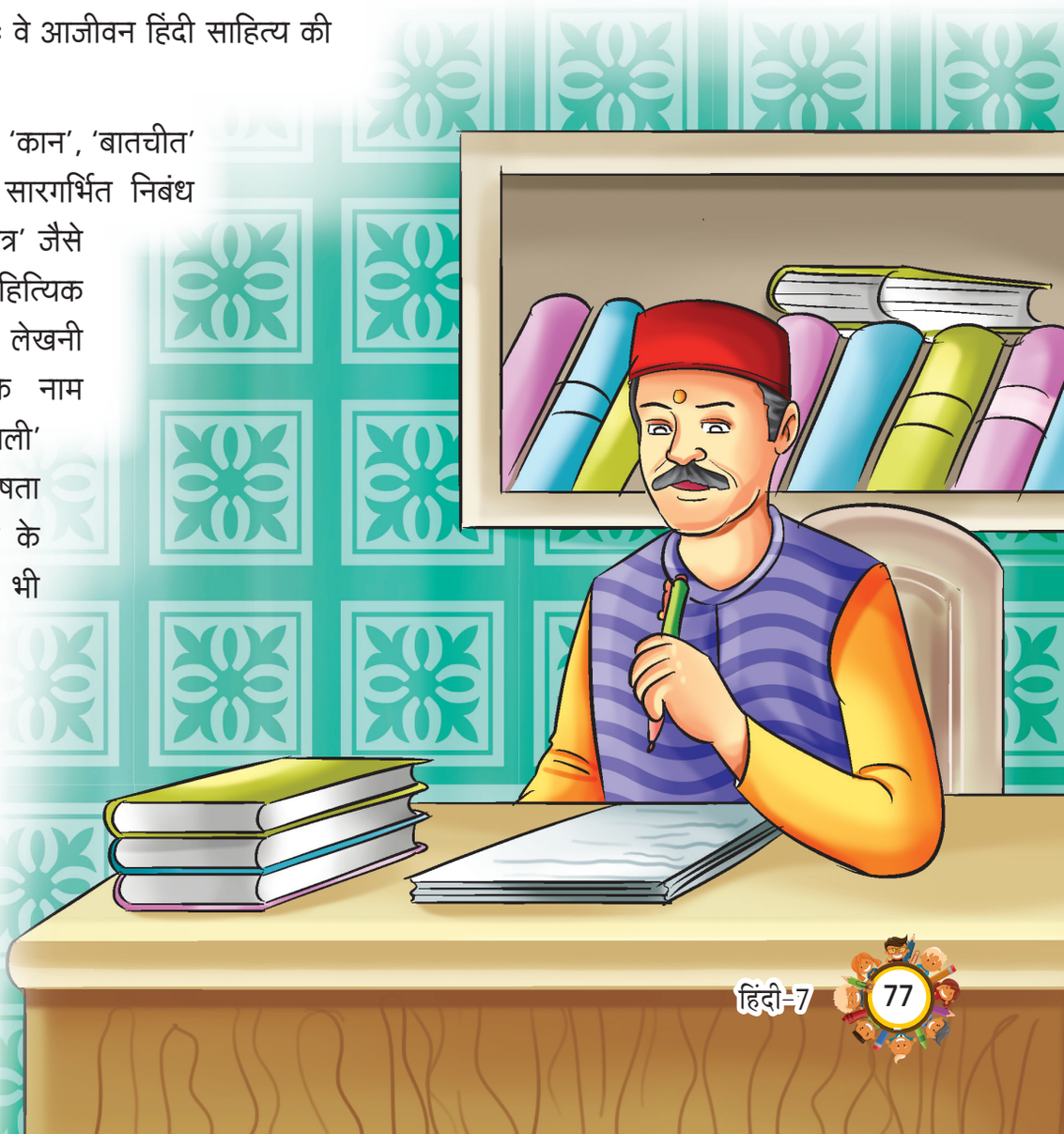

बंगला तथा संस्कृत भाषा के नाटकों का अनुवाद भी हिंदी में किए हैं। जिनमें 'वेणीसंहार', 'मृच्छकटिक' और 'पद्मावती' आदि प्रमुख हैं। उनके द्वारा रचित 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यासों ने साहित्य के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बनाया।

भट्ट जी एक अच्छे और सफल पत्रकार भी थे। हिंदी के प्रचार के लिए उन्होंने संवत् 1993 में प्रयाग में 'हिंदी वर्द्धनी' नामक सभा की स्थापना की। उस सभा की ओर से हिंदी मासिक पत्र 'हिंदी-प्रदीप' का प्रकाशन भी किया। वे बत्तीस वर्षों तक इसके संपादक रहे और इसे नियमित रूप से चलाते रहे। 'हिंदी-प्रदीप' के अतिरिक्त उन्होंने दो-तीन अन्य पत्रिकाओं का संपादन भी किया। 'हिंदी नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा प्रकाशित 'हिंदी-शब्द सागर' के संपादन में उन्होंने बाबू श्याम सुंदर दास तथा रामचंद्र शुक्ल जी के साथ भी कार्य किया। पं० प्रताप नारायण मिश्र, बाल मुकुंद गुप्त आदि उनके समकालीन लेखक थे।

भाषा की दृष्टि से अपने समय के लेखकों में उनका स्थान बहुत ऊँचा था। उन्होंने अपनी रचनाओं में यथासंभव शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया। भावों के अनुकूल शब्दों का चुनाव करने में वे बड़े कुशल थे। कहावतों और मुहावरों के प्रयोग ने उनकी भाषा में चार चाँद लगा दिए हैं। उनकी भाषा में पूर्वीपन की झलक दिखाई देती है; जैसे- 'समझा-बुझा' के स्थान पर 'समझाय-बुझाय' लिखा गया है। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी किया गया है, जिससे भाषा जीवंत और विचार चित्ताकर्षक हो गए है। वे हिंदी की परिधि का विस्तार करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भाषा का प्रयोग विषय एवं प्रसंग के अनुसार ही किया है।

भट्ट जी की लेखन शैली के कई रूप उनके निबंध, नाटकों और उपन्यासों में दिखाई देते हैं। 'शैली ही लेखक के व्यक्तित्व की परिचायक होती है' इस कथन की पूर्ण सार्थकता उनके निबंधों, उपन्यासों और नाटकों में दिखाई देती है।

विचारात्मक शैली का प्रयोग उन्होंने गंभीर विषयों पर निबंध लिखते समय किया है। विषय की विस्तृत विवेचना करना, गंभीर चिंतन करना, तर्क के साथ व्यंग्य का समावेश करना उनकी प्रमुख विशेषताएँ थीं। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग उन्होंने व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के निबंध और नाटकों में किया है। उनके उपन्यास भी इसी शैली में लिखे गए हैं। भाषा सरल और मुहावरेदार है। भावात्मक शैली का प्रयोग साहित्यिक निबंधों में किया गया है। इसे भट्ट जी की 'प्रतिनिधि शैली' कहा जा सकता है। व्यंग्यात्मक शैली में हास्य और व्यंग्य की प्रधानता है। उनके लेखन में उर्दू के शब्दों की अधिकता है। वाक्य छोटे-छोटे और प्रभावशाली हैं।

इस प्रकार भारतेंदु काल के निबंध लेखकों में भट्ट जी का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। उन्होंने अपनी मौलिक और अनुदित रचनाओं के द्वारा हिंदी गद्य साहित्य को उस समय समृद्ध किया, जिस समय खड़ी बोली हिंदी अपना रास्ता बना रही थी तथा हिंदी में मौलिक गद्य रचनाओं का सर्वथा अभाव था।

शब्द-अर्थ

मोहपाश — मोह का बंधन
निबंधकार — निबंध लिखने वाले
हस्तक्षेप — दखलंदाजी
आजीवन — जीवनभर
चित्ताकर्षक — चित्त (मन) को आकर्षित करने वाले
अनूदित — जिनका अनुवाद किया गया हो
प्रतिष्ठित — सम्मानित, स्थापित
सिद्धांत — निश्चित मत, उसूल
सुहाता — अच्छा लगता
समकालीन — उसी समय के
मौलिक — मूलरूप से, स्वयं की

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) बालकृष्ण भट्ट के पिता जी का क्या नाम था?

(ख) बालकृष्ण भट्ट किस विद्यालय में अध्यापक थे?

(ग) किससे प्रभावित होकर उन्होंने साहित्य-सेवा का व्रत लिया?

(घ) उनकी तुलना किस प्रसिद्ध निबंधकार से की जा सकती है?

(ङ) वे किस प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका के संपादक थे?

(च) उनके किसी प्रसिद्ध उपन्यास का नाम बताइए।

लिखित

1. नीचे लिखे वाक्य को ध्यानपूर्वक पढ़िए। सही वाक्यों के सामने (✓) का चिह्न और गलत वाक्यों के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) पं० बालकृष्ण भट्ट का जन्म काशी में हुआ था। ☐

(ख) उनकी माता बहुत अधिक पढ़ी-लिखी महिला थीं। ☐

(ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उनसे प्रभावित होकर साहित्य सेवा का व्रत लिया। ☐

(घ) उन्होंने प्रयाग में 'हिंदी वद्र्धनी' नामक सभा की स्थापना की। ☐

(ङ) उन्होंने 'हिंदी-प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया। ☐

(च) वे अंग्रेजी, उर्दू, फारसी और संस्कृत भाषा के ज्ञाता थे। ☐

(छ) उन्होंने गंभीर विषयों पर निबंध नहीं लिखे हैं। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पंडित बालकृष्ण भट्ट का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) उनकी शिक्षा-दीक्षा के बारे में आप क्या जानते हैं?

(ग) प्रारंभ में उन्होंने आजीविका के लिए क्या-क्या कार्य किए?

(घ) उनके निबंध-संग्रह के नाम लिखिए।

(ङ) उनके अनूदित नाटक कौन-कौन से हैं?

(च) उनके मौलिक नाटकों और उपन्यासों के नाम लिखिए।

(छ) बालकृष्ण भट्ट के परिवार एवं शिक्षा के विषय मे लिखिए।

(ज) बालकृष्ण भट्ट के बहुचर्चित निबंध कौन-कौन से हैं? उनकी क्या विशेषताएँ हैं?

(झ) भट्ट जी एक अच्छे और सफल पत्रकार थे, कैसे?

(ञ) 'भट्ट जी की भाषा पर उनके व्यक्तित्व का पूरा प्रभाव दिखाई देता है।' इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

(ट) भट्ट जी की शैली के कितने रूप दिखाई देते हैं? उनकी प्रतिनिधि शैली कौन-सी थी?

(ठ) साहित्य सेवा के प्रति उनकी रुचि की चर्चा करते हुए बताइए कि उन्होंने किन-किन महत्वपूर्ण रचनाओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया?

भाषा-ज्ञान

1. उपसर्ग - उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं, जिनका प्रयोग सार्थक शब्दों के साथ किया जाता है। उपसर्ग किसी शब्द के आरंभ मे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं। जैसे- स + रस = सरस, सु + रुचि = सुरुचि, प्रति + निधि = प्रतिनिधि आदि।

हिंदी भाषा मे अंग्रेजी और उर्दू-फारसी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है, इसलिए अंग्रेजी और उर्दू-फारसी के उपसर्गों का प्रयोग भी प्रचलित है। जैसे- ला + जवाब = लाजवाब, हम + जोली = हमजोली, डिप्टी + कलेक्टर = डिप्टी-कलेक्टर, सब + इंस्पेक्टर = सब-इंस्पेक्टर आदि।

- **नीचे दिए गए उर्दू-फारसी और अंग्रेजी के उपसर्गों के निर्मित शब्द लिखिए-**

(क) चीफ + मिनिस्टर _____, _____

(ख) वाइस + _____, _____

(ग) हेड + _____, _____

(घ) डिप्टी + _____, _____

(ङ) जनरल + _____, _____

(च) हर + _____, _____

(छ) दर + _____, _____

(ज) कम + _____, _____

(झ) गैर + _____, _____

(ञ) ना + _____, _____

2. **निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए-**

(क) अनुकरण करने योग्य _____

(ख) जो सबसे आगे हो _____

(ग) अतिथि का सत्कार _____

(घ) जो बाद में अधिकारी बने _____

(ङ) निरंतर कर्मशील रहने वाला _____

3. निपात - वे अव्यय शब्द, जो किसी पद के बाद लगाकर उसके अर्थ में विशेष बल डालते हैं, निपात कहलाते हैं। जैसे - तुम आज दिल्ली जाओगे। यह आज्ञा वाचक वाक्य है।

तुम आज ही दिल्ली जाओगे। इस वाक्य में 'ही' 'आज' के अर्थ पर विशेष बल दे रहा है। अत: 'ही' निपात है।

कुछ मुख्य निपात हैं- ही, भी, तक, तो, मात्र आदि।

कुछ अन्य उदाहरण—

(क) बालकृष्ण भट्ट ने बड़े ही सारगर्भित निबंध लिखे हैं।

(ख) बालकृष्ण भट्ट एक अच्छे और सफल पत्रकार भी थे।

(ग) वे बत्तीस वर्षों तक 'हिंदी-प्रदीप' के संपादक रहे।

- **नीचे लिखे निपातों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए-**

(क) मात्र – _____।

(ख) तक – _____।

(ग) ही – _____।

(घ) भी – _____।

(ङ) तो – _____।

4. नीचे लिखे समस्तपदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए-

(क) साहित्य-सेवा _____।

(ख) सुरुचि-संपन्न _____।

(ग) यथाशक्ति _____।

(घ) घर-द्वार _____।

(ङ) तिराहा _____।

5. संधि-विच्छेद कीजिए-

(क) निबंधावली _____ + _____

(ख) भावात्मक _____ + _____

(ग) पुस्तकालय _____ + _____

(घ) पत्राचार _____ + _____

(ङ) सर्वोच्च _____ + _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'आँख', 'नाक', 'कान', 'बातचीत' आदि पढ़िए।**
- **किसी एक निबंध की फोटो प्रतिलिपि लेखक के चित्र सहित अपनी परियोजना पुस्तिका में लगाइए।**
- **आपने अपने प्रिय लेखक या कवि के विषय (उनके जीवन, शिक्षा, कार्यों, रचनाओं, साहित्य-सेवाओं और प्राप्त पुरस्कारों) में लिखकर कक्षा के सूचना-पट पर लगाइए।**

माँ : जीवन संचालिका 14

"सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना, बाजु-ए-कातिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे ऐ आसमां
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।"

-रामप्रसाद बिस्मिल

मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक वीरों ने हँसते-हँसते जान दे दी। उन वीरों में रामप्रसाद बिस्मिल का भारतीय समाज मे अपना एक विशिष्ट स्थान है। ऐसे महान नायक को शत-शत नमन है। उन्हीं के शब्दों में-

"यदि देश के हित मरना पड़े, मुझको सहस्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊँ कभी।"

रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम पं० मुरलीधर था और माता का नाम श्रीमती मूलमती था। माता-पिता दोनों ही भगवान श्रीराम के परम भक्त थे। अतः बालक का नाम बड़े प्रेम से रामप्रसाद रखा गया। बाल्यकाल से ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का विशेष ध्यान रखा जाने लगा, परंतु इस बालक को बचपन में खेलना अधिक प्रिय था। उनके पिता कुछ क्रोधी स्वभाव के थे, अतः पढ़ाई में ध्यान न देने पर वे कभी-कभी पुत्र पर हाथ भी उठा देते थे, लेकिन माता सदैव प्रेम से ही समझाती थीं।

पिता ने बालक को हिंदी का अक्षर ज्ञान तो करवाया ही, साथ ही उर्दू सीखने के लिए उर्दू के स्कूल में भी दाखिल करवा दिया। इसके पीछे भी एक मनोरंजक घटना है, जिसका जिक्र बिस्मिल जी ने आत्मकथा के खंड- 'एक' मे किया है। उन्हें बचपन में 'उ' लिखना नहीं आता था, जिसके चलते उन्हें एक बार पिता जी से खूब मार पड़ी। अंततः उन्हें उर्दू सीखने भेजा गया। फिर माता जी के स्नेह-वश वे अंग्रेजी पढ़ने के लिए मिशन स्कूल भी गए।

राम प्रसाद बिस्मिल जी की आर्यसमाज में धीरे-धीरे रुचि बढ़ने लगी। वे प्रायः प्रवचन, व्याख्यान आदि सुनते और साधु-संयासियों की पूरी निष्ठा से सेवा भी करते।

बिस्मिल अपनी माता जी से बहुत अधिक प्रभावित थे। उनकी माता जी अपने प्रोत्साहन और सद्व्यवहार से सदैव पुत्र के जीवन को दिशा दिखाती रहीं। बिस्मिल ने जेल से अपनी माता को एक पत्र लिखा था, जो अत्यंत हृदयस्पर्शी और प्रेरणादायी है-

जन्मदात्री जननी,

सादर चरण स्पर्श।

मुझे इस जीवन में आपका ऋण उतारने का अवसर नहीं मिला, यद्यपि इस जन्म में क्या अगले कई जन्मों में भी आपसे ऋण नहीं हो पाऊँगा। जिस प्रेम और दृढ़ता से आपने मेरा यह तुच्छ जीवन सुधारा है, वह अवर्णनीय है।

मेरी शिक्षा, मेरी आत्मिक उन्नति, धर्म के प्रति मेरी रुचि सब पर आप की ही कृपा है। महान से महान संकट में भी आपने कभी मुझे अधीर होकर कुपथ पर चलने नहीं दिया। मैं चाहूँगा कि जन्म-जन्मांतर आप ही मेरी माँ बनें।

माँ, मेरे मन में एक ही तृष्णा शेष रह गई कि मैं आपके चरणों की सेवा न कर सका। आप यह सोचकर धैर्य धारणा करना कि आपका पुत्र माताओं की भी माता 'भारत-माता' की सेवा में अपने जीवन की बलि की भेंट दे गया। आप यह आशीर्वाद दो कि अंतिम समय में भी मेरा हृदय विचलित न हो और आप भी उसी प्रकार धैर्य रखना, जैसे गरु गोविंदसिंह की धर्मपत्नी ने रखा था, जिन्होंने अपने पुत्रों की मृत्यु को हर्षित होते हुए सहन किया था।

आपके चरण-कमलों में प्रणाम।

आपका पुत्र

राम

रामप्रसाद बिस्मिल नवीं कक्षा में ही पढ़ते थे, तब उनके हृदय में स्वदेश-प्रेम की लौ जगी। उन्हें लगने लगा कि देश के लिए कोई विशेष कार्य किया जाना चाहिए। सन् 1916 तक बिस्मिल की देशभक्ति उनके लिए एक जुनून बन चुकी थी, साथ-ही-साथ वे साहित्य सृजन भी कर रहे थे। उनके द्वारा रचित 'अमेरिका की स्वतंत्रता का इतिहास' नामक पुस्तक छपते ही जब्त कर ली गई। धीरे-धीरे समय के साथ वे अनेक महानुभावों के संपर्क में आए और कई ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया, जिससे वे विदेशी सरकार की आँखों की किरकिरी बन जाए। 'काकोरी कांड' के बाद से तो गिरफ्तारी से हर समय उनका लुका-छिपी वाला खेल चलने लगा। अंततः 26 सितंबर, 1925 की रात को वे गिरफ्तार कर लिए गए।

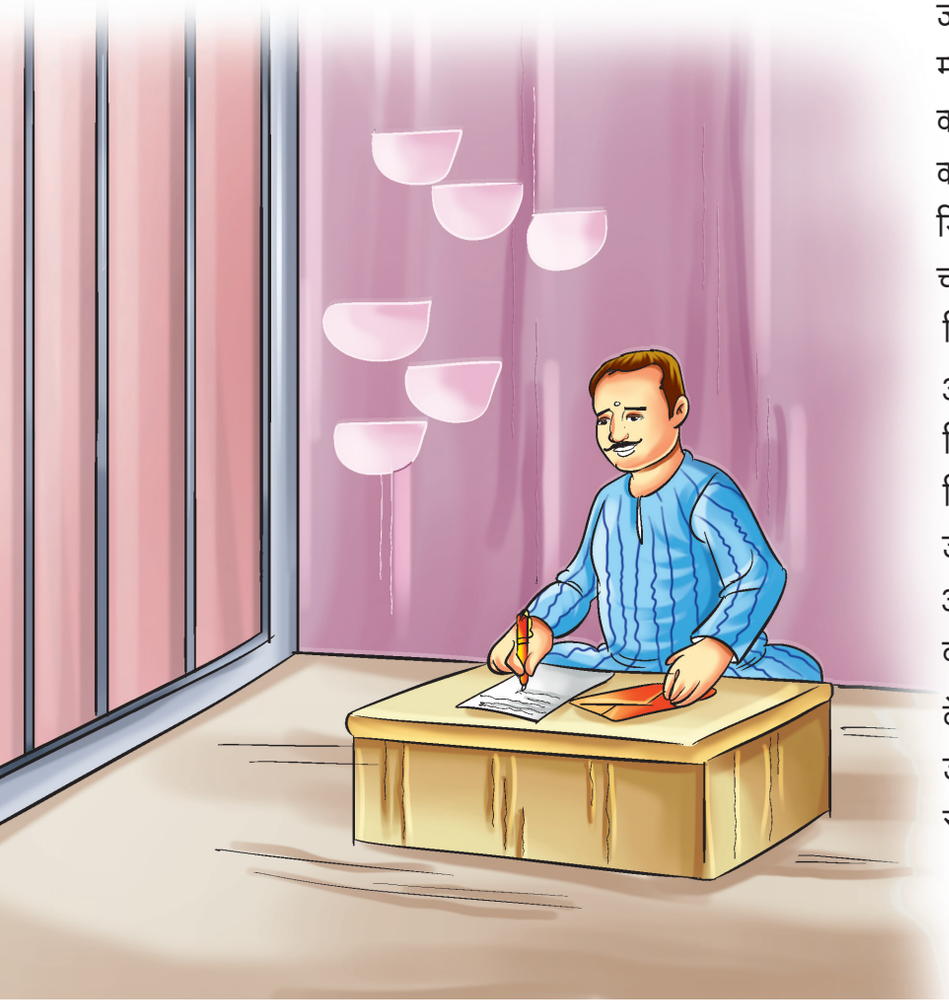

अभियोग और मुकदमा चलाने का नाटक खूब चला, जिसमें बिस्मिल ने स्वयं अपने केस की ऐसी पैरवी की कि जज महाशय भी मुँह देखते रह गए। परंतु हुआ वही, जो पहले से तय हो चुका था। उनको एक खतरनाक अपराधी ठहराया गया और अंततः 19 सितंबर, 1927 को गोरखपुर जिले में फाँसी देने की सजा सुना दी गई।

देश की स्वतंत्रता के लिए शहीद होने वाला यह बाँका जवान यदि वीर था, तो उसकी माँ भी वीर-प्रसूता थी। रामप्रसाद के पिता ने जानबूझकर उनकी माता से फाँसी

की खबर छिपाई, क्योंकि उन्हें लगा कि संभवतः वे इसे सहन नहीं कर पाएँगी। वे अकेले ही पुत्र से अंतिम मुलाकात करने चले गए। माँ भी आखिर माँ थीं, वे पिता से पहले ही बेटे के सामने उपस्थित थीं। कहते हैं कि माँ को सामने पाकर पुत्र की आँखें गीली भी न हो पाईं थीं कि वे पहले ही सिंहनी-सी हुँकार उठीं, "मैं प्रसन्न हूँ कि मेरे पुत्र ने शूर-वीरों की भाँति अपने प्राण न्योछावर किए।"

"दिल फिदा करते हैं, कुर्बान जिगर करते हैं

पास जो कुछ है, वो माता को नजर करते हैं।"

'वंदेमातरम्', 'भारत माता की जय' कह वे हँसकर फाँसी के फंदे पर खुशी से झूल गए। इस वीर शहीद का स्मृति-स्थल देवरिया जिले के 'बहरज' नामक स्थान पर है, जिसके अदंर उनकी अस्थियों का कलश मौजूद है।

शब्द-अर्थ

जन्मदात्री	—	जन्म देने वाली	**व्याख्यान**	—	भाषण
जुनून	—	पागलपन	**हृदयस्पर्शी**	—	मन को छूने वाला
वीर-प्रसूता	—	वीर को जन्म देने वाली	**सद्व्यवहार**	—	अच्छा व्यवहार
प्रेरणादायी	—	प्रेरणा देने वाला			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए-**

(क) बिस्मिल की माता जी का क्या नाम था?

(ख) रामप्रसाद बिस्मिल के पिता कौन थे? उनका स्वभाव कैसा था?

(ग) वे अंग्रेजी पढ़ने के लिए मिशन स्कूल किसकी इच्छा के कारण गए?

(घ) रामप्रसाद बिस्मिल के हृदय में देश-प्रेम की लौ कब जगी?

(ङ) उनकी कौन-सी पुस्तक जब्त कर ली गई थी?

लिखित

1. नीचे लिखे अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम पं० मुरलीधर था और माता का नाम श्रीमती मूलमती था। माता-पिता दोनों ही भगवान श्रीराम के परम भक्त थे। अत: बालक का नाम बड़े प्रेम से रामप्रसाद रखा गया। बाल्यकाल से ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का विशेष ध्यान रखा जाने लगा, परंतु इस बालक को बचपन में खेलना अधिक प्रिय था। उनके पिता कुछ क्रोधी स्वभाव के थे, अत: पढ़ाई में ध्यान न देने पर वे कभी-कभी पुत्र पर हाथ भी उठा देते थे, जबकि माता सदैव प्रेम से ही समझाती थीं।

(क) रामप्रसाद का जन्म किस मास में हुआ?

(ख) उनके माता-पिता किसके परम भक्त थे?

(ग) राम को पढ़ने से अधिक प्रिय क्या था?

(घ) उनके माता-पिता के स्वभाव में क्या अंतर था?

(ङ) 'शिक्षा-दीक्षा' मे कौन-सा समास है?

(i) द्वंद्व (ii) तत्पुरुष (iii) अव्ययीभाव

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) बिस्मिल ने कौन-कौन सी भाषाएँ सीखीं?

(ख) बिस्मिल जी ने आत्मकथा 'खंड-एक' में किस रोचक घटना की चर्चा की है?

(ग) बिस्मिल अपने माता-पिता में से किससे अधिक प्रभावित थे और क्यों?

(घ) किस कांड के कारण उनकी गिरफ्तारी होनी तय थी? वे कब गिरफ्तार हुए?

(ङ) बिस्मिल ने अपनी माँ से क्या आशीर्वाद माँगा और क्यों?

(च) बिस्मिल ने ऐसा क्यों माना है कि वे अगले कई जन्मों तक अपनी माँ के ऋण से मुक्त नहीं हो पाएँगे? सविस्तार लिखिए।

(छ) आर्यसमाज के प्रति रामप्रसाद की भावनाओं का वर्णन कीजिए।

(ज) गिरफ्तारी के बाद बिस्मिल के साथ क्या हुआ? पाठ के संदर्भ में लिखिए।

(झ) माँ को सामने पाकर बिस्मिल जी की आँखें क्यों गीली हुई होगी? विवेचना कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. (क) वे शब्दांश, जो मूल शब्द से पहले जुड़कर नया शब्द बनाते हैं या उसका विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे- दुर् + भाग्य = दुर्भाग्य।

नीचे लिखे शब्दों से उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए–

(i) समर्पित _____ + _____ (v) सपूत _____ + _____

(ii) संपूर्ण _____ + _____ (vi) दुर्दशा _____ + _____

(iii) सानंद _____ + _____ (vii) उऋण _____ + _____

(iv) संलग्न _____ + _____ (viii) प्रत्येक _____ + _____

2. (ख) वे शब्दांश, जो मूल शब्द के बाद जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं;

जैसे- स्वार्थ + पूर्ण = स्वार्थपूर्ण।

नीचे लिखे शब्दों से मूल शब्द एवं प्रत्यय अलग कीजिए–

(i) शिक्षित _____ + _____ (v) जन्मदाता _____ + _____

(ii) स्वार्थरहित _____ + _____ (vi) चमकीला _____ + _____

(iii) प्रसन्नता _____ + _____ (vii) बुद्धिमान _____ + _____

(iv) हृदयहीन _____ + _____ (viii) शर्मनाक _____ + _____

(ग) विराम चिह्न- लिखते समय भाव-बोध को सरल एवं सुबोध बनाने के लिए विराम देने की आवश्यकता पड़ती है और विराम देने के लिए किए जाने वाले संकेत चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

(i)	पूर्ण विराम	(viii)	उद्धरण चिह्न
(ii)	अपूर्ण विराम या उपविराम	(ix)	कोष्ठक चिह्न
(iii)	अल्प विराम	(x)	निर्देशक चिह्न
(iv)	अर्ध विराम	(xi)	विवरण चिह्न
(v)	विस्मयादिबोधक चिह्न	(xii)	हंसपद चिह्न
(vi)	प्रश्नवाचक चिह्न	(xiii)	लाघव चिह्न
(vii)	योजक चिह्न	(xiv)	लोप चिह्न

- **नीचे लिखे वाक्यों मे उचित विराम चिह्न लगाइए-**

(क) वे प्राय: प्रवचन व्याख्यान आदि चुनते थे

(ख) माँ मेरे मन में एक ही तृष्णा शेष रह गई है

(ग) मैं जो भी हूँ या होने की आशा करता हूँ उसका श्रेय मेरी माँ को जाता है

(घ) राम लक्ष्मण सीता वन को गए

(ङ) मेरी शिक्षा मेरी आत्मिक उन्नति धर्म में मेरी रुचि सब आप ही की कृपा है।

2. (क) **संधि** - संधि का शाब्दिक अर्थ है- मेल। जब दो वर्णों की ध्वनियाँ निकट होने पर आपस में मिलकर एक नया रूप धारण कर लेती हैं, तो वहाँ संधि होती है। जैसे- वचन + अमृत = वचनामृत; इससे पहले शब्द की अंतिम ध्वनि 'अ' है और दूसरे शब्द की पहली ध्वनि 'अ' है। 'अ' + 'अ' के मिलने से 'आ' रूप निर्मित हुआ है। अत: शब्द बना- वचनामृत। स्वरों के इस मेल को कहते हैं। शब्दों को अलग करना कहलाता है।

(ख) स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं-

(i) दीर्घ संधि — शब्द + अर्थ = शब्दार्थ, परि + ईक्षा = परीक्षा, सु + उक्ति = सूक्ति

(ii) गुण संधि — नर + इंद्र = नरेंद्र, यथा + इष्ट = यथेष्ट, पाठ + उपयोगी = पाठोपयोगी

(iii) यण संधि — यदि + अपि = यद्यपि, देवी + आलय = देवालय

(iv) वृद्धि संधि — एक + एक = एकैक, लोक + इष्य = लोकैषणा

(v) अयादि संधि — ने + अयन = नयन, भो + इष्य = भविष्य

- **निम्नलिखित शब्दों के संधि कीजिए-**

विद्या	+	आलय	_____	कवि	+	इंद्र	_____
सुर	+	ईश	_____	राजा	+	ऋषि	_____
सदा	+	एव	_____	अति	+	अधिक	_____
सु	+	आगत	_____	पो	+	अन	_____

- **नीचे लिखे शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-**

प्रोत्साह	_____ + _____		शास्त्रार्थ	_____ + _____	
यथावसर	_____ + _____		युगावतार	_____ + _____	
शुभारंभ	_____ + _____		स्वर्णाक्षर	_____ + _____	
मुनीश्वर	_____ + _____		आत्मार्पण	_____ + _____	
लघुर्मि	_____ + _____		ज्ञानेंद्रिय	_____ + _____	

3. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए-

	विग्रह	समास
(क) स्वार्थरहित	_____	_____
(ख) भारतमाता	_____	_____
(ग) समयाभाव	_____	_____
(घ) तिरंगा	_____	_____
(ङ) देशरक्षा	_____	_____

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) खून खौलना _____

_____

(ख) दिल पसीजना _____

_____

(ग) पापड़ बेलना _____

_____

(घ) हाथ-पाँव फूल जाना _____

_____

(ङ) हाथ न आना _____

_____

क्रियात्मक गतिविधि

- रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा रचित गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'- का अपने साथियों के साथ जोशपूर्ण तरीके से सस्वर गायन कीजिए।
- क्रांतिकारी के जीवन पर बनी फिल्में देखिए; जैसे- 'रंग दे बसंती', 'दि लिजेंड ऑफ भगत सिंह', 'दि फॉरगॉटन हीरो', आदि।
- 'विद्यार्थी का राष्ट्र के प्रति योगदान' शीर्षक पर कक्षा में आशु-संभाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

चंडीगढ़ से शिमला तक

15

जनवरी मास का अंतिम सप्ताह था। शीत-ऋतु अपने पूरे यौवन पर थी। गुरु गोविंद सिंह के ननिहाल की बलिदान-स्थली फतेहगढ़ से हम लोग मोटर द्वारा स्थापत्य की नवीन शैलियों पर निर्मित पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ पहुँचे। देश के विभाजन के बाद बने इस नगर का अपना अनूठा आकर्षण है। यहाँ पहुँचने पर लगता है जैसे हम भारत के नहीं, वरन् पश्चिम के किसी कलात्मक व स्वच्छ शहर में पहुँच गए हों। यहाँ की साफ-सुथरी सड़के, करीने से निर्मित भव्य भवन तथा हजारों की संख्या में अशोक, अमलतास, कचनार और गुलमुहर के हरीतिमा का आवरण ओढ़े वृक्ष यात्रियों के मन-प्राणों पर अमिट छाप अंकित कर देने की क्षमता रखते है। यह नगर ला-कार्बूजिए तथा मैक्सवेल जैसे विश्वविख्यात कलाकारों की देन है। स्थापत्य के इन दोनों विशेषज्ञों ने अनेक नगर निर्मित करवाए थे किंतु चंडीगढ़ के निर्माण में उन्होंने अपने अनूठे स्वप्नों को साकार कर दिखाया। उनके इस सौंदर्य के करिश्में पर ही मोहित होकर पंजाब तथा हरियाणा के लाखों इंसानों की ललचाई हुई निगाहें इस पर अपना आधिपत्य जमाने के लिए आतुर हो उठीं। राजनीतिक वातावरण दूषित हो गया। हड़तालों व अनशनों के दौर शुरू हुए, दोनों राज्यों की जनता के बीच तनातनी उत्पन्न हो गयी; जो अभी तक चल रही है। फिलहाल, चंडीगढ़ दोनों राज्यों की राजधानी है। **वस्तुकला** - वास्तु या मकान बनाने की कला को वास्तुशास्त्र तथा इन विषयों की जानकारी देने वाले ग्रंथो को वास्तुकला कहते हैं।

गत कुछ वर्षों से चंडीगढ़ का रूप बड़ी तेजी से बदल रहा है। स्वर्गीय नेहरू ने इस नगर के निर्माण में विशेष रुचि ली थी। यहाँ पर निर्मित सेक्रेटिस्ट, हाईकोर्ट व अनेक सरकारी कार्यालयों के भवन आधुनिक वास्तुकला के शानदार उदाहरण हैं। भवनों का निर्माण कुछ इस ढंग से किया गया है कि जाड़े के दिनों में खूब धूप व रोशनी मिल सके और गरमी तथा बरसात के मौसम में लू व वर्षा की बौछार से बचाव भी हो सके। खान-पान के हिसाब के चंडीगढ़ उत्तर भारत का शायद सबसे सस्ता नगर है। दूध, दही, होटल में

भोजन, ठेलों पर छोले-भटूरे, हलुआ-पूरी, चाट आदि अपेक्षाकृत सस्ते भावों पर उपलब्ध होते हैं। फैंशन में भी यह नगर बहुत आगे निकलता जा रहा है। नगर से थोड़ी दूर सुखना झील एक सुंदर पिकनिक स्पॉट हैं। रविवार व अन्य अवकाश के दिनों में यहाँ खूब रौनक होती है। नगर के लगभग प्रत्येक भाग से शिवालिका-पहाड़ियाँ अपनी संपूर्ण शोभा लिए दिखाई पड़ती हैं।

चंडीगढ़ देखने के बाद रेल द्वारा हम लोग उनतालीस किमी की दूरी पर स्थित मनोरम नगरी कालका पहुँचे। उत्तर-पश्चिम हिमालय की श्रेणी शिवालिक में समुद्र तल से दो हजार चार सौ फुट की ऊँचाई पर बसी यह एक रमणीक नगरी है। बड़ी लाइन का यह अंतिम स्टेशन है और यहाँ से शिमला के लिए छोटी लाइन शुरू होती है। कालका की स्वच्छता तथा मनोहारी प्राकृतिक सौंदर्य निहारकर निस्संकोच इस नगरी को एक हिल स्टेशन स्वीकार करना पड़ता है। सुंदर पहाड़ी की पृष्ठभूमि लिए हुए यहाँ का मुख्य बाजार, चौड़ा, सीधा व चिन्ताकर्षक है। पावस ऋतु में तो यहाँ की स्वच्छता आँखों में समाई रहती है। कीचड़ का नाम तक नहीं होता वरन् वर्षा की तीव्र बौछारों से यहाँ का बाजार तथा संकरी गलियाँ भी एकदम चमचमाने लगती हैं। बड़े-बड़े नगरों के कोलाहल से दूर यहाँ के शांत वातावरण में पहुँचकर व्यक्ति अपने सांसारिक बंधनों एवं परेशानियों को भूलकर एक अद्‌भुत प्रकार के सुख की अनुभूति करता है। समुद्रतल से लगभग 5,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित हिमाचल प्रदेश की मनोरम नगरी कसौली यहाँ से दृष्टिगोचर होती है। कालका से कसौली तक का पैदल मार्ग केवल आठ-नौ मील का है।

कालका में अपने एक मित्र के सुझाव पर हम दो-तीन मील की दूरी पर घग्घर नदी की सहायक नदियों कोशल्या और झज्जर के संगम पर स्थित प्राचीन, धार्मिक एवं ऐतिहासिक नगरी पंजौर देखने गए। कहा जाता है कि पंजौर तथा उसके आस-पास का क्षेत्र ही महाभारतकालीन विराट नगर था और महाराजा बसंत यहाँ के ही शासक थे। पांडवों ने अपने अज्ञातवास का अंतिम वर्ष यहीं पर व्यतीत किया था। पांडवों के निवास की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इस स्थान का नाम पंचपुर पड़ा, जो समयांतर में पंजौर के नाम से प्रसिद्‌ध हो गया। सन् 1254 ई0 में दिल्ली के शासक नासिद्‌दीन महमूद ने इस क्षेत्र पर आक्रमण कर यहाँ के प्राचीन अवशेषों को क्षति पहुँचाई। मुगल सम्राट औरंगजेब के निकट के रिश्तेदार फिदाय खाँ की जागीर में पंजौर भी सम्मिलित था। उसने इस स्थान की प्राकृतिक छटा देखकर यहाँ पर मनोरम उद्‌यान बनवाए।

पंजौर और उसके निकटवर्ती क्षेत्र में हमारी प्राचीन संस्कृति व कला के अनेक उदाहरण मिलते हैं। यहाँ से भारतीय शिल्पकला के कतिपय अवशेष प्राप्त हुए हैं जिन पर संस्कृत के श्लोक अंकित हैं। पंजौर प्राचीन सरोवरों कुंड़ों की नगरी है। यहाँ का प्रसिद्‌ध कुंड 'द्रौपदी की कहानी' अर्थात् द्रोपदी कुंड है। प्रचलित किंवदंती के अनुसार पांडवों की द्रौपदी इस कुंड में स्नान करती थी। धारणा है कि इस कुंड का जलपान करने से अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है तथा स्नान से चर्म रोग दूर होते हैं। कुंड वास्तव में गुनगुने पानी का चश्मा है जिसके जल में स्वास्थ्यवर्द्‌धक खनिज-पदार्थ का मिश्रण रहता है।

सरोवर को देखने के बाद हमने मुगलशासक फिदाय खाँ द्वारा निर्मित उद्यानों में प्रवेश किया। सुरक्षा हेतु इन उद्यानों को चारों ओर से विशाल दीवारों से घेरा हुआ है। नाना प्रकार के फलदायक वृक्षों, रसवंती लताओं तथा मनोरम वीथिकाओं के सुहावने दृश्य देखकर हृदय झूम उठता है। उद्यान चार भागों में विभाजित है। सुंदर फव्वारे से सुसज्जित सात-आठ फुट चौड़ी नहर इन चारों मंजिलों मे से गुजरती है। गणमान्य व्यक्तियों के ठहरने के लिए उच्चकोटि के फर्नीचर से सुसज्जित कक्ष यहाँ बने हुए हैं। उद्यानों के जलाशय के मध्य में एक सुंदर विनोद कक्ष भी निर्मित है। देश के अन्य भागों में मुगल शासकों द्वारा निर्मित कई उद्यान हैं किंतु पंजौर के मुख्य उद्यानों का अपना महत्व है और दर्शकों के हृदय पर उनकी अमिट छाप बरबस ही अंकित हो जाती है।

पंजौर से शाम को हम पुनः कालका लौट आए। रात वहाँ बिताने के बाद अगले दिन रेल द्वारा शिमला के लिए प्रस्थान किया। यद्यपि सड़क यात्रा की अपेक्षा रेलयात्रा में समय अधिक लगता है। लेकिन रेलयात्रा बड़ी सुखद तथा मन-लुभावनी होती है। नैरोगेज लाइन पर चार-छह छोटे डिब्बों की रेल किसी नागिन की तरह मस्ती से रेंगती हुई बड़ी अच्छी लगती है। रास्ते में पहाड़ों को काट-काटकर बनाए गए पचासों टनल आपका स्वागत करते हैं। रेल चलने की गति का अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि तीन-चार बार हम मित्रों ने किसी मोड़ पर चलती गाड़ी को छोड़ दिया और पगडंडी के रास्ते ऊपर की पहाड़ी पर दिखाई पड़ रहे रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए। रेल पहाड़ियों पर मोड़ काटती हुई दो-तीन मिनट बाद ही पहुँचती और हम पुनः उसमें बैठ जाते। चलती रेल से चारों ओर की सौंदर्य छटा देखकर मन पुलकित हो रहा था।

और जब शिमला के स्टेशन पर गाड़ी पहुँची तो चारों ओर का वातावरण देखकर मन झूम उठा। रात एक होटल में व्यतीत की। अगली सुबह जब माल रोड पर आए तो कुछ बच्चों और किशोरों को बर्फ पर खेलते देखा।

आज के जीवन की लगभग सभी सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हो सकती हैं। विभिन्न प्रकार के महँगे-सस्ते होटल, कॉफी हाउस, नाचघर, सिनेमा व क्लब; यहाँ पर क्रिकेट, फुटबॉल तथा तथा टेनिस आदि खेलने की सुंदर व्यवस्था है। घुड़सवारी के शौकीनों के लिए घोड़े किराये पर मिल जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में तो शिमला हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक दिखाई देता है। तब यहाँ पर क्या पंजाबी, क्या मद्रासी, क्या गुजराती और क्या बंगाली सभी तरह के लोग एक-दूसरे के साथ घूमते नजर आते हैं।

दोपहर को हम जाखू मंदिर के दर्शन करने गए। शिमला आने वाले धार्मिक प्रवृत्ति के लोग इस मंदिर में मस्तक नवाना नहीं भूलते। प्रचलित कथा के अनुसार जब महावीर हनुमान लक्ष्मण जी के लिए हिमालय से संजीवनी लेकर लौट रहे थे तो कुछ देर के लिए उन्होंने इस स्थान पर विश्राम किया था। मंदिर तथा उसके आस-पास के क्षेत्र में काफी बंदर दिखाई पड़ते है। श्रद्धालु भक्त इन्हें हनुमान जी की सेना

मानकर चने आदि खाने को देते हैं। समुद्रतल से लगभग 8,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान सैलानियों के रोमानी मन को व्याकुल किए बिना नहीं रहता। यहाँ से चारों और की बहार देखते ही बनती है। पर्वतों की हिमाच्छदित चोटियों और सब ओर बिखरी पड़ी नैसर्गिक सौंदर्य की अपार राशि को निहारकर हम स्वयं को किसी स्वप्नलोक में पा रहे थे। लगता था मानों प्रत्येक वस्तु अपना वास्तविक रूप तजकर श्वेत हिमकणों में समा जाने के लिए बेकरार हो उठी हो। एकांत जिनको प्रिय है और प्रकृति के जो उपासक हैं उनके लिए, यह एक उपयुक्त स्थान है।

चंडीगढ़ में सैलानियों के आकर्षक का एक और केंद्र है- रॉक गार्डन। आमतौर पर लोग उसे राजगार्डन कहकर पुकारते हैं। यह चंडीगढ़ की प्रसिद्ध झील से सचिवालय को जाने वाले रास्ते पर स्थित है। उसके निर्माता ने इसे बड़े गुप्त रूप से बनवाया है। चंडीगढ़ में जब यह बन रहा था तब किसी को इस बात की बिल्कुल जानकारी नहीं थी कि कुछ ही वर्षों बाद अपने ढंग का गार्डन निर्मित हो जाएगा। बेकार का कूड़ा-कचरा समझी जाने वाली वस्तुओं का किस तरह सुंदर ढंग से उपयोग किया जा सकता है, इसका प्रमाण इसके निर्माता ने दिया है। टेढे मेढ़े अनगढ़ पत्थर व ईंटों के टुकड़े, पुराने कनस्तरों व टूटी क्रॉकरी, टीन के बेकार डिब्बे, बेकार पड़ी बोतलें व शीशियाँ, बिजली के बेकार बल्ब, बेकार चीजों पेड़ों की शाखा व पत्ती, जानवरों की खालों तथा बेकार पड़े संगीत के यंत्रों को इस प्रकार सजाकर रंग-रोगन से पोतकर इस ढंग से फिट करके रखा गया है कि ये सब बेकार वस्तुएँ सजावट का सामान बन गयी हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए इस गार्डन में घास के दो लॉन, दो छोटे-छोटे तालाब तथा कुएँ आदि हैं। यह पाषाण-उद्यान पुरानेपन व नयेपन एवं प्राकृतिक व कृत्रिम के मिश्रण का एक सुंदर उदाहरण है। अनुपयोगी वस्तुओं का इस प्रकार का कुशल उपयोग निहारकर उसके निर्माता की कल्पना शक्ति, सृजन-शक्ति एवं लगन की भूरी-भूरी प्रशंसा करनी पड़ती है। इस पाषाण-उद्यान के निर्माता श्री नेकराम का झोंपड़ीनुमा निवास-स्थान भी इसी में है। श्री नेकराम इस गार्डन को अपना राज्य कहते हैं और स्वयं को इसका सम्राट । वे अभी इसके निखार में लगे हुए हैं और उन्हें आशा है कि कुछ वर्षों बाद वे इसकी और अधिक शोभा-वृद्धि कर लेंगे।

इतिहास साक्षी है कि मुलतान का शासक शमश्द्दीन अल्तमश पंजौर का मोहक प्राकृतिक वातावरण ताकि वहाँ निर्मित धार्मिक स्थान देखकर उतावला हो उठा। वह किसी भी तरह सिरमौर के शासकों से इसे छीन लेना चाहता था। आखिर उसने इस पावन नगरी पर जबरदस्त आक्रमण करके यहाँ के अनेक भव्य मंदिरों को खंडित करवा दिया। 'वाकियाते नासिरी' में लिखा है कि नासिउद्दीन ने भी पंजौर पर हमला करके वहाँ की कला को बहुत क्षति पहुँचाई।

पंजौर की चित्रकला देखने योग्य है। वहाँ गोल गुंबद वाला एक भव्य गुरुद्वारा है। कहा जाता है इसे रियासत पटियाला के महाराजा करमसिंह ने बनवाया था। इस गुरुद्वारे के समीप एक ऊँचे चबूतरे पर बना एक छोटा-सा प्राचीन शिवालय है। इसकी वास्तुकला कला-प्रेमियों तथा दर्शकों को अपनी ओर खींच लेने की क्षमता रखती है। लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व बने इस शिव-मंदिर के पीछे वाले भाग में इसके निर्माता श्री फूलमत की समाधि है। मंदिर में सात दरवाजें हैं पर वे सबके-सब बंद हैं। केवल प्रवेश द्वार ही खुला हुआ है। बाहर से देखने पर यह

शिवालय साधारण-सा लगता है किंतु इसकी दीवारों पर की गई चित्रकला को देखकर चकित रह जाना पड़ता है। इसमें शिवलिंग तथा अनेक सुंदर प्रतिमाएँ दृष्टव्य हैं। प्रवेश द्वार के अंदर की ओर दीवार पर हरि-हर का भव्य चित्र है। हरि विष्णु का रूप है। दोनों देवताओं के मुख तो अलग-अलग हैं पर शरीर एक है। आकृति के चार हाथ हैं। विष्णु की अर्द्ध-आकृति वाले हाथ में कमल व गदा हैं और शिव के हाथ में खोपड़ी और रस्सी है। विष्णु की लक्ष्मी ओर शिव की पार्वती दोनों देवताओं को एक ही शरीर में देखकर चकित हो रही हैं। द्वार के दाहिने ओर स्वर्ग के देवता इंद्र व कुबेर के चित्र हैं। दोनों देव हाथ जोड़कर शिवलिंग की पूजा कर रहे हैं। पास ही शिवभक्तों की आकृतियाँ हैं।ये शिवभक्त ढोल-मृदंग से कीर्तन कर रहे हैं। एक अन्य चित्र में शिव-परिवार को कैलाश-पर्वत पर निवास करते हुए दिखाया गया है। एक चित्र में भगवान शिव से वरदान पाकर बाणासुर तीन लोक का राजा बना हुआ दर्शाया गया है। एक चित्र शिव-पार्वती के विवाह का है। एक दृश्य में बाणासुर की पुत्री ऊषा भगवान श्रीकृष्ण के पौत्र अनुरुद्ध के वियोग में तड़पती हुई दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि यह मंदिर हिदू धर्म के अनुयायियों का है, परंतु इसमें सिक्ख गुरुओं को भी पूरे आदर के साथ दिखाया गया है। गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास तथा गुरु गोविंदसिंह जी के चित्र मन पर अपनी छाप अंकित कर देते हैं।

लगभग 7,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित प्राकृतिक छटा तथा स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु से समृद्ध शिमला नगर की गणना भारत के प्रथम श्रेणी के हिल-स्टेशनों में की जाती है। अंग्रेजी शासनकाल में लंबे समय तक यह नगर शासन की शासन ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा । कहा जाता है कि सन् 1815-16 ई० में अंग्रेजों ने गोरखा युद्ध के बाद शिमला को स्वास्थ्यप्रद स्थान समझकर नेपाल के महाराजा से ले लिया। उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक तक यहाँ अनेक सरकारी कार्यालय बन गए थे तथा लोगों ने अपने घर निर्मित करवा लिये थे। सन् 1868 ई० में गवर्नर जनरल सर जॉन लॉरेंस के काल में यह नगर भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बना।

शिमला में अनेक स्थान सैलानियों को अपनी ओर खींचते हैं। गोल्फ के शौकीनों के लिए एक विशाल मैदान है। रिज से एक मील नीचे घुड़दौड़ का मैदान है। यहाँ का मुख्य बाजार माल रोड रिज पर स्थित है। यहाँ प्रायः सैलानियों की चहल-पहल रहती है। शिमला नगर से थोड़ी दूरी पर घने जंगलों में चैल नामक दर्शनीय स्थान है। आखेट के शौकीन यहाँ आते रहते हैं। महाराजा पटियाला प्रायः कई-कई दिनों तक यहाँ निवास करते थे। यहाँ से पर्वतों के नीचे प्रवाहित सतलुज नदी का दृश्य बड़ा सुखद प्रतीत होता है। यहाँ रात के समय कसौली तथा शिमला नगर की जगमगाती बत्तियाँ इस प्रकार दृष्टिगोचर होती हैं मानो आकाश में सहस्त्रों सितारे जगमगा रहे हों।

पश्चिमी सभ्यता में रंगे इस नगर ने राष्ट्रीय आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। गांधी-इर्विन समझौते के समय गांधी जी, कस्तूरबा जी, सरदार पटेल, सीमांत गांधी व, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय यहाँ पधारे थे। शिमला की गोलमेज कॉन्फ्रेन्स का अपना महत्व है। भारत-विभाजन के संबंध में भी नेताओं की वार्ताएँ इसी नगर में हुई थीं। सन् 1971 ई० में भारत-पाक युद्ध के बाद स्वर्गीया श्रीमती इंदिरा गांधी तथा भुट्टों के मध्य शिमला समझौता भी यहीं संपन्न हुआ था।

शब्द-अर्थ

करीने से — भली प्रकार से
आतुर — बेचैन
पावस ऋतु — वर्षा ऋतु
अवशेष — बाकी, बचा हुआ
गणमान्य — श्रेष्ठ
करिश्मा — जादू
तनातनी होना — झगड़ा होना
अनुभूति — सुख या दुःख का अनुभव
वीथिका — गली
टनल — सुरंग मुख

बरबस — जबरदस्ती, बिना किसी कारण के
संजीवनी — एक औषधि
बेकरार — जिसे शांति या चैन न हो, विकल
निहारकर — देखकर
भूरी-भूरी प्रशंसा — बहुत-बहुत बड़ाई
दृष्टव्य — देखने योग्य
धार्मिक प्रवृत्ति — धर्म के अनुसार स्वभाव
तजकर — त्याग कर
उपासक — उपासना करने वाला
सृजन-शक्ति — पैदा करने की ताकत
साक्षी — गवाह
सैलानी — दूर स्थान से आए घूमने वाले लोग।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक कहाँ से घूमने निकला?
(ख) किस लिहाज से चंडीगढ़ उत्तर भारत का सबसे सस्ता नगर कहा जाता है?
(ग) पाठ के अनुसार कहाँ से शिमला के लिए छोटी लाइन शुरू होती है?
(घ) एक धारणा के अनुसार किस कुंड मे स्नान करने से चर्म रोग दूर होते हैं?
(ङ) शिमला में किन लोगों को घोड़े किराये पर मिलते हैं?
(च) गांधी-इर्विन समझौते के समय कौन-कौन शिमला आए थे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस नगर/नगरी में विशेष रुचि ली थी—
☐ चंडीगढ़ ☐ कालका ☐ शिमला

(ख) चंडीगढ़ से रेलगाड़ी द्वारा कालका की दूरी है—
☐ उनतालीस किमी ☐ पचास किमी ☐ उनचास किमी

(ग) घग्घर है—
☐ एक नगर का नाम ☐ एक गाँव का नाम ☐ एक नदी का नाम

(घ) यह स्थान पंजौर में स्थित नहीं है-
☐ द्रौपदी की कहानी ☐ फिदाय खाँ द्वारा निर्मित उद्यान ☐ धारामंडल सरोवर

(ङ) 'वाकियाते नासिरी' के अनुसार पंजौर पर हमला करके क्षति पहुँचाने वाला शासक था-
☐ शाहजहाँ ☐ नासिद्दीन ☐ महमूद गजनवी

(च) इस सन् में गवर्नर सर जॉन लॉरेंस के काल में शिमला भारत की ग्रीष्मकाल राजधानी बना-
☐ सन् 1896 ई० में ☐ सन् 1931 ई० में ☐ सन् 1868 ई० में

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) नगर के लगभग प्रत्येक भाग से _____ पहाड़ियाँ अपनी संपूर्ण शोभा लिए दिखाई पड़ती है।

(ख) सन् _____ में दिल्ली के शासक नासिउद्दीन महमूद ने इस क्षेत्र पर आक्रमण कर यहाँ के प्राचीन _____ को क्षति पहुँचाई।

(ग) पंजौर से शाम को हम पुन: _____ लौट आए। रात वहाँ बिताने के बाद अगले दिन रेल द्वारा _____ के लिए प्रस्थान किया।

(घ) पर्वतों की हिमाच्छादित _____ और सब ओर बिखरी पड़ी _____ की अपार राशि को निहारकर हम स्वयं को किसी _____ में पा रहे थे।

(ङ) इतिहास साक्षी है कि मुलतान का शासक _____ पंजौर का मोहक प्राकृतिक वातावरण तथा वहाँ निर्मित धार्मिक स्थान देखकर उतावला हो उठा।

(च) एक दृश्य में बाणासुर की पुत्री _____ भगवान _____ के पौत्र अनुरुद्ध के वियोग में तड़पती हुई दृष्टिगोचर होती है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) फतेहगढ़ का नाम क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) चंडीगढ़ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

(ग) पंजौर का वास्तविक नाम क्या है और वह नाम क्यों पड़ा?

(घ) जाखू मंदिर क्यों प्रसिद्ध है? उसके सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

(ङ) चंडीगढ़ के रॉक गार्डन की क्या विशेषताएँ हैं?

(च) 'शिमला की प्राकृतिक छटा दर्शनीय है', इस विषय पर एक लेख लिखिए।

(छ) निम्न तिथियों में हुई घटनाएँ बताइए–

(अ) सन् 1254 ई० _____ (ब) सन् 1815-16 ई० _____

(स) सन् 1864 ई० _____ (द) सन् 1971 ई० _____

(य) सन् 1764 ई० _____ (र) सन् 1675 ई० _____

4. निम्नलिखित विषय शिमला से संबंधित हैं। इन पर अपने मन में उठने वाले विचार लिखिए–

(क) महँगे सस्ते होटल

_____

(ख) किराए के घोड़ों की घुड़सवारी

_____

(ग) क्रिकेट आदि खेलने की व्यवस्था

_____

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) निर्माण _____ (ख) आक्रमण _____ (ग) एकता _____

(घ) राजधानी _____ (ङ) प्राचीन _____ (च) दर्शक _____

2. निम्नलिखित वाक्यों में स्थानवाचक क्रिया-विशेषण छाँटिए–

(क) रविवार व अन्य अवकाश के दिनों में यहाँ खूब रौनक रहती है।

(ख) वहाँ से हम कालका लौट आए।

(ग) हम अब नीचे उतरते जा रहे थे।

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण छाँटिए तथा उसका नाम लिखिए–

(क) गत कुछ वर्षों से चंडीगढ़ का रूप बड़ी तेजी से बदल रहा है।

(ख) महाराज बसंत यहाँ के ही शासक थे।

(ग) उनके लिए यह उपर्युक्त स्थान है।

4. निम्नलिखित शब्दों को क्रिया-विशेषण के रूप में लिखिए तथा क्रिया-विशेषण के उस प्रकार का नाम भी लिखिए जिसका प्रयोग किया गया है–

शब्द	वाक्य	क्रिया-विशेषण का प्रकार
(क) ऊपर	_____	_____
(ख) नहीं	_____	_____
(ग) अवश्य	_____	_____
(घ) कभी	_____	_____
(ङ) कल	_____	_____
(च) उतना	_____	_____
(छ) किसलिए	_____	_____
(ज) हाँ जी	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- अपने मित्र को पत्र लिखिए चंडीगढ़ और शिमला अपने साथ जाने के लिए कहिए।
- चंडीगढ़ पंजाब तथा हरियाणा की कुछ पौराणिक लोककथाओं के बारे में साहित्यिक व चित्रात्मक रूप से जानकारी एकत्रित कर कक्षा के बुलेटिन बोर्ड पर लगाइए।

दिल्ली मेट्रो 16

दिल्ली मेट्रो का आरंभ 24 दिसंबर 2002 में हुआ था। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली की प्रथम मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाकर शाहदरा से तीस हजारी के बीच चलने वाली बहु-प्रतीक्षित परियोजना की शुरूआत की। इसके पश्चात् इसका विस्तार बरवाला तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से क्रेंदीय सचिवालय के मध्य और बाराखंभा रोड (कनॉट प्लेस-राजीव चौक) से द्वारका तक हुआ।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डी० एम० आर० सी०) के अनुसार प्रतिदिन लगभग सात लाख यात्री मेट्रो रेल में सफर करते हैं, जिनमें से लगभग दो लाख यात्री द्वारका-इंद्रप्रस्थ मार्ग (लाइन नंबर तीन) पर यात्रा करते हैं। इस मार्ग की व्यस्तता को देखते हुए इसमें अब आठ नई मेट्रो रेलों को और जोड़ा गया है।

जहाँ पहले इन गाड़ियों का प्रचालन पाँच मिनट के अंतराल पर किया जाता था, वहीं अब तीन मिनट के अंतराल पर ये गाड़ियाँ चल रही हैं। इन गाड़ियों के फेरों की संख्या भी 349 से बढ़ाकर 362 कर दी गई है। इन आठ नई गाड़ियों को जोड़कर मेट्रो ट्रेन की संख्या 68 हो गई हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से क्रेंदीय सचिवालय के बीच लाइन संख्या दो पर भी गाड़ियों के समय में बदलाव किया गया है। ये गाड़ियाँ अब तीन मिनट के अंतराल से चलाई जाती। मेट्रो के इस बेड़े में छह और नई गाड़ियाँ शीघ्र ही शामिल किए जाने की योजना है। आने वाले समय में इस सेवा का लाभ लगभग 42 लाख यात्री उठा सकेंगे।

दिल्ली में निरंतर बढ़ते प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, और चरमराती सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को देखते हुए दिल्ली में मेट्रो रेल सेवा का परिचालन अत्यंत आवश्यक हो गया हैं। इसके लिए सन् 1995 में केंद्र और दिल्ली सरकार ने संयुक्त रूप से 'डी0 एम० आर० टी० एस०' का गठन किया।

मेट्रो एक सर्वोत्कृष्ट परिवहन माध्यम है। आधुनिक समय में जहाँ दिल्ली का प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता जा रहा है, वहीं आप मेट्रो में यात्रा करते समय चैन की साँस ले सकते हैं। इतना ही नहीं, मेट्रो के चलने से लगभग पाँच अरब रुपये के ईंधन की बचत तो है ही, साथ ही वातावरणीय प्रदूषण के स्तरों में भी 50 प्रतिशत की कमी देखी गई है। मेट्रो सेवा हमारे लिए अधिक सुविधाजनक और स्वास्थ्यप्रद है। समय के अभाव के कारण हमें तनाव होता है किंतु यह सेवा हमारे लिए समय की बचत करके हमें विदेश के समान सुख-सुविधाओं को अनुभव कराती है।

यह संपूर्ण प्रणाली स्वचालित है। इसकी पटरियाँ कहीं जमीन पर, कहीं जमीन के ऊपर खंभें खड़े करके और कई स्थानों पर जमीन के नीचे बिछाई गई हैं।

भूमिगत स्टेशनों पर वातानुकूलन के साथ-साथ आवश्यकतानुसार वेंटीलेशन (वायु के आने-जाने) का भी प्रबंध किया गया है। प्रत्येक स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण बनाया गया है। ट्रेनों के आवागमन और समय की जानकारी हेतु सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली की व्यवस्था की गई है। स्टेशनों पर ऑप्टिकल फाइबर लाइन द्वारा दूर-संचार प्रणाली की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। इसकी केबलों में ध्वनि और डाटा प्रेषण की भी क्षमता है। सभी यात्रियों के लिए एस्केलेटर की तथा अपंग यात्रियों के लिए लिफ्ट जैसी सुविधाएँ भी प्रदान की गई हैं। इन ट्रेनों में प्रवेश एवं निकास के लिए माइक्रोप्रोसेसर द्वारा नियंत्रित स्वचालित दरवाजे लगाए गए हैं। मेट्रो रेल परिसर में यात्रियों के लिए बुक-स्टॉल, रिफ्रेशमेंट स्टॉल, रेस्टोरेंट, स्नैकप्वाइंट, न्यूजपेपर स्टैंड, मेडिसन स्टॉल तथा ए0 टी0 एम0 जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

अब मेट्रो ब्रॉड गेज के स्थान पर स्टैंडर्ड गेज पर चलेगी।

दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन 'डी0 एम0 आर0 सी0, ने मेट्रो विस्तार के दूसरे चरण में इंजनों, डिब्बों और पटरियों की बनावट में परिवर्तन करने का निर्णय किया है। अब केंद्रीय सचिवालय से बदरपुर (20.16 कि०मी०), इंद्रलोक से मुंडका (18.50 कि०मी०) तथा नई दिल्ली से एयरपोर्ट (19.50 किमी०) के बीच - इन तीनों नए मार्गों पर - वर्तमान ब्रॉड गेज की जगह स्टैंडर्ड गेज की लाइनें बिछाई गई हैं। ये तीनों लाइनों को वर्ष 2010 में शुरू कर दिया गया। इस समय जो गाड़ियाँ ब्रॉड गेज पर चल रही हैं, वे नई लाइनों पर नहीं दौड़ पाएँगी क्योंकि ब्रॉड गेज की चौड़ाई 1676 मिमी0 तथा स्टैंडर्ड गेज की चौड़ाई 1435 मिमी0 है। इन नई गाड़ियों की अपेक्षा यात्रियों के बैठने की क्षमता भी कम होगी। यद्यपि इन नई लाइनों पर भी चार डिब्बों वाली गाड़ियाँ ही चलाई जाएँगी।

यात्रियों को थोड़ी-सी असुविधा का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि दिल्ली विश्वविद्यालय से बदरपुर जाने के लिए उन्हें सीधी गाड़ी नहीं मिलेगी, बल्कि केंद्रीय सचिवालय पर आकर बदरपुर के लिए दूसरी गाड़ी चेंज करनी पड़ेगी। जबकि गुड़गाँव जाने के लिए जहाँगीरपुरी से केंद्रीय सचिवालय होती हुई मेट्रो सीधे गुड़गाँव तक चलने लगी। केंद्रीय सचिवालय से गुड़गाँव जाने वाली लाइन ब्रॉड गेज पर ही होगी। ये तीनों लाइनें वर्ष 2010 में चालू हो गई हैं।

एयरपोर्ट मेट्रो – नई दिल्ली से एयरपोर्ट को जाने वाली इस नई मेट्रो में खड़े होकर यात्रा करने का कोई विकल्प नहीं है अर्थात् इस ट्रेन में मात्र उतनी ही सवारियाँ बैठेंगी जितनी सीटें उपलब्ध होंगी। नई दिल्ली से एयरपोर्ट के बीच लगभग 19 किलोमीटर की लंबाई में बिछाई गई मेट्रो की यह एक्सप्रेस लाइन स्टैंडर्ड गेज की तो है ही, इसके सवारी करने और सामान रखने के डिब्बे भी बिल्कुल अलग-अलग हैं, जिन्हें विशेष रूट से तेज गति से चलने के योग्य बनाया गया है। खासतौर से यह गाड़ी हवाई यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए चलाई जा रही है। यह ट्रेन शिवाजी स्टेडियम स्टेशन पर सवार होने वाले यात्रियों को मात्र 15 से 16 मिनट में पालम एयरपोर्ट पहुँचा देती है।

यात्रियों की चेक-इन भी नई दिल्ली या शिवाजी स्टेडियम स्टेशनों पर होगी और उनके सारे सामान को एक अलग डिब्बे में

रखा जाता है। एयरपोर्ट पहुँचने पर उनका यह सामान सीधे हवाई जहाज में चढ़ाया जाता है। यात्रियों की जानकारी हेतु इस एयरपोर्ट मेट्रो के डिब्बों में टेलीविजन और हवाई उड़ानों की सूचना की भी व्यवस्था है।

सन् 2010 में ही द्वारका से राजीव चौक होते हुए सीधे आनंद विहार तक और अक्षरधाम से नोएडा तक मेट्रो रेल शुरू हो चुकी है तथा द्वारका से सीधे राजीव चौक होते हुए आनंद विहार तक मेट्रो शुरू हो चुकी है। आनंद विहार से गाजियाबाद तक जल्दी ही मेट्रो शुरू करने का प्रावधान है। अब दिल्ली विश्वविद्यालय से जहाँगीरपुरी तथा इंद्रलोक से मुंडका तक मेट्रो रेल सेवा शुरू हो चुकी है।

स्मार्ट कार्ड–

स्मार्ट कार्ड एक प्रकार का पास होता है। इसे 'यात्री कार्ड' भी कहते हैं। इसका प्रयोग मेट्रो रेल में यात्रा करने हेतु किया जाता है। एक महीने के लिए हम 100 रुपये का कार्ड खरीदकर 110 रुपये की यात्रा कर सकते हैं।

अब तक कार्ड खरीदने वाले ग्राहकों को 10 प्रतिशत का बोनस दिया जाता रहा है। किंतु 4 जून 2007 से स्मार्ट कार्ड के नियमों में कुछ बदलाव किए गए हैं। जिस पर ग्राहकों को अब बोनस के बदले 10 प्रतिशत का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इस डिस्काउंट के करने से जहाँ मेट्रो को प्रति यात्री 100 रुपये मिलते थे, वहीं अब यह राशि घटाकर आधी कर दी गई है।

मेट्रो की यात्रा करते समय निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना अति आवश्यक है-

1. टिकट लेते समय पंक्ति में खड़े हों।
2. आपका सामान 15 किलोग्राम से अधिक न हो।
3. मेट्रो ट्रेन की छत पर न चढ़ें।
4. इस बात का ध्यान रखें कि ट्रेन प्रत्येक प्लेटफॉर्म पर केवल 30 सेकंड ही रुकती है।
5. मेट्रो के दरवाजों को खोलने के लिए जबरदस्ती न करें।
6. पालतू जानवरों को स्टेशनों पर न लाएँ।
7. एस्केलेटर के बायीं ओर खड़े हो और चलते समय दायीं ओर रहें।
8. प्लेटफॉर्म पर बनी पीली लाइनों को पार न करें।
9. अपंगों के लिए बनाई गई लिफ्ट का प्रयोग न करें।
10. स्टेशन व रेलगाड़ी में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।
11. सहयात्रियों के साथ सहयोग करें।
12. आइए, उपर्युक्त निर्देशों का पालन करके हम सुरक्षित, तीव्र एवं स्वास्थ्यप्रद यात्रा को अपने जीवन का एक भाग बनाएँ।

शब्द-अर्थ

प्रतिदिन	– रोजाना	**सर्वोत्कृष्ट**	– सबसे बढ़िया
वातानुकूलित	– एयरकंडीशन्ड	**चैन**	– सुकून, राहत
सुखानुभूति	– सुख का एहसास, आराम	**संपूर्ण**	– समस्त
भूमिगत	– जमीन के नीचे	**यातायात**	– आवागमन
आवागमन	– आने-जाने	**पश्चात**	– बाद में

ऐस्केलेटर – बिजली से चलने वाली सीढ़ियाँ
रिफ्रेशमेंट स्टॉल – जल-पान करने की दुकान
वेंटिलेशन – हवा के आने-जाने का प्रबंध
उद्घोषणा प्रणाली – सूचना देने या बोलकर बताने का प्रबंध
बहु-प्रतीक्षित – जिसका इंतजार काफी लंबे समय से किया जा रहा हो
निर्देश – नियम
एयरपोर्ट – हवाई अड्डा
स्वचालित – अपने आप चलने वाली

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) दिल्ली में सबसे पहली मेट्रो रेल को हरी झंडी किसने दिखाई?
(ख) मेट्रो रेल का मार्ग किस प्रकार बनाया गया है?
(ग) दिल्ली में पहली मेट्रो रेल कब और कहाँ से कहाँ तक चली?
(घ) 'डी० एम० आर० टी० एस०' का गठन किसने किया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) दिल्ली मेट्रो का आरंभ कब हुआ था?
☐ 23 दिसंबर 2002 ☐ 24 दिसंबर 2002 ☐ 21 दिसंबर 2002

(ख) प्रतिदिन लगभग कितने लाख यात्री मेट्रो रेल में सफर करते हैं?
☐ चार ☐ आठ ☐ सात

(ग) मेट्रो ट्रेनों में प्रवेश तथा निकास के लिए किसके द्वारा नियंत्रित स्वचालित दरवाजे लगाए गए हैं।
☐ एस्केलेटर ☐ दोनों ☐ माइक्रोप्रोसेसर

(घ) स्मार्ट कार्ड एक प्रकार का क्या होता है?
☐ पोस्ट कार्ड ☐ स्मार्ट कार्ड ☐ मेट्रो कार्ड

(ङ) हमें एस्केलेटर के किस ओर खड़ा होना चाहिए?
☐ दायीं ओर ☐ बीच में ☐ बायीं ओर

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) आज प्रतिदिन लगभग _____ लाख यात्री मेट्रो रेल में सफर करते है। (तीन, पाँच, सात)

(ख) दिल्ली की प्रथम मेट्रो रेल को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री _____ ने हरी झंडी दिखाकर _____ परियोजना की शुरूआत की। (बहु-प्रतीक्षित, सुंदर, चंद्रशेखर, सोनिया गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी)

(ग) सर्वप्रथम मेट्रो रेल शाहदरा से _____ तक चलाई गई थी। (राजीव चौक, तीस हजारी, पुल बंगश)

(घ) इंद्रलोक से मुंडका की दूरी _____ किमी० तथा केंद्रीय सचिवालय से बदरपुर की दूरी _____ किमी० है। (20.16, 18.50, 19.50)

(ङ) ब्रॉड गेज की चौड़ाई _____ मिमी० और स्टैंडर्ड गेज की चौड़ाई _____ मिमी० है। (1435, 1676, 1535, 1776)

(च) प्लेटफॉर्म पर बनी पीली लाइनों को पार _____। (करना चाहिए, नहीं करना चाहिए)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दिल्ली में मेट्रो रेल का परिचालन क्यों आवश्यक हो गया है?

(ख) सन् 1995 में मेट्रो रेल परिचालन के लिए किस संस्था को गठित किया गया?

(ग) स्मार्ट कार्ड के बारे में आप क्या जानते हैं?

(घ) मेट्रो रेल परिसर में किन-किन सुविधाओं का प्रबंध किया गया है?

(ङ) स्टैंडर्ड गेज पर चलने वाली मेट्रो रेल में क्या-क्या परिवर्तन किए गए हैं?

(च) नई मेट्रो रेल कौन-कौन-से मार्गों पर चल रही है?

(छ) एयरपोर्ट मेट्रो रेल के बारे में आप क्या जानते हैं? इसमें यात्रियों को मिलने वाली सुविधाओं का वर्णन कीजिए।

(ज) मेट्रो रेल में यात्रा करते समय हमें किन-किन निर्देशों का पालन करना चाहिए?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

सुविधा	_____	आरंभ	_____	हानिकारक	_____
व्यस्तता	_____	वृद्धि	_____	गमन	_____
निकटवर्ती	_____	सार्वजनिक	_____	आधुनिक	_____
उपलब्ध	_____	स्वच्छता	_____	तीव्र	_____

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संग्रहालय	–	_____	+ _____	सुगम	–	_____	+ _____
उद्घोषणा	–	_____	+ _____	सचिवालय	–	_____	+ _____
निरंतर	–	_____	+ _____	देवालय	–	_____	+ _____
अनुकूल	–	_____	+ _____	सर्वोत्कृष्ट	–	_____	+ _____
अत्यावश्यक	–	_____	+ _____				

3. निम्नलिखित शब्दों में बहुवचन रूप लिखिए–

रेल	–	_____	पटरी	–	_____
गाड़ी	–	_____	लाइन	–	_____
डिब्बा	–	_____	दरवाजा	–	_____

सवारी – _____ पर्दा – _____

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) हरी झंडी दिखाना – _____

(ख) आँखों में धूल झोंकना – _____

(ग) कलई खुलना – _____

(घ) खटाई में पड़ना – _____

(ङ) दाँत खट्टे करना – _____

(च) दुम दबाकर भागना – _____

(छ) धाक जमाना – _____

(ज) चिकना घड़ा – _____

क्रियात्मक गतिविधि

1. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार वाक्य परिवर्तित कीजिए–

उदाहरण – इस परियोजना की शुरूआत की गई।

इस परियोजना की शुरूआत हो गई।

(क) विद्युत वितरण व्यवस्था लागू की गई।

_____

(ख) वातावरणीय प्रदूषण में 50 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

_____

- **यदि आपने मेट्रो रेल में यात्रा का है, तो अपना अनुभव लिखिए।**
- **दिल्ली की यातायात-व्यवस्था पर एक लेख लिखिए।**

छोटा जादूगर 17

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। चारों ओर हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। उस छोटे फुहारे के पास एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में ताश के कुछ पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीरता के साथ धैर्य की रेखा थी। उसकी ओर न जाने क्यों मैं आकर्षित हुआ? उसके अभाव में भी कुछ संपूर्णता थी। मैंने पूछा, ''क्यों जी! तुमने क्या देखा?'' ''मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा लगा। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा ताश का खेल तो मैं दिखा सकता हूँ।'' उसने बड़े जोश से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा– ''और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?'' ''नहीं, मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।'' मैंने कहा– ''तो चलो, मैं वहाँ तुम्हें ले चलूँ।'' मैंने मन ही मन कहा– ''भाई! आज के तुम ही मित्र रहे।'' उसने कहा– ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा– ''तो चलो पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने हाँ के बहाने सिर हिला दिया। मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही मैंने उससे पूछा, ''तुम्हारे घर में और कौन-कौन हैं?''

''माँ और बाबूजी।''

''उन्होंने तुम्हें यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?''

''बाबूजी जेल में हैं।''

''क्यों?''

''देश के लिए।'' वह गर्व से बोला।

''और तुम्हारी माँ?''

''वह बीमार हैं।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा-

''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर यदि आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ पैसे दे दिए होते तो मुझे तसल्ली हो जाती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ जी बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया।''

''कहाँ?''

''जेल में। जब कुछ लोग खेल तमाशा देखते ही है, तो क्यों न मैं दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना भी पेट भरूँ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्याग्र हो उठा। मैंने उससे कहा– ''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।''

हम दोनों उस जगह पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिला दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रुमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिए।

लड़के ने कहा– ''बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।''

वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा– ''इतनी जल्दी आँखे बदल गईं।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता हुआ सब देखता रहा। झूले के लोग का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा– ''बाबूजी!'' मैंने पूछा– ''कौन?''

''मैं हूँ, छोटा जादूगर!''

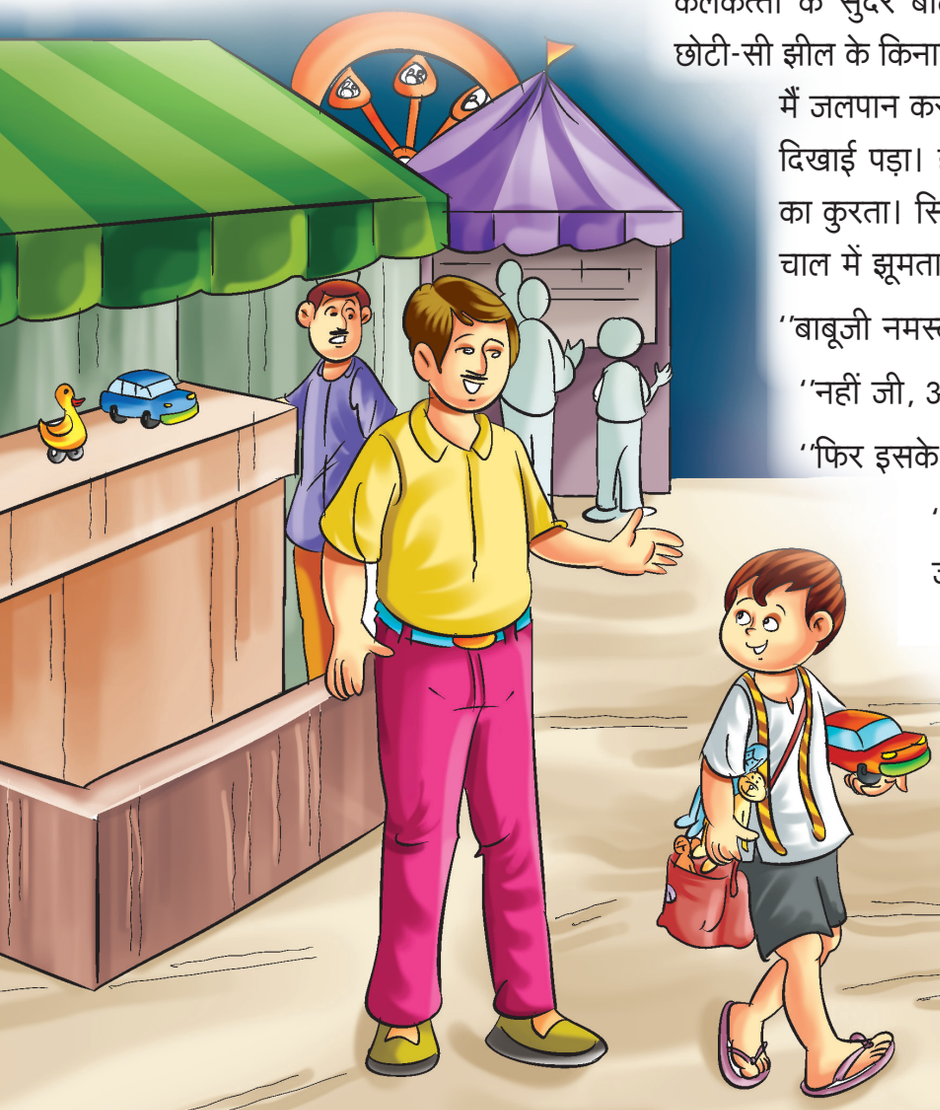

कलकत्ता के सुंदर बॉटेनिकल- उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मैला रुमाल सूत की रस्सी से बँधा था। मस्तानी चाल में झूमता हुआ आकर कहने लगा-

''बाबूजी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ!''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।''

''फिर इसके बाद गाना-बजाना होगा, बाबूजी?''

''नहीं जी, तुम्हें.....'' मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था, तभी श्रीमती जी ने कहा– ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती जी की बोली में माँ की-सी वह मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल

में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की बातों से ही खेल हो रहा था। सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक की जरूरतों ने उसे जल्दी ही चतुर बना दिया। यही तो संसार है। ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा– ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती जी ने धीरे से एक रुपया दे दिया। वह उछल पड़ा।

मैंने कहा– ''लड़के!''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा– ''अच्छा, तुम इस रुपए से क्या करोगे?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।'' मेरा विवेक अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध हो कर सोचने लगा-

''ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!''

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले गए।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। डूबते हुए सूर्य की अंतिम किरण पेड़ों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। चारों ओर सुनसान था।

हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाल खड़ा था। मोटर रोककर उससे पूछा– ''तुम यहाँ कहाँ?''

''मेरी माँ यहीं है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर डालते हुए कहा– ''माँ!'' मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया। चलते-चलते एक बार फिर उस बाग को देखने की इच्छा हुई।

साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी.....। मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा हुआ था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब होते हुए भी छोटे जादूगर की वाणी में प्रसन्नता की वह तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता। उसे मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए मूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा– ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नही?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा।

''तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए!''

उसने कहा– ''क्यों न आता!''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, ''जल्दी चलो।'' मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहँचा। जादूगर दौड़कर झोपड़े में ''माँ-माँ'' पुकारते हुए घुसा। मैं भी साथ था, किंतु स्त्री के मुँह से 'बे.....' निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर पड़े जादूगर उससे लिपट रो रहा था। मैं भौंचक्का खड़ा था। उस साफ धूप में सारा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नाच रहा था।

— जयशंकर प्रसाद

लेखक परिचय

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, नाटककार, उपन्यासकार एवं कथाकार जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक संभ्रांत वैश्य परिवार में सन् 1889 में हुआ था। वे हिंदी, संस्कृत, फारसी और उर्दू भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। 'अजातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी' और 'चंद्रगुप्त' इनकी प्रमुख नाट्य रचनाएँ हैं। 'कंकाल', 'तितली' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'कामायनी', 'आँसू', 'लहर', 'झरना' आदि इनकी सुप्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं। सन् 1937 में इनकी मृत्यु हो गई। अपने छोटे-से जीवन में प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य का अत्यधिक संवर्धन किया।

शब्द-अर्थ

कार्निवल	—	मेला	**निकम्मा**	—	बेकार
तिरस्कार	—	अपमान या निरादर	**रूकावट**	—	बाधा
पथ्य	—	रोगी का भोजन	**दीर्घ निःश्वास**	—	गहरी साँस
व्याग्र	—	बेचैन	**हिंडोले**	—	झूले
बटोरना	—	एकत्रित करना	**जीविका**	—	जीवन निर्वाह का साधन
ईर्ष्या	—	जलन	**चिथड़े**	—	फटे-पुराने कपड़े
तरी	—	तरावट	**मूर्तिमान**	—	जड़वत, स्थिर
भौंचक्का	—	आश्चर्यचकित	**दुर्बल**	—	कमजोर

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) छोटा जादूगर लेखक से पहली बार कहाँ मिला?

(ख) छोटे जादूगर ने कितने खिलौने बटोरे?

(ग) छोटे जादूगर ने अपने पिता के विषय में क्या बताया?

(घ) छोटा जादूगर दूसरी बार लेखक से कहाँ मिला?

(ङ) लेखक की पत्नी ने खेल दिखाने के लिए लड़के को कितने पैसे दिए?

(च) तीसरी बार लेखक ने जादूगर को कपड़े पर रंगमंच सजाकर खेल दिखाते हुए कहाँ देखा?

लिखित

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा हुआ था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब होते हुए भी छोटे जादूगर की वाणी में प्रसन्नता की वह तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता। उसे मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए मूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा— ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नही?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा।

''तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए!''

उसने कहा— ''क्यों न आता!''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, ''जल्दी चलो।'' मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

(क) लेखक ने छोटे जादूगर को कहाँ और किस स्थिति में देखा?

(ख) दूसरों को हँसाने की चेष्टा में छोटे जादूगर का स्वर क्यों लड़खड़ा रहा था?

(ग) भीड़ में लेखक को देखकर छोटे जादूगर की स्थिति कैसी हो गई?

(घ) छोटे जादूगर द्वारा ''क्यों न आता!'' कहने से कौन-सा भाव झलकता है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लड़के ने लेखक को कार्निवल के मैदान में आने का क्या कारण बताया?

(ख) लेखक ने लड़के को कितने टिकट खरीदकर दिए?

(ग) हिंडोले से लेखक को किसने पुकारा?

(घ) लेखक की पत्नी द्वारा दिए गए रुपये से छोटे जादूगर ने क्या-क्या खरीदा?

(ङ) लता-कुंज का वर्णन कीजिए।

(च) पहली बार छोटे जादूगर को देखकर लेखक को उसके अभाव में भी संपूर्णता की झलक क्यों दिखाई दी?

(छ) तेरह-चौदह वर्ष की आयु में ही वह बालक अपने परिवार की जिम्मेदारी क्यों उठा रहा था?

(ज) बॉटेनिकल-उद्यान में छोटे जादूगर का खेल देखने वाले हँसते-हँसते लोट-पोट क्यों हो गए?

भाषा-ज्ञान

1. (क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

संसार	_____	_____	माँ	_____	_____
मनुष्य	_____	_____	आकाश	_____	_____
कमल	_____	_____	संध्या	_____	_____
पानी	_____	_____	उद्यान	_____	_____

(ख) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए–

(i) जो कर्म न करता हो _____

(ii) जिसकी कल्पना न की जा सके _____

(iii) जिसका नाम न हो _____

(iv) जिसका मन कहीं और लगा हुआ हो _____

(v) निरंतर कर्मशील रहने वाला _____

(vi) जादू का खेल दिखाने वाला _____

2. शब्द-युग्म- योजक-चिह्न लगाकर जो शब्द जोड़े में प्रयोग किए जाते हैं, वे 'शब्द युग्म' कहलाते हैं। इनके प्रयोग से मूल कथन के अर्थ में विशेषता आ जाती है। जैसे- चलते-चलते अर्थात् जाते हुए

शब्द युग्म के छह भेद होते हैं–

(i) पुनरुक्त शब्द-युग्म — बार-बार, रह-रह, टुकड़े-टुकड़े

(ii) विलोम शब्द-युग्म — सुबह-शाम, दिन-रात

(iii) परसर्ग शब्द-युग्म — अधिक-से-अधिक, कम-से-कम

(iv) सजातीय शब्द-युग्म — गाना-बजाना, खेल-तमाशा

(v) सार्थक-निरर्थक शब्द-युग्म — रोटी-वोटी, गाजे-बाजे

(vi) निरर्थक शब्द-युग्म — चटर-पटर, चूँ-चपड़

प्रत्येक भेद के लिए एक-एक शब्द युग्म लिखिए–

_____ _____ _____ _____ _____ _____

3. समास- दो सार्थक और स्वतंत्र शब्दों के मेल की प्रकिया को समास कहते हैं। समास की प्रक्रिया के बाद निर्मित शब्द के संक्षिप्त रूप को समस्तपद कहते हैं। समस्तपद के दो भाग होते हैं–

(1) पूर्वपद (2) उत्तर पद

(क) द्विगु समास- जिस समास में पहला पद संख्यावाची हो और समस्तपद समूह का बोध कराता हो, वहाँ द्विगु समास होता है। जैसे- सप्तर्षि- सात ऋषियों का समूह; दोपहर- दो पहरों का समाहार।

(ख) कर्मधारय समास- जिस समस्तपद मे विशेषण-विशेष्य या उपमान और उपमेय होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे- अंधकूप- अंधा है जो कूप, लालकमल- लाल है जो कमल, कमलनयन, कमल के समान नयन, विद्याधन - विद्या रूपी धन।

(ग) बहुव्रीहि समास- जिस समस्तपद में दोनों पदों के अतिरिक्त किसी अन्य तीसरे अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे- गजानन- गज के समान आनन (मुख) है जिनका अर्थात् गणेश,

नीलकंठ- नीला है कंठ जिनका अर्थात् महादेव

- **नीचे लिखे समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-**

समस्तपद	विग्रह	समास का नाम
(क) गिरिधर	_____	_____
(ख) सप्ताह	_____	_____
(ग) चरणकमल	_____	_____
(घ) पंचानन	_____	_____
(ङ) नीलगगन	_____	_____
(च) चौमासा	_____	_____

4. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए-

शुद्ध रूप

(क) तुम्हारा पालन-पोषण कौन करती है? _____

(ख) हम खाना खाया। _____

(ग) एक गर्म कप चाय पी लो। _____

(घ) हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री पहुँचे। _____

(ङ) मेले में बच्चा ने मिठाई खाई। _____

(च) उसे किताब खरीदना है। _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **आप अपने शहर मे आयोजित 'पुस्तक-प्रदर्शनी मेला' अपने मित्र के साथ देखने गए हैं। इस विषय पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।**
- **हिंदी भाषा के प्रचार, प्रसार एवं प्रयोग पर आकर्षक स्लोगन बनाइए।**

नेहरूजी की बेटी इंदु के नाम पत्र

18

प्रिय इंदु,

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत–सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे–बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा–सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे–से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे–छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी–सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई–बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा, उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों से पहले सिर्फ जानवर थे और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस जमाने का ख्याल करना भी मुश्किल है, जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जाननेवालों और विद्वानों ने, जिन्होनें इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गरम थी और इस पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय जरूर रहा होगा।

तुम इतिहास की किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने जमाने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस जमाने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मजे की बात होती, क्योंकि हम जो चीज चाहते सोच लेते और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी

हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं, जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होती हैं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें हैं, जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मजे की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।

कोई जबान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेजी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगें, तभी तुम उसकी कहानी उसके पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल, चिकना और चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नही बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो, तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिल्कुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना ओर गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुजरे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कौन थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेलकर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक जर्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते। अगर एक छोटा सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीजों से, जो हमारे चारों तरफ है। हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

—तुम्हारा पिता (पापू)

जवाहरलाल

लेखक परिचय

पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, सन् 1889 को इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम मोतीलाल नेहरू तथा माता का नाम स्वरूपरानी था। बैरिस्टरी की पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् ये इंग्लैंड चले गए। गांधीजी के आह्वान पर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। अनेक बार इन्हें जेल जाना पड़ा। इन्होंनें भारत एक खोज, भारत का इतिहास जैसी प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं। नेहरूजी को बच्चों से बहुत अधिक लगाव था। इनका जन्मदिन प्रतिवर्ष बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। नेहरूजी स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। इनकी मृत्यु 27 मई, 1964 को हुई।

शब्द-अर्थ

टापू	–	द्वीप	**आबाद**	–	बसा हुआ
दामन	–	पल्ला, पल्लू, पहाड़ के नीचे की भूमि	**दरिया**	–	नदी, समुद्र
घरौंदा	–	कागज या मिट्टी का छोटा घर, छोटा घर	**गढ़ना**	–	बनाना।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) नेहरूजी ने अपनी बेटी इंदिरा को पत्र क्यों लिखा?

(ख) हमें दुनिया के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

(ग) इंग्लैंड और हिंदुस्तान के बारे में लेखक ने क्या बताया है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) दुनिया को जानने का तरीका है?

☐ दूसरों की लिखी पुस्तकें पढ़ना ☐ संसार रूपी पुस्तक को पढ़ना

☐ संसार के लोगों को जानना

(ख) वर्षों पहले धरती पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी क्योंकि–

☐ उनके लिए भोजन उपलब्ध नहीं था ☐ धरती का तापमान बहुत अधिक था।

☐ धरती बहुत ठंडी थी।

(ग) चट्टान का टुकड़ा दरिया तक पहुँचते-पहुँचते क्या बन जाता है?

☐ मिट्टी ☐ अस्तित्व समाप्त हो जाता है ☐ बालू का कण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मनुष्यों से पहले पृथ्वी पर क्या था?

(ख) दुनिया को जानने के लिए किस बात का ध्यान रखना होगा?

(ग) नेहरूजी के पत्र किस पुस्तक में संकलित हैं?

(घ) किसी भी भाषा की पुस्तक पढ़ने के लिए सबसे पहले क्या सीखना पड़ता है?

(ङ) नेहरूजी ने प्रकृति के अक्षर किन्हें कहा है और क्यों?

(च) बड़ी चट्टान का खुरदरा और नोकीला पत्थर गोल और चमकीला कैसे बन जाता है?

(छ) परियों की कथाओं और इतिहास की किताबों में क्या अंतर होता है?

(ज) संसार रूपी पुस्तक को पढ़ने से नेहरूजी का क्या अभिप्राय है?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

पुस्तक – _____ _____ पत्र – _____ _____

पर्वत – _____ _____ समुद्र – _____ _____

कहानी – _____ _____ कोशिश – _____ _____

2. सही विलोम शब्द पर (✓) का चिह्न लगइए–

मुश्किल	–	☐	आसान	☐	जटिल	☐	कष्टदायक
खुरदरा	–	☐	सख्त	☐	मुलायम	☐	कोमल
जानदार	–	☐	बेजान	☐	निर्जीव	☐	जानवर
आबाद	–	☐	नाबाद	☐	बाद	☐	निर्बाध
विद्वान	–	☐	कमअक्ल	☐	बेअक्ल	☐	मूर्ख
अंत	–	☐	शुरू	☐	आदि	☐	आरंभ

3. नीचे दिए शब्दों में 'ईन' अथवा 'ईला' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए–

शौक – _____ पत्थर – _____

चमक – _____ नमक – _____

रस – _____ नोक – _____

रंग – _____ जहर – _____

4. नीचे दिए गए वाक्यों के वचन बदलकर पुन: लिखिए–

(क) कमरा बहुत बड़ा है। _____

(ख) लड़की नृत्य कर रही है। _____

(ग) कल मैंने कलम खरीदा। _____

(घ) चिड़िया घोंसले में बैठी है। _____

(ङ) आकाश में पतंग उड़ रही है। _____

5. दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

अक्सर, शर्त, शायद, विषय, आशा

6. दिए गए शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए–

अक्सर, कोशिश, खत, ख्याल, खुद, मुश्किल

क्रियात्मक गतिविधि

- **दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन या विकार आता है, उसे संधि कहते हैं–**

विद्‌या + आलय = विद्‌यालय

भोजन + आलय = भोजनालय

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

परम + ईश्वर = परमेश्वर

1. नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिए–

महा + आत्मा = _____

शब्द + अर्थ = _____

सूर्य + उदय = _____

दीप + अवली = _____

यदि + अपि = _____

रमा + ईश = _____

2. नीचे दिए गए शब्दों के संधि-विच्छेद का सही विकल्प चुनिए–

(क)	विद्‌यार्थी	–	☐	विद्‌या + अर्थी	☐	विद्‌या + अर्थी	☐ विद्‌या + र्थी
(ख)	देवालय	–	☐	देव + आलय	☐	देवा + लय	☐ देवल + अय
(ग)	रेखांकित	–	☐	रेखां + कित	☐	रेख + इत	☐ रेखा + अंकित
(घ)	वनोत्सव	–	☐	वन + ओत्सव	☐	वन + उत्सव	☐ वनो + त्सव
(ङ)	नरेश	–	☐	नर + एश	☐	नर + ईश	☐ नरे + श

- **इंदिरा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू और कमला नेहरू की इकलौती संतान थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इन्होंने बच्चों की एक सेना बनाई थी, जिसे वानर सेना कहते थें। इनके जीवन पर महात्मा गांधी तथा कविवर रविंद्रनाथ ठाकुर का भी बहुत प्रभाव था। ये भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री थीं। इनका जन्म 19 नवंबर, 1917 को हुआ था।**

- **'उन्' का अर्थ है कुछ कम/एक कम। संख्याओं के संदर्भ में जिस संख्या के पूर्व 'उन्' उपसर्ग जुड़ जाता है, तो वह संख्या उससे एक कम हो जाती है। उदाहरण–**

19	उन्नीस	=	बीस से एक कम	59	उन्सठ	=	साठ से एक कम
29	उन्तीस	=	तीस से एक कम	69	उन्हत्तर	=	सत्तर से एक कम
39	उन्चालीस	=	चालीस से एक कम	79	उन्नासी	=	अस्सी से एक कम
49	उन्चास	=	पचास से एक कम				

बरसात की आती हवा

19

बरसात की आती हवा
वर्षा-धुले आकाश से
या चंद्रमा के पास से
या बादलों की साँस से
मंद-मुसकाती हवा
बरसात की आती हवा।

यह खेलती है ढाल से
ऊँचे शिखर के भाल से
आकाश से पाताल से
झकझोर लहराती हवा
बरसात की आती हवा।

यह खेलती तरूमाल से
यह खेलती हर डाल से
हर एक लता के जाल से
अठखेलती-इठलाती हवा
बरसात की आती हवा।

यह शून्य से होकर प्रकट
नव हर्ष से आगे झपट
हर अंग से जाती लिपट
आनंद सरसाती हवा
बरसात की आती हवा।

— हरिवंशराय बच्चन

कवि परिचय

'पद्मभूषण', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'साहित्य वाचस्पति', 'सरस्वती सम्मान' आदि प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हरिवंशराय बच्चन हिंदी साहित्य के जाने-माने साहित्यकार थे। उनका जन्म 27 नंवबर, 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- 'मधुशाला', 'मधुकलश', 'मधुकाव्य', 'खादी के फूल' आदि। उन्होंने अपनी आत्मकथा चार खंडों में लिखी है। 18 जनवरी, 2003 को उनके निधन से हिंदी साहित्य ने एक महान साहित्यकार खो दिया।

शब्द-अर्थ

मंद	—	धीमे/धीरे	अठखेलती	—	किलोल (किल्लोल) करती
बरसात	—	वर्षा	इठलाती	—	इतराती
शिखर	—	चोटी	शून्य	—	आकाश
ढाल	—	ढलान/ढलवाँ जमीन	हर्ष	—	आनंद, खुशी
झकझोरना	—	जोर से हिलाना	सरसाती	—	बिखेरती

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवि किस हवा का वर्णन कर रहे हैं?

(ख) 'वर्षा-धुले आकाश से' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) कवि ने बरसात की हवा को 'मंद-मुसकाती' क्यों कहा है?

(घ) झकझोरती लहराती हुई कौन आती है?

(ङ) यह हवा किस प्रकार आनंद बिखेरती है?

लिखित

1. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) संपूर्ण प्रकृति को कौन आनंदित करती है?

☐ तेज हवाएँ ☐ आँधियाँ ☐ बरसाती हवा

(ख) 'बरसात की हवा' आनंद इसलिए देती है, क्योंकि–

☐ वृक्ष धुल जाते हैं।

☐ यह चंद्रमा के पास से आती है।

☐ यह शीतल और सुखदायी होती है।

(ग) धरती और आकाश दोनों के प्रति बरसाती हवाओं का व्यवहार कैसा होता है?

☐ धरती और आकाश दोनों को भिगो देती हैं।

☐ धरती और आकाश दोनों से अठखेलियाँ करती हैं।

☐ धरती और आकाश दोनों को झकझोर देती हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) 'चंद्रमा के पास से' कहकर कवि आकाश की कौन-सी विशेषता बता रहे हैं?

(ख) गरमी से तपती धरती और आकाश को कौन सुख देता है?

(ग) बरसाती हवा हर एक लता के जाल में कैसे खेलती है?

(घ) ये हवाएँ कहाँ से प्रकट होती हैं?

(ङ) हमें इन हवाओं से क्या सीखने को मिलता है?

(च) बरसात की हवाएँ कहाँ से आती हुई प्रतीत होती हैं?

(छ) पर्वत शिखरों और ढाल में ये हवाएँ कैसी लगती हैं?

(ज) हरे-भरे पौधों के साथ इनका व्यवहार कैसा प्रतीत होता है?

(झ) ये हवाएँ कहाँ से निकलकर किससे लिपट जाती हैं?

(ञ) बरसात की हवाओं के चलने पर संपूर्ण प्रकृति कैसी लगती है? इसका उत्तर अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द 'अनेकार्थी शब्द' कहलाते हैं।

जैसे–ढाल–कवच, ढालू जमीन।

नीचे लिखे शब्दों के दो भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए–

(क) द्विज → ____________ → ____________

(ख) ताल → ____________ → ____________

(ग) डाल → ____________ → ____________

(घ) प्रकृति → ____________ → ____________

2. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द – श्रुतिसम या समरूपी भिन्नार्थक शब्द अनेकार्थी शब्दों से भिन्न होते हैं।

जो शब्द देखने और सुनने में एक जैसे प्रतीत होते हैं, परंतु उनमें मात्राओं की भिन्नता के कारण उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं, समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे- तुरंग–घोड़ा, तरंग–लहर; कलि–कलियुग, कली–फूल खिलने के पूर्व की स्थिति

- **निम्नलिखित श्रुतिसम या समरूपी भिन्नार्थक शब्द-युग्मों के अर्थ लिखिए–**

(क) छात्र – ____________

छत्र – ____________

(ख) उदर – ____________

उदार – ____________

(ग) अवधि – ____________

अवधी – ____________

(घ) चपल – ____________

चपला – ____________

(ङ) नीयत – _____

नियत – _____

(छ) अचार – _____

आचार – _____

(च) अनल – _____

अनिल – _____

(ज) असमान – _____

असामान – _____

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

आकाश	_____	_____	हवा	_____	_____
पानी	_____	_____	बादल	_____	_____
धरती	_____	_____	शरीर	_____	_____
चंद्रमा	_____	_____	वृक्ष	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **बरसात में भीगते हुए घर पहुँचने पर आप सर्दी-जुकाम से परेशान हो गए। इस (काल्पनिक) घटना का वर्णन कक्षा में कीजिए।**
- **'बरसात की झड़ी लगना' तथा 'फुहार पड़ना' में अंतर पता कीजिए और उसे कक्षा में बताइए। बरसात से संबंधित कोई गीत कक्षा में सुनाइए।**

20 मैं हूँ चार्ली चैपलिन

मेरा जन्म 16 अप्रैल 1889 को लंदन के ईस्ट लेन में हुआ था। माँ बताती थीं कि मेरी दुनिया हँसी-खुशी से भरी थी। हम तीन कमरों वाले मकान में रहते थे। हर कमरा अच्छी तरह से सजा-धजा था। मुझे बचपन की कई बातें आज भी याद हैं। मुझे स्मरण है, माँ मुझे और मेरे भाई सिडनी को हर रात आया के यहाँ छोड़कर थियेटर चलीं जाती थीं। जब वे लौटतीं तो हमारी मेज पर स्वादिष्ट व्यंजन रख देती। वे हम दोनों भाइयों को बहुत प्यार करती थीं।

मुझे अपने पिता की याद नहीं। माँ बताती थीं कि हमारे पिता जी नेपोलियन की तरह दिखाई देते थे। उनकी आवाज भी रोबीली थी। पर वे पीते बहुत थे, इसीलिए माँ उनसे अलग हो गई थीं।

अचानक एक दिन कुछ घट गया। ऐसा लगा कि बाहरी दुनिया और माँ के बीच सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है। एक महिला के साथ वे पूरी सुबह घर से बाहर थीं, और जब लौटीं तो काफी परेशान थीं, उनकी आँखों में आँसू थे।

माँ ने पिता जी पर मुकदमा दायर कर रखा था क्योंकि वे हम लोगों के पालन पोषण का खर्च नहीं दे रह थे। अदालत में माँ के पक्ष में फैसला नहीं हुआ, इसीलिए वे उदास थीं। माँ प्रति सप्ताह पच्चीस पौंड कमा लेती थीं, इसीलिए उन्होंने मेरे पिता से कभी खर्च की माँग नहीं की। लेकिन अब उनकी स्थिति अच्छी नहीं थी।

माँ मुझे अपने साथ थियेटर ले जाती थीं क्योंकि घर में अकेला नहीं छोड़ना चाहती थीं। मैं पाँच वर्ष का था और रंगमंच के पार्श्व में खड़ा था। गाते-गाते अचानक माँ का स्वर लड़खड़ा गया। दर्शकों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। मैं कुछ समझ नहीं पाया कि यह हो-हल्ला किसलिए हो रहा है। शोर जब बहुत बढ़ गया, तब माँ वहाँ से हट गईं।

मैनेजर भी परेशान था। पर वह सूझबूझ वाला था। उसने मुझे, माँ और उसके मित्रों के सामने अभिनय करते देखा था। उसने माँ से कहा कि वे मुझे रंगमंच पर भेज दें। माँ सहमत नहीं थीं।

इसी बीच मैनेजर ने मेरा हाथ पकड़ा और मंच पर खड़ा कर दिया।

अब तो मुझे गाना ही था। कोई उपाय भी नहीं था। मैंने एक लोकप्रिय गीत गाना शुरू कर दिया। लोगों को बेहद पसंद आया। अभी गाना पूरा भी नहीं हुआ था कि दर्शकों ने मंच पर सिक्कों की बरसात शुरू कर दी। मैंने गाना बीच में ही रोक दिया, बोला ... ''पहले मैं सिक्के उठाऊँगा, फिर गाना पूरा करूँगा।''

इस पर लोगों ने खूब तालियाँ बजाई और हँसे। मुझमें गजब का आत्मविश्वास था।

मैंने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और नकलें भी खूब उतारीं। अपनी धुन में मैंने माँ की भी नकल उतारी। मेरा उद्देश्य किसी का मजाक उड़ाना नहीं था। मैं तो बिना सोचे-समझे नकल उतार रहा था। माँ की नकल उतारते हुए उनके लड़खड़ाते स्वर की भी नकल की।

अब तो दर्शक जैसे पागल हो गए। वे खूब हँसे। उन्होंने तालियाँ बजाकर मेरी प्रशंसा की। ढेर सारे सिक्के मंच पर फेंके।

अंत में माँ मुझे मंच से लिवा ले जाने के लिए आईं। दर्शकों ने तालियाँ बजाकर उनकी उपस्थिति का भी स्वागत किया।

मंच पर वह मेरी पहली रात थी तथा माँ की आखिरी। समय इसी तरह बीतता गया। हमारे परिवार पर कई विपत्तियाँ आईं। सबसे बड़ी विपत्ति थी-माँ का पागल हो जाना। उन्हें पागलखाने भेज दिया गया। अदालत ने पिता जी को आदेश दिया कि वे हम दोनों की देखभाल करें। कुछ समय बाद माँ ठीक हो गईं और वे हमें लेने आईं।

मैं जीवन-यापन के लिए तरह-तरह के काम करता रहा। मैंने अखबार बेचे, प्रेस में छपाई की, खिलौने बनाए, डाक्टरों के यहाँ काम किया, पर अभिनेता बनने का लक्ष्य मैं नहीं भूला। मैं समय निकालकर सज-धजकर ब्लेकमोर की थियेटर कंपनी में काम की तलाश के लिए जरूर जाता। वहाँ अनुभवी अभिनेत्रियों और अभिनेताओं की कतार लगी होती। मुझे शर्म लगती, फिर भी एक कोने में खड़ा रहता। एक दिन क्लर्क ने मेरा सारा विवरण नोट कर लिया और कहा कि उपयुक्त भूमिका मिलते ही वह मुझे सूचना देगा।

और एक दिन मुझे सूचना मिल गई।

मुझे दो नाटकों मे काम करने के लिए रख लिया गया था। एक दिन मुझे फुटबॉल मैच नामक एक प्रहसन में काम करने के लिए बुलाया गया। उसमें वेलडन नामक एक प्रसिद्ध और अनुभवी विदूषक के साथ मुझे काम करना था।

जिस रात वह प्रहसन शुरू होना था। मैं बेहद तनाव में था। विशाल मंच के पीछे मैं बेचैनी से चहलकदमी कर रहा था। संगीत शुरू हो गया। फिर परदा भी उठ गया.... और अब मैं मंच पर था। यह मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण क्षण था। ऐसा क्षण, जो किसी को बना देता है, किसी को बिगाड़ देता है। मैं संयत हो गया। आत्मविश्वास के साथ मैंने कंधे उचकाए, अंगुलियाँ चटकाईं। आगे बढ़ा तो पाँव मुगदरों की जोड़ पर गया। फिर एक लटकते हुए झोले में मेरी बेंत फँस गई। उसे किसी तरह निकाला तो झोला तड़ से मेरे चेहरे पर आ लगा। इस धक्के के कारण मैं आगे-पीछे झूमने लगा जो सिर बेंत से जा टकराया।

दर्शक अट्टहास कर उठे। तब तक ऐसा होता था कि जब तक वेलडन मंच पर नहीं आता, लोग हँसते ही नहीं थे। पर अब जब मैं मंच पर पहुँचता तो तालियों की गड़गड़ाहट से मेरा स्वागत किया जाता। पर मेरी इस सफलता से वेलडन चिढ़ गया। प्रहसन के एक दृश्य में उसे तमाचा मारना था। मारे कुढ़न के वह कभी-कभी मुझे जोर से भी तमाचा मार देता था।

पर मेरी सफलता से नाटक मंडली का प्रबंधक प्रसन्न था। कुछ समय बाद अमेरीकी कंपनी का मैनेजर इंग्लैंड आया। उसे एक विदूषक की तलाश थी। वह मेरी कला से प्रभावित हुआ और इसी कारण एक दिन मैं उसके साथ अमेरीका पहुँच गया।

अमेरीका में ही एक फिल्म कंपनी में काम करने का पहला अवसर मिला। मुझे सालभर के करार पर रख लिया गया।

एक दिन मैं स्टूडियो में था। होटल का सेट लगा हुआ था। मुझसे कहा गया- ''विदूषक का अभिनय करना है। मेकअप कर लो।''

मैंने खूब चौड़े पाँचवे वाली एक पतलून पहनी। सिर पर डर्बी हैट पहना। हाथ में बेंत पकड़ी। पैरों में बड़े-बड़े जूते पहने। नाक और ओठों के बीच एक छोटी-सी मूँछ लगा ली।

मुझे पता नहीं था कि पात्र का चरित्र क्या है। पर जब मैं अपनी वेशभूषा पहन रहा था, तभी मेरे दिमाग में चरित्र की रूपरेखा साफ होने लगी। मैंने फिल्म कंपनी के निर्देशक को बताया कि ''मैं एक ऐसे व्यक्ति का अभिनय करूँगा जो आवारा भी हो, भद्र भी। कवि है और सपनों में खोया रहता है। वह लोगों को विश्वास दिलाएगा कि वह वैज्ञानिक है और संगीतज्ञ भी। वह किसी बच्चे से मिठाई भी छीन सकता है और सड़क पर पड़े सिगरेट के टोटे भी उठा सकता है।''

निर्देशक ने कहा ''बहुत खूब! अब शुरू करते हैं।''

होटल की लॉबी का दृश्य था। मैं आगे बढ़ा, पर एक महिला की टाँग में मेरा पैर फँस गया। संतुलन बिगड़ा, टोप गिर गया। मैंने महिला से माफी माँगी, टोप उठाया और आगे बढ़कर मुड़ा तो कुरसी से टकरा गया। मैं फिर उठा, टोप उठाकर कुर्सी से माफी माँगने लगा।

उस दृश्य से रिहर्सल देखने वालों का हँसी के मारे बुरा हाल था।

अन्य सेटों के लोग भी वहाँ आ जुटे। वे सब खिलखिलाकर हँस रहे थे। अब मैं सफलता की राह पर मजे से चल रहा था। मेरी फिल्में काफी लोकप्रिय हो रही थीं। उन्हें बनाने वालों को आर्थिक लाभ भी कम नहीं हो रहा था।

मैंने दर्शकों के बीच बैठकर अपनी फिल्में देखीं। मैंने देखी, परदे पर मेरे आते ही वे खिलखिला उठते थे। इससे मुझे खुशी भी हुई, संतोष भी मिला। मुझे अपने पर विश्वास बढ़ा। मुझे चरित्र के बारे में न बताकर, हल्का-सा एक विचार बता दिया जाता। बस, फिर मैं अपनी कल्पना से अभिनय शुरू कर देता।

धीरे-धीरे अमेरीका में मेरी ख्याति बढ़ने लगी। हर नई फिल्म के साथ मुझे लेकर फिल्म बनाने वाले लोग अपनी फिल्मों के दाम भी बढ़ाते जाते।

अब मैं हॉलीवुड में स्वयं अपनी फिल्म बनाने लगा था। कई फिल्में बनाईं। धन भी खूब कमाया। लंबे समय तक काम करने के कारण मैं थक तो गया ही था। सोचा आराम करने के लिए सैर सपाटे के लिए निकल पड़ूँ। ... और इसीलिए एक दिन मैं यात्रा पर निकल पड़ा।

कई स्थान होता हुआ, मैं जापान में टोक्यो पहुँचा। टोक्यो में मेरा भव्य स्वागत किया गया। टोक्यो में मेरे साथ कोनो नामक एक दुभाषिया था।

एक दिन मैं कोनो के साथ होटल में बैठा हुआ था। सिडनी भी साथ में था। तभी छह हृष्ट-पुष्ट युवक उस कक्ष में घुस आए। वे काफी उत्तेजित थे। उनमें से एक कोनो के साथ बात करने लगा।

मैं खतरा भाँप गया। मैंने तुरंत कोट की जेब में हाथ डाला, मानों रिवाल्वर निकाल रहा हूँ।

मैंने कोनो से पूछा, "यह क्या कह रहा है?"

कोनो ने दबे स्वर में कहा, "यह कह रहा है कि आपने इसके पूर्वजों का अपमान किया है।"

"ये सब बेकार की बातें हैं।" मैं गुस्से से बोला। फिर रिवाल्वर निकालने की मुद्रा में सिडनी से कहा, "आओ, बाहर चलें .... और कोनो, तुम कार मँगवाओ।"

इसके बाद सिडनी और मैं कोनो के साथ होटल से बाहर आ गए।

अगले दिन इस घटना का रहस्य खुला। नौ सेना के छह कैडटों ने प्रधानमंत्री के निवास स्थान पर घुसकर उनकी हत्या कर दी। बाद में उन्होंने अदालत में बतलाया कि वे मेरी भी हत्या करना चाहते थे। उनका उद्देश्य था कि मेरी हत्या कर अमेरीका और जापान के बीच तनाव उत्पन्न कर दिया जाए।

इस घटना के बाद मैं अमेरीका लौट आया। फिर वही फिल्में बनाने और उनमें काम करने का जीवन शुरू हो गया।

आज मेरा जीवन काफी सुखी है। मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा है। मैं और भी कई फिल्में बनाना चाहता हूँ। मैं अभी भी महत्त्वाकांक्षी हूँ। मैं कभी सेवा-निवृत्त नहीं हो सकता। मैं बहुत सारे काम करना चाहता हूँ। मैं कभी-कभी अपनी छत पर बैठकर सूर्यास्त देखा करता हूँ। दूर एक झील होती है और उसके पार विशाल पर्वत, ऐसे पर्वत जो मुझमें आत्मविश्वास भरते हैं।

—मूल चार्ली चैपलिन (हिंदी अनुवाद)

शब्द-अर्थ

स्वादिष्ट	—	अच्छे स्वाद वाला	**पार्श्व**	—	पीछे
गजब	—	बहुत अधिक सुंदर, अतुलनीय	**उपस्थिति**	—	मौजूदगी
रूपरेखा	—	बाहरी आकार-प्रकार	**विदूषक**	—	हास्य अभिनेता
विवरण	—	विस्तृत लेखा-जोखा	**प्रहसन**	—	हास्य नाटक
भद्र	—	शरीफ	**संयत**	—	नियंत्रित
अट्टाहस करना	—	जोर से हँसना	**संगीतज्ञ**	—	संगीत जानने वाला
महत्वाकांक्षी	—	बड़ा बनने की इच्छा रखना	**टोटे**	—	टुकड़े

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) चार्ली का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) लेखक को कैसे पता चला कि उनमें गजब का आत्मविश्वास है?

(ग) लेखक का बचपन से ही क्या लक्ष्य था?

(घ) लेखक हॉलीवुड में कैसे प्रसिद्ध हुआ?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) चार्ली की माँ उदास थी क्योंकि–

- ☐ चार्ली के पिता का देहांत हो गया था।
- ☐ अदालत में उसके पक्ष में फैसला नहीं हुआ था।
- ☐ चार्ली की माँ के पास खर्चे के लिए पैसे नहीं थे।

(ख) दर्शकों ने सिक्कों की बरसात शुरू कर दी जब–

☐ चार्ली मंच पर खड़ा हुआ ☐ चार्ली की माँ गाने लगी ☐ चार्ली गाने लगा

(ग) चार्ली का लक्ष्य था–

☐ गायक बनने का ☐ नर्तक बनने का ☐ अभिनेता बनने का

(घ) चार्ली के पैरों में किसकी टाँग फँसकर, उसका टोप गिर गया?

☐ महिला का ☐ निर्देशक का ☐ पुरुष का

(ङ) लेखक अंत तक कैसा था?

☐ स्वस्थ ☐ धनी ☐ महत्त्वाकांक्षी

2. निम्न पंक्तियाँ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

''धीरे-धीरे अमेरीका में मेरी ख्याति बढ़ने लगी। हर नई फिल्म के साथ मुझे लेकर फिल्म बनाने वाले लोग अपनी फिल्मों के दाम भी बढ़ाते जाते।''

(क) 'मेरी' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया?

(ख) किसकी ख्याति बढ़ने लगी और क्यों?

(ग) फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों के दाम क्यों बढ़ाने लगे?

3. टिप्पणी लिखिए–

चार्ली चैपलिन, चार्ली की माँ, चार्ली के पिता।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) चार्ली की माँ क्या काम करती थीं?

(ख) उन्होंने अदालत के दरवाजे क्यों खटखटाए?

(ग) पहली बार चार्ली मंच पर कब और क्यों आया?

(घ) जीवनयापन के लिए चार्ली ने क्या-क्या काम किए?

(ङ) चार्ली की अमेरिकन विदूषक की वेशभूषा कैसी थी?

(च) वेलडन चार्ली से क्यों चिढ़ता था?

(छ) चार्ली का बचपन किन परिस्थितियों में बीता?

(ज) उसके परिवार पर किस प्रकार की विपत्तियाँ आईं?

(झ) जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास होना क्यों जरूरी हैं? चार्ली के जीवन से उदाहरण दीजिए।

(ञ) चार्ली इंग्लैंड से अमेरीका कैसे पहुँचे? उन्होंने अमेरिकी फिल्मों में कैसी भूमिकाएँ निभाईं?

भाषा-ज्ञान

1. मानक हिंदी भाषा मे पंचम वर्ण के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाता है, जैसे–

मङ्गल	—	मंगल	ठण्डा	—	ठंडा
रङ्ग	—	रंग	परन्तु	—	परंतु
कम्पनी	—	कंपनी	सम्बन्ध	—	संबंध
सन्तोष	—	संतोष	मन्त्री	—	मंत्री

जहाँ कहीं पंचम वर्ण — ङ, ञ, ण, न, म में कोई दूसरा पंचय वर्ण मिलता है, वहाँ पंचम व्यंजनों को अलग-अलग लिखा जाता है, इन्हें अनुस्वार द्वारा नहीं लिखा जाता; जैसे— सम्मान, जन्म, अन्न, गन्ना आदि।

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द पाठ में से ढूँढ़कर लिखिए–

(क) स्वाद से भरपूर पकवान _____

(ख) लोगों को हँसाने वाला _____

(ग) लोगों में प्रिय _____

(घ) विज्ञान के क्षेत्र में खोज करने वाला _____

(ङ) अभिनय करने वाली _____

(च) अभिनय करने वाला _____

(छ) संगीत को जानने वाला _____

(ज) बड़ा बनने की इच्छा रखने वाला _____

3. महीनों, दिनों, देशों, पर्वतों और ग्रहों के नाम सदा पुल्लिग होते हैं, जैसे–

चैत्र, भारत, हिमालय, मंगल आदि।

इसी प्रकार भाषा और बोली, तिथियों तथा नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे-हिंदी, पूर्णिमा, गंगा आदि।

आप ऐसे ही पाँच पुल्लिग और पाँच स्त्रीलिंग शब्द लिखिए।

4. आप जान चुके हैं कि पढ़ते समय थोड़ी देर ठहरने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग नीचे लिखे स्थानों पर किया जाता है–

(क) एक ही प्रकार के कई शब्द या वाक्यांश जब साथ-साथ आएँ, तो प्रत्येक के आगे अल्प विराम लगाया जाता है, जैसे चार्ली ने पतलून, हैट, बड़े-बड़े जूते पहने।

– लोगों ने तालियाँ बजाईं, सिक्के फेंके, खूब हँसे और आनंद उठाया।

(ख) संबोधन के बाद इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे – भैया, यहाँ क्या कर रहे हो?

(ग) किसी के कहे हुए वाक्य को उद्धृत करते समय उससे पहले अल्प विराम लगाते है, जैसे – सिडनी ने कहा, ''जाओ, बाहर चलें।''

(घ) योजक का लोप होने पर भी अल्प विराम का प्रयोग होता है, जैसे – मैं थक गया, आराम करने के लिए बिस्तर पर लेट गया। (इस वाक्य में 'इसलिए' का लोप हुआ है।)

(ङ) किंतु, परंतु, पर, तो भी, क्योंकि, वरन्, नहीं तो, बल्कि आदि के पूर्व अल्प विराम का प्रयोग होता है।

जैसे – उनकी आवाज रोबीली थी, पर वे पीते बहुत थे।

प्रहसन शुरू हुआ, परंतु मैं बेहद तनाव में था।

पाँच ऐसे वाक्य लिखो जिनमें अल्प विराम का प्रयोग हुआ हो।

क्रियात्मक गतिविधि

- **क्या आप टेलीविजन देखते हैं, यदि हाँ तो आप टेलीविजन से क्या सीखते हैं? व अपने प्रसिद्ध अभिनेता के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य एकत्रित करें।**
- **विश्व प्रसिद्ध हास्य अभिनेताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें।**
- **चार्ली चैपलिन की वेशभूषा पहनकर उसकी तरह किसी भी पात्र का अभिनय कीजिए।**

आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवि किसकी धूल माथे पर लगाना चाहते हैं?

(ख) नाक का रहना बहुत जरूरी क्यों है?

(ग) व्यायाम करने से क्या लाभ होता है?

(घ) मूरत का जीवन आनंदपूर्वक कैसे बीतने लगा?

(ङ) लता-कुंज का वर्णन कीजिए।

(च) अध्ययन की रुचि से क्या लाभ है?

(छ) चलना ही मनुष्य का कर्तव्य किस प्रकार है?

(ज) अस्वस्थ व्यक्ति की दशा का वर्णन कीजिए।

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) हींग की पुड़िया किसने फेंकी?

☐ सावित्री ने ☐ खान ने ☐ सावित्री के छोटे बच्चे ने

(ख) नाक की गड़बड़ी से आदमी क्या कहलाने लगता है?

☐ नक्कूशाह ☐ नकसुरा ☐ नकटा

(ग) संपूर्ण प्रकृति को कौन आनंदित करती है?

☐ तेज हवाएँ ☐ आँधियाँ ☐ बरसाती हवा

(घ) हमें पढ़ने से कैसा चस्का लगाना चाहिए?

☐ जो प्रत्येक दशा में सहारा हो ☐ जीवन में आनंद मिले ☐ ये सभी चीजें मिलें

(ङ) आत्म-संस्कार के विधान का एक प्रधान अंग क्या है?

☐ स्वाध्याय ◯ अभ्यास का साधन ☐ अस्वाध्याय मात्र

(च) नाक में उगे बाल किसका काम करते है?

☐ श्वास लेने का ☐ छके झाड़ू का ☐ बाहर की हवा को अंदर पहुँचाने का

3. मुहावरों का अर्थ सहित प्रयोग कीजिए–

(क) आसमान टूट पड़ना — अर्थ — _____

_____

(ख) हाथ-पाँव फूलना — अर्थ — _____

_____

(ग) हाथ-पाँव ठंडे पड़ना — अर्थ — _____

_____

4. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) माथा _____ _____ (ख) धरती _____ _____

(ग) संसार _____ _____ (घ) संध्या _____ _____

(ङ) उन्नति _____ _____ (च) जल _____ _____

5. लिंग बदलिए–

(क) पुजारी _____ (ख) कवि _____

(ग) तपस्वी _____ (घ) लेखक _____

(ङ) कर्ता _____ (च) गुणवान _____

6. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) माँज दो तलवार को, लगाओ न देरी।

(ख) दुग्धभोजनम् अमृतम्।

(ग) जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है, चलना हमारा काम है।

क्रियात्मक गतिविधि

- **संतुलित आहार न लेने से कौन-कौन -सी बीमारियाँ होती है? इस विषय में सामूहिक चर्चा करें।**

आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) खान की आयु लगभग कितनी थी?

(ख) बिस्मिल ने कौन-कौन-सी भाषाएँ सीखीं?

(ग) चंडीगढ़ के रॉक गार्डन की क्या विशेषताएँ हैं?

(घ) वेल्डन चार्ली से क्यों चिढ़ता था?

(ङ) सरदार पटेल नाम लेखक ने किसे और क्यों दिया?

(च) राजू को किस बात पर घमंड था?

(छ) बिना विचारे कार्य करने से क्या परिणाम होते हैं?

(ज) मनुष्य से पहले पृथ्वी पर क्या था?

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) घग्घर है–

☐ एक नगर का नाम ☐ एक गाँव का नाम ☐ एक नदी का नाम

(ख) चार्ली का लक्ष्य था–

☐ गायक बनने का ☐ नर्तक बनने का ☐ अभिनेता बनने का

(ग) सयानी पहाड़ी से टकराकर कौन बरस पड़ते हैं?

☐ बादल ☐ पत्ते ☐ झरने

(घ) दिल्ली मेट्रो को आरंभ कब हुआ था?

☐ 23 दिसंबर 2002 ☐ 24 दिसंबर 2002 ☐ 21 दिसंबर 2002

(ङ) रघु से राजा के साथ बातचीत का रहस्य जानने के लिए राजू ने क्या देने का लालच दिया?

☐ सोने की मोहरें ☐ ऊँचा पद ☐ कीमती उपहार

(च) हमें क्या पाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए?

☐ दौलत ☐ अभिमान ☐ चतुराई

3. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) चलिए चाल सु चाल, राखिए अपनो पानी।

(ख) साईं अपने चित्र की, भूमि न कहिए कोय।

4. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) हवा _____ _____ (ख) जंगल _____ _____

(ग) पुस्तक _____ _____ (घ) कोशिश _____ _____

(ङ) कहानी _____ _____ (च) पर्वत _____ _____

5. मुहावरों का अर्थ सहित प्रयोग कीजिए–

(क) हरी झंडी दिखाना — अर्थ — _____

_____

(ख) खटाई में पड़ना — अर्थ — _____

_____

(ग) दुम दबाकर भागना — अर्थ — _____

_____

(घ) पापड़ बेलना — अर्थ — _____

_____

(ङ) हाथ न आना — अर्थ — _____

_____

6. विलोम लिखिए–

(क) अतीत _____ (ख) विषाद _____

(ग) शुभ _____ (घ) स्वर्णिक _____

(ङ) सार्थक _____ (च) क्रंदन _____

क्रियात्मक गतिविधि

- 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' गीत कवि के नाम सहित लिखिए।